बुध की दृष्टि उसे खर्चीला बनाती है। ऐसे व्यक्ति को सरकार के, समाज के, परिवार के नियमों की अवहेलना करने में मजा भी आता है। संभवतः समाज के रुढ़िवादी सिद्धांत उसे जंचते नहीं। वह लेखक भी होता है और अपनी बात सफलतापूर्वक रखता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप उसकी शिल्प शास्त्र में रुचि होती है। वह एक सफल वास्तु–शिल्पी होता है लेकिन धार्मिक स्थलों, समाजोपयोगी भवनों, उद्यानों को बनाने में उसकी विशेष रुचि होती है।

शुक्र की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक का व्यवहार उसे सबकी नजरों में हेय बना देता है।

शनि की दृष्टि जीवन में तरह–तरह की बाधाएं उत्पन्न करती है।

मघा के विभिन्न चरणों में चंद्र

मघा के विभिन्न चरणों में चंद्र प्रायः अच्छे फल ही देता है। विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फलस्वरूप फलों में अंतर आ जाता है।

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र व्यक्ति को समाजसेवी बनाता है। अपनी मृदु वाणी और सद् व्यवहार के फलस्वरूप वह सर्वत्र आदर पाता है। वह अल्प संतति होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र व्यक्ति को युवावस्था तक अभावग्रस्त रखता है। व्यक्ति के मन में स्त्रियों के प्रति विद्वेष का भाव होता है। तीस वर्ष के उपरांत उसके जीवन में संपन्नता आती है।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र के कारण प्रारंभिक जीवन संघर्षमय होता है। पत्नी भी रुष्ट रहती है। पैंतीस वर्ष की अवस्था के बाद सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में भी परिवर्तन आता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र अल्पायु का कारक बताया गया है। तथापि कहा गया है कि यदि जातक तैंतीस वर्ष की आयु पार कर जाता है तो अत्यधिक अधिकार–संपन्न और समाज में समादृत होता है।

मघा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि अत्यधिक शुभ फल देती है। जातक धनी, प्रसिद्ध और अधिकार–संपन्न होता है।

मंगल की दृष्टि समाजसेवी बनाती है। जातक राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

बुध की दृष्टि उसे सुरा–सुंदरी का शौकीन बनाती है।

गुरु की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक अत्यधिक प्रसिद्ध और सत्तासीन लोगों का विश्वासपात्र होता है।

शुक्र की दृष्टि उसे विद्वान बनाती है। साथ ही उसमें स्त्रियोचित गुण भी प्रबल होते हैं। वह स्त्रियों के बची रहना ज्यादा पंसद करता है।

शनि की दृष्टि का वैवाहिक जीवन पर घातक प्रभाव पड़ता है। संबंध–विच्छेद की नौबत आ जाती है। कृषि–संबंधी विषयों में जातक प्रवीण होता है।

मघा के विभिन्न चरणों में मंगल

प्रथम चरणः यहाँ मंगल जातक को शासकीय सेवा में ले जाता है। पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

द्वितीय चरणः यहाँ मंगल को वैवाहिक संबंधों में मंगल दोष का निराकरण करने वाला माना गया है। यदि उसकी गुरु के साथ भी युति हो तो जातक बचपन से ही बुद्धिमान होता है।

तृतीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक जीवन भर बिना कोई शिकवा–शिकायत किये अपनी जिम्मेदारियां निभाता है। ऐसे जातक शायद 'ना' कहना जानते ही नहीं।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी मंगल प्रायः उपरोक्त फल देता है।

मघा स्थित मंगल पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को समाज के लिए सद्कार्य करने वाला, शत्रुहंता और प्रकृति-प्रेमी बनाती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो तो जातक मातृभक्त होता है।

बुध की दृष्टि उसे कलाओं एवं शास्त्रों में निपुण बनाती है।

गुरु की दृष्टि जातक को प्रभावशाली, संपन्न लोगों के संपर्क में रखती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को अपने रूप का अभिमान होता है। अत्यधिक कामविकार उसे रोगग्रस्त कर देता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक अपने परिवार से दूर ही रहता है।

मघा के विभिन्न चरणों में बुध

प्रथम चरणः यहाँ बुध सामान्य फल देता है। सूर्य–गुरु के साथ बुध की युति से उसे अनेक लाभ मिलते हैं। जैसे उसे बिना बारी के पदोन्नति मिल जाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध शुभ फल देता है, विशेषकर पारिवारिक जीवन में। यहां स्थित बुध जातक को मानसिक रूप से अस्थिर भी रखता है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध के सामान्य फल मिलते हैं। जातक औषध बनाने में निपुण होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध सामान्य फल देता है। जातक का जीवन साधारण बीतता है।

मघा स्थित बुध पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को ईर्ष्यालु, विघ्न–संतोषी और क्रूर बनाती है।

चंद्र की दृष्टि उसे कलाओं की ओर प्रवृत्त करती है।

मंगल की दृष्टि उसे काम पिपासु बनाती है। उसे चोट लगने का भी भय होता है, विशेषकर किसी हथियार से।

गुरु की दृष्टि उसे स्पष्ट–वक्ता, विवेकशील और सबका प्रिय बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के कारण उसे शासन से लाभ मिलता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक अपने कार्य–व्यवहार से सर्वत्र उपेक्षा और अनादर पाता है।

मघा के विभिन्न चरणों में गुरु

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक अत्यधिक संपन्न बनाता है। उसे पत्नी का, संतान का पूर्ण सुख मिलता है। नौकरी में हो तो व्यक्ति उच्च पद तक पहुँचता है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु जातक को विद्वान और विविध विषयों में पारंगत बनाता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक का जन्म संपन्न परिवार में होता है। वह निर्भीक, विद्वान और धनी होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु जातक को नेतृत्व के गुण प्रदान करता है। वह समाजसेवी भी होता है।

मघा स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को सद्‌गुणी, प्रसिद्ध और अत्यधिक संपन्न बनाती है।

चंद्र की दृष्टि के कारण उसे पत्नी–पक्ष से धन–प्राप्ति होती है।

मंगल की दृष्टि उसे समाजसेवा में प्रवृत्त करती है।

बुध की दृष्टि उसे उदभट विद्वान और शास्त्रों में पारंगत बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के कारण उसे शासन से सम्मान मिलता है। स्त्रियां उसे विशेष पसंद करती है।

शनि की दृष्टि उसे ओजस्वी वक्ता बनाती है, पर उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

मघा के विभिन्न चरणों में शुक्र

मघा के प्रायः सभी चरणों में शुक्र अच्छे परिणाम देता है।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र सामान्य फल देता है। शुक्र के साथ मंगल की युति के अच्छे परिणाम नहीं होते। यह योग, काम–पिपासा बढ़ाता है। दूसरी ओर जातक के जीवन साथी का चारित्रिक दोष उसके लिए दुखदायी बन जाता है। संबंध–विच्छेद की भी नौबत आ जाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र धनी मानी और सुखी बनाता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को विद्वान एवं शास्त्र–पारंगत बनाता है। गणित में वह विशेष दक्षता प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी शुक्र की स्थिति जातक को बुद्धिमान और यशस्वी बनाती है। जातक को सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त होता है।

मघा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को ईर्ष्यालु बनाती है। नारियों के माध्यम से जातक लाभ प्राप्त करता है।

चंद्र की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक कुसंगति, विशेषकर चरित्रहीन स्त्रियों की संगति में पैतृक धन का नाश कर देता है।

मंगल की दृष्टि उसे संपन्न और प्रसिद्ध बनाती है लेकिन वह परस्त्रीगामी भी होता है।

बुध की दृष्टि उसे धनी तो बनाती है, पर साथ ही वह कृपण भी होता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप उसे लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। पारिवारिक जीवन भी सुखी होता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक किसी शासक के समतुल्य जीवन बिताता है।

मघा के विभिन्न चरणों में शनि

मघा के विभिन्न चरणों में शनि सामान्य फल देता है। वैवाहिक जीवन के लिए यह स्थिति शुभ नहीं होती।

प्रथम चरण: यहाँ शनि संतान का पूर्ण सुख देता है। शासकीय सेवा में जातक का जीवन बीतता है। वैवाहिक जीवन की दृष्टि से शनि की यह स्थिति अशुभ है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि की स्थिति द्वि–भार्या योग बनाती है। एक वैध और दूसरी अवैध। ज़ातक को सदैव समस्याएं घेरी रहती हैं।

तृतीय चरण: वैवाहिक जीवन की दृष्टि से शनि की यहाँ भी स्थिति अशुभ है। पत्नी से उसकी सदैव अनबन रहा करती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि जातक को परिश्रमी और ईमानदार बनाता है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा होती है।

मघा स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को दरिद्र, व्यसनी और मद्यपी बनाती है। वह मिथ्याभाषी भी होता है।

चंद्र की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी और भाग्यशाली होता है। उसे सुंदर स्त्रियों के संसर्ग का आनंद मिलता है।

मंगल की दृष्टि उसे यायावर बनाती है और परिवार से विलग रखती है।

बुध की दृष्टि जातक को आलसी बनाती है।

गुरु की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक अपने समाज का नेतृत्व करता है। उसे पत्नी और संतान का पूर्ण सुख मिलता है।

शुक्र की दृष्टि उसे विरासत में संपत्ति उपलब्ध कराती है।

मघा के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरण: यहाँ राहु शुभ फल देता है। जीवन सुखी व संपन्न होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ राहु जातक को गैर कानूनी माध्यमों से अर्थ प्राप्ति की प्रेरणा देता है।

तृतीय चरण: यहाँ राहु तरह–तरह की व्याधियां पैदा कर सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ राहु जातक को धनी, शिक्षाविद् और पारिवारिक दृष्टि से सुखी बनाता है।

मघा के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरण: यहाँ केतु जातक को जुआरी बना देता है। जातक काफी हानि उठाने के बाद भी यह आदत नहीं छोड़ता।

द्वितीय चरण: यहाँ भी केतु अशुभ होता है। जातक सुखहीन जीवन बिताता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु जातक को अकारण परेशान करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ केतु सामान्य फल देता है।

पूर्वा फाल्गुनी

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र राशिपथ में 133.20 अंश एवं 146.40 अंशों के मध्य स्थित है तथा मघा की तरह यह नक्षत्र भी सिंह राशि (स्वामी : सूर्य) के अंतर्गत आता है। पर्यायवाची नाम है–फाल्गुनी। अरबी में इसे 'अल जुबराह' (सिंह की अयाल) कहते हैं। इस नक्षत्र में दो तारे हैं। आकृति मचान के समान लगती है। प्रथम चरण का स्वामी–सूर्य, द्वितीय चरण का स्वामी–बुध, तृतीय चरण का स्वामी–शुक्र एवं चतुर्थ चरण का स्वामी–मंगल है।

अदिति के एक पुत्र भग को नक्षत्र–देवता तथा शुक्र को नक्षत्र स्वामी माना गया है। गणः मनुष्य, योनिः मूषक तथा नाड़ीः मध्य है।

चरणाक्षर हैं–मो, ट, टी, टू।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातक हृष्ट–पुष्ट तथा आकर्षक व्यक्तित्त्व वाले होते हैं। उन्हें विरासत में जैसे एक अंतर्ज्ञान शक्ति मिली होती है। यात्रा- प्रिय, परोपकारी वृत्ति के ऐसे जातक स्वतंत्रता–प्रिय तथा किसी न किसी क्षेत्र में प्रसिद्ध होते हैं। उनमें ईमानदारी से कार्य करने की, अवैध कार्यों से सदैव दूर रहने की प्रवृत्ति होती है। वे 'जी हुजूरी' से दूर रहते हैं तथा स्वतंत्र रहने की कोशिश करते हैं। इसके कारण उन्हें एकाधिक बार नौकरी बदलनी पड़ सकती है। यह इसलिए भी कि वे तरक्की, जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदैव अच्छे और सच्चे मार्ग का अवलंबन करना चाहते हैं। चालीस वर्ष की अवस्था के बाद उनका जीवन सुखी होता है।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन सुखी होता है। पत्नी भी अच्छी मिलती है। बच्चे भी अच्छे होते हैं। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं

विनम्र, कलाविद्, धार्मिक तथा परोपकारी वृत्ति की होती हैं। लेकिन प्रदर्शनप्रियता का आधिक्य एक दोष बन जाता है। वे अच्छी शिक्षा भी अर्जित कर सकती हैं, विशेषकर वैज्ञानिक विषयों में।

उनका पारिवारिक जीवन भी सुखी रहता है। अच्छा पति, अच्छे बच्चे। वे एक कर्त्तव्य पारायण गृहिणी सिद्ध होती है, परिवार के लिए सब कुछ होम देने को तत्पर। उनमें अपनी सहायता करने वालों के प्रति सदैव कृतज्ञता का भाव होता है।

ऐसी जातिकाओं के लिए एक सलाह दी गयी है कि वे स्वयं को सबसे चतुर, बुद्धिमान तथा औरों को मूर्ख न समझें। अन्यथा इस तरह की प्रवृत्ति होने पर समूचा पारिवारिक तथा निजी जीवन भी कलहमय कर सकती है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में सूर्य

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में सूर्य की स्थिति स्वास्थ्य की दृष्टि से अशुभ मानी गयी है।

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य जातक को नौकरी--पेशे से जोड़ता है। चिकित्सा क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य पत्नी एवं संतान के लिए अशुभ माना गया है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य प्रथम चरण जैसे फल देता है। यथा सरकारी नौकरी या चिकित्सा क्षेत्र में नौकरी ही उसकी नियति होती है। जातक हृदय रोग का भी शिकार हो सकता है। बचपन एवं युवावस्था संघर्षमय बीतती है और पैंतीस वर्ष के बाद ही जीवन में स्थिरता आती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी सूर्य चिकित्सा क्षेत्र में नौकरी के योग बनाता है। केतु के साथ सूर्य की युति जातक को इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल बनाती है।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को धन हीन, यायावर और दुखी बनाती है। जातक अपने शत्रुओं से ही नहीं, संबंधियों से भी भयभीत रहता है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप शिर–शूल की शिकायत रहती है, फलत: जातक आलसी हो जाता है। वह शत्रु से भी पीड़ित रहता है।

बुध की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक का पारिवारिक जीवन सुखी होता है। संतानें उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करती हैं।

गुरु की दृष्टि स्वतंत्र विचारों वाला बनाती है। मंत्र–तंत्र में जातक की

विशेष रुचि होती है। पारिवारिक जीवन के लिए सूर्य पर गुरु की दृष्टि अशुभ मानी गयी है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को विदेश में प्रवास के अवसर मिलते हैं।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक अवैध कार्यों से धन कमाता है। वह अपव्ययी भी होता है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में चंद्र

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में चंद्र सामान्य फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र के कारण जातक रसायन अथवा चिकित्सा संबंधी वस्तुओं के व्यापार में प्रवृत्त होता है। पर उसे पर्याप्त आय नहीं होती। वह अभावग्रस्त जीवन बिताता है। पर स्वभाव से साहसी होने के कारण वह सारे कष्ट सहन कर लेता है। इसमें परिवार वाले यथा पत्नी और संतानों से उसे पूरा सहयोग मिलता है। यद्यपि जातक स्त्रियों के प्रति द्वेष भावना रखता है तथापि मां को वह ईश्वर–तुल्य मानता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र स्वभाव को उग्र बनाता है। जातक तुनुक मिजाज–सा हो जाता है तथापि प्रौढ़ावस्था में वह शांत–गंभीर और साहसी बन जाता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र जातक के मन में समाज सेवा की भावना भरता है। वह अपने परोपकारी कार्यों से प्रसिद्ध भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ जातक अपनी सार्वजनिक सेवाओं के कारण प्रसिद्धि पाता है। उसे धन नहीं, यश एवं संतोष मिलता है।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को परोपकारी और कार्य–कुशल बनाती है।

मंगल की दृष्टि उसे बुद्धिमान, धनी और चतुर बनाती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप उसे अपने गुणों के कारण सत्तासीन लोगों के निकट रहने का अवसर मिलता है। जातक साहसी, उच्च नैतिक आदर्शों में आस्था रखने वाला और परोपकारी होता है।

गुरु की दृष्टि उसे विभिन्न शास्त्रों का अध्येता बनाती है।

शुक्र की दृष्टि से जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं तथापि पूर्वा फाल्गुनी के प्रथम और द्वितीय चरण में स्थित चंद्र पर शुक्र की दृष्टि विपत्ति–कारक कही गयी है।

शनि की दृष्टि के कारण जीवन अभावग्रस्त बीतता है। जातक धन से, पारिवारक सुख से वंचित रहता है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में बुध

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में बुध प्रायः शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध जातक के सौभाग्य में वृद्धि करता है। वह धनी और प्रसिद्ध होता है, तथापि उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं रहता।

द्वितीय चरण: यहाँ बुध तर्क शक्ति में वृद्धि करता है फलतः जातक वकालत में विशेष सफल रहता है। स्त्रियों के प्रति वह विशेष आकर्षण अनुभव करता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध की स्थिति अशुभ फल देती है। जातक को पत्नी और संतान से कोई सुख नहीं मिलता। अपनी बुद्धिहीनता के कारण वह गलत फहमियों का भी शिकार हो जाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध धन से सुखी रखता है लेकिन अपने व्यवहार के कारण दुःख तो उठाता ही है, वैवाहिक जीवन के आनंद से भी वंचित हो जाता है। परोपकारी वृत्ति से शून्य जातक अनैतिक कार्यों को भी बुरा नहीं समझता।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

पूर्वा फाल्गुनी स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि सत्य–वक्ता, ललितकला प्रिय बनाती है एवं सत्तासीन लोगों से लाभ के अवसर जुटाती है।

चंद्र की दृष्टि जातक को बहसबाज और बातूनी बनाती है।

मंगल की दृष्टि उसके स्वभाव में धूर्तता का पुट भरती है।

गुरु की दृष्टि से जातक को सारे सुख मिलते हैं।

शुक्र की दृष्टि उसे प्रसिद्ध और शत्रुहंता बनाती है। सत्तासीन लोगों की कृपा–दृष्टि उस पर बनी रहती है।

शनि की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक के सारे कार्य अनायास बनते चले जाते हैं। यहाँ शनि की दृष्टि जातक को स्वच्छता–प्रिय और वेशभूषा के प्रति सतर्क बनाती है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में गुरु

पूर्वा फाल्गुनी में गुरु की स्थिति शुभ होती है।

प्रथम चरण: यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक बलवान, साहसी

और विज्ञान के विषयों का विद्वान होता है। वह सच्चा मित्र सिद्ध होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु जातक को सर्वप्रिय–मधुरभाषी बनाता है। बुध–गुरु की युति उसे विधि–क्षेत्र में सफल बनाती है। मंगल–गुरु की युति उसे सफल–सक्षम प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु सर्वोत्तम फल देता है। जातक विद्वान, प्रसिद्ध और जीवन के हर क्षेत्र में सफल होता है। वह सहज ही शीर्ष पद पर पहुँच जाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी गुरु शुभ फल देता है। जातक कीर्तियुक्त धनी होता है। अध्यात्म के प्रति भी उसकी रुचि होती है।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को परोपकारी बनाती है। उसमें नेतृत्व की भी क्षमता होती है।

चंद्र की दृष्टि का भी शुभ फल होता है। जातक सौभाग्यशाली, पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करने वाला और सुखी होता है।

मंगल की दृष्टि उसे भूमि के क्रय–विक्रय या भवन–निर्माण के व्यवसाय में प्रवृत्त करती है। वह हर क्षेत्र में सफल होता है।

बुध की दृष्टि से जातक की ज्योतिष शास्त्र में सक्रिय रुचि होती है। वह मृदुभाषी और दूसरों को प्रभावित, आकर्षित करने वाला भी होता है।

शुक्र की दृष्टि भी उसे भवन–निर्माण के व्यवसाय में प्रवृत्त करती है।

शनि की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक धनी और अपने समाज का नेता होता है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शुक्र

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शुक्र शुभ फल देता है, विशेषकर वैवाहिक जीवन में।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र जातक को उदार, परोपकारी और धनी बनाता है। सभी इससे संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ भी शुक्र शुभ फल देता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र जातक का वैवाहिक–पारिवारिक जीवन सुखी रखता है। पत्नी सुदंर, सुशील होती है। जातक को स्त्रियों के माध्यम से लाभ मिलता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी शुक्र वैवाहिक जीवन को सुखी और समृद्ध बनाता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को विद्वान बनाती है। जातक शासकीय सेना में होता है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप इसका जीवन सुखी, समृद्धिशाली और व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

मंगल की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। स्त्रियों की कुसंगति में जातक पैतृक संपत्ति का नाश कर देता है।

बुध की दृष्टि उसे हर दृष्टि से सुखी रखती है। जातक धनी होता है। उसे संतान सुख भी मिलता है।

गुरु की दृष्टि जातक को हर दृष्टि से सौभाग्यशाली बनाती है।

शनि की दृष्टि का शुभ फल नहीं होता। जीवन अभावग्रस्त और कष्टमय बीतता है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शनि

पूर्वा फाल्गुनी के प्रथम चरण को छोड़कर विभिन्न चरणों में शनि प्रायः शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ शनि बचपन को बेहद कष्टकारक बना देता है। जातक को मस्तिष्क–विकार की भी आशंका बनी रहती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि शुभ फल देता है। जातक संवदेनशील लेखक होता है। वह उदार और उत्साही भी होता है। उसका पारिवारिक जीवन शुभ से बीतता है। प्रौढ़ावस्था में समाज की उसे मान्यता प्राप्त होती है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि जातक को अत्यंत परोपकारी बनाता है। जातक सत्यनिष्ठ, कार्य कुशल और दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर होता है।

चतुर्थ चरण: जातक घोर परिश्रमी होता है, पर उसे अपने परिश्रम का फल तत्काल नहीं मिलता। उसे विलंब से सफलता मिलती है।

पूर्वा फाल्गुनी स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल नहीं देती। जातक स्वभाव से उग्र और निम्न कोटि के कार्यों में प्रवृत्त होता है।

चंद्र की दृष्टि उसे शासकीय अथवा राजनीति के क्षेत्र में सफल बनाती है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

मंगल की दृष्टि अतिशय बुद्धिमान और वैज्ञानिक बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे धनवान बनाती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप जातक सद्‌गुणी और परोपकारी होता है। राजनीति में भी उसे सफलता मिलती है।

शुक्र की दृष्टि जातक को धार्मिक स्वभाव वाला बनाती है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरण: जातक उदार, सद्‌गुणी और व्यवसाय में सफल रहता है। वह सफल प्रशासक भी होता है।

द्वितीय चरण: जातक परिश्रमी होता है और अपने बाहुबल से सफलता और सम्मान अर्जित करता है।

तृतीय चरण: जातक यायावर होता है। विदेशों में प्रवास से उसे धन लाभ होता है।

चतुर्थ चरण: जातक बुद्धिमान, कार्यकुशल और जीवन में सफल रहता है। शासन से उसे मान–सम्मान प्राप्त होता है।

पूर्वा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरण: यहाँ केतु सर्वोत्तम फल देता है। जातक को अर्थ–लाभ, यश–लाभ और जीवन में सारी सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। उसका वैवाहिक जीवन भी सुखी बीतता है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी केतु सौभाग्य कारक होता है। जातक को अर्थ–लाभ, यश–लाभ और हर तरह के शुभ का लाभ मिलता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु व्यक्ति को अत्यधिक धार्मिक वृत्ति का बनाता है। ईश्वर पर उसकी अगाध आस्था होती है। वह स्पष्ट वक्ता भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ केतु जातक को परिश्रमी बनाता है। वह जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति करता है।

उत्तरा फाल्गुनी

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र राशिपथ में 146.40 से 160.00 अंशों तक स्थित है। पर्यायवाची नाम हैं–अर्यमा, उत्तर भ्नाम। अरबी में इसे 'अल सरफाह' कहते हैं। यह नक्षत्र सिंह एवं कन्या राशि में बंटा हुआ है। प्रथम चरण सिंह राशि (स्वामी : सूर्य) में तथा बाद के तीन चरण कन्या राशि में, जिसका स्वामी बुद्ध है, आते हैं। इस नक्षत्र में दो तारे हैं, जो एक शैया का भास देते हैं।

नक्षत्र देवता अर्यमा तथा नक्षत्र का स्वामी ग्रह सूर्य है। नक्षत्र का गणः मनुष्य, योनिः गौ और नाड़ीः आदि है।

चरणाक्षर हैं: टे, टो, पा, पी।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे जातक लंबे, स्थूलकाय एवं कुछ लंबी नाक वाले होते हैं। स्वभाव से वे धार्मिक, कर्त्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, समाजसेवी तथा सौंपे गये कार्य पूर्ण उत्तरदायित्व से करने वाले होते हैं, फलतः जीवन सुखी और संतुष्ट बीतता है। उनकी स्वतंत्रप्रिय प्रवृत्ति कभी–कभी उन्हें अधीर, हठी एवं गुस्सैल भी बना देती है, तथापि दिल के वे साफ होते हैं। वे किसी को धोखा देना नहीं जानते, न चाहते। वे जन संपर्क के कार्यों से लाभान्वित हो सकते हैं। उनमें एक यही कमी होती है कि वे औरों का काम तो बड़ी निष्ठा से निभाते हैं, लेकिन अपने कार्यों के मामले में लापरवाही ही होते हैं। यों वे कठिन परिश्रम से नहीं घबराते, फलतः जीवन में तरक्की भी करते हैं। अध्यापन, लेखन, वैज्ञानिक शोध आदि के क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा खूब चमकती है।

ऐसे जातकों का बत्तीस वर्ष की आयु तक का जीवन घोर संघर्षमय कहा गया है। अड़तीस वर्ष की अवस्था के बाद उनकी तेजी से तरक्की होती है। उनका पारिवारिक जीवन न्यूनाधिक रूप से सुखी ही होता है क्योंकि वे संतोषप्रिय होते हैं।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं मध्यम कद की, कोमल शरीर तथा कुछ लंबी नाक वाली होती हैं। वे शांतिप्रिय, सिद्धांतप्रिय तथा मृदुभाषी भी होती हैं। गणित एवं विज्ञान में उनकी विशेष रुचि होती है तथा अध्यापन एवं प्रशासन के क्षेत्र में वे सफलता प्राप्त कर सकती हैं। माडलिंग या अभिनय के क्षेत्र में भी वे सफल हो सकती हैं। गृह कार्य में भी वे दक्ष होती हैं। ऐसी जातिकाओं को प्रदर्शन–प्रियता से बचने की सलाह दी गयी है।

ऐसी जातिकाओं का वैवाहिक–पारिवारिक जीवन पूर्णतः सुखी रहता है, पति एवं बच्चों से उन्हें हमेशा सुख–संतोष ही मिलता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों के स्वामी ग्रह इस प्रकार हैं: प्रथम एवं चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु एवं द्वितीय तथा तृतीय चरण का स्वामी शनि।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में सूर्य

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में सूर्य सामान्यतः शुभ फल देता है। इस नक्षत्र में सूर्य कलात्मक अभिरुचियां बढ़ाता है।

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य जातक को उत्साही, वाचाल और महत्त्वाकांक्षी बनाता है। स्वभाव की उग्रता के कारण वह अलोकप्रिय भी हो जाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य दार्शनिक स्वभाव में वृद्धि करता है। जातक में लेखन प्रतिभा होती है।

तृतीय चरण: यहाँ भी सूर्य कलात्मक अभिरुचियों में वृद्धि करता है। जातक को साहित्य से, चित्रकला से प्रेम होता है। उसमें संवेदनशीलता कुछ अधिक होती है और वह एक सफल कवि या चित्रकार भी बन सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य सामान्यतः शुभ फल देता है। जातक की ललित कलाओं में रुचि होती है।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

उत्तरा फाल्गुनी स्थित सूर्य पर चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को संबंधियों से कष्ट मिलता है।

मंगल की दृष्टि भी शत्रुओं में वृद्धि करती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप संबंधियों की ईर्ष्या का पात्र बनता है।

गुरु की दृष्टि उसमें तंत्र–मंत्र के प्रति सक्रिय रुचि बढ़ाती है।

शुक्र की दृष्टि विदेशों में प्रवास की संभावनाएं प्रबल करती है।

शनि की दृष्टि के फलस्वरूप उसे पग–पग पर अपमानित होना पड़ता है, विशेषकर स्त्रियों से।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में चंद्र

उत्तरा फाल्गुनी में चंद्रमा एक ओर कलात्मक अभिरुचियां बढ़ाता है तो दूसरी अधिक कन्याओं का योग भी बनाता है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र व्यक्ति को साहसी बनाता है। वह मातृभक्त होता है। वह कमाता भी खूब है, पर उसी तरह गंवाता भी खूब है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र जातक को धर्म के प्रति निष्ठावान बनाता है। स्वभाव से वह उदार, दयावान भी होता है। तंत्र–मंत्र में भी उसकी रुचि होती है एवं वह एक जगह स्थिर नहीं रहता। परिवर्तन की लालसा उसे यायावर बना देती है। अधिक कन्याओं का भी योग बताया गया है।

तृतीय चरण: यहाँ भी चंद्र अधिक कन्याओं का योग बनाता है। जातक व्यवहार चतुर और शास्त्रों का ज्ञाता होता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावपूर्ण होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र जातक को सुख–समृद्धि प्रदान करता है। जातक सद्‌गुणी, लोभहीन और संतोषी प्रवृत्ति का होता है।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि पराभौतिकी के क्षेत्र में जातक की रुचि बढ़ाती है।

मंगल की दृष्टि भी उसे विद्वान बनाती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को शासन से भी लाभ मिलता है।

गुरु की दृष्टि के कारण जातक विद्या दान को परम धर्म समझता है। वह विद्वान होता है। अपने ज्ञान को औरों को बांटने में उसे आत्मिक सुख मिलता है।

शुक्र की दृष्टि उसे जीवन सुख–समृद्धि प्रदान करती है।

शनि की दृष्टि के फलस्वरूप वह अभावग्रस्त रहता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में बुध

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में बुध की स्थिति जातक को वाणिज्य–व्यवसाय एवं वित्तीय विषयों में विशेषज्ञ बनाती है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध जातक को वित्तीय लेखा–जोखा रखने में कुशलता प्रदान करती है। उसकी ज्योतिष शास्त्र एवं खगोल शास्त्र में भी रुचि होती है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी बुध जातक को लेखापाल अथवा वित्तीय–विशेषज्ञ बनाता है। धार्मिक विषयों में भी उसकी रुचि होती है। जातक लेखन में भी प्रवृत्त होता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध जातक को विद्वान, उदार व सद्‌गुणी बनाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी बुध जातक को वित्तीय विषयों का विशेषज्ञ बनाता है। धार्मिक विषयों में, ज्योतिष शास्त्र में उसकी रुचि होती है। प्रौढ़ावस्था में वह अपना स्वतंत्र कार्य शुरू करता है।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को शासन से लाभ दिलवाती है।

चंद्र की दृष्टि उसे योग्य प्रशासक बनाती है।

मंगल की दृष्टि का सामान्य फल मिलता है।

गुरु की दृष्टि जातक को विद्वान, वित्तीय विषयों का विशेषज्ञ और धनी बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप पारिवारिक जीवन अशांत रहता है।

शनि की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक अपने सद्व्यवहार के कारण लोकप्रिय होता है। सर्वत्र आदर पाता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में गुरु

उत्तरा फाल्गुनी के चतुर्थ चरण में गुरु विशेष फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ गुरु जातक को सटोरिया बना देता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु जातक को लेखन के क्षेत्र में सफल बनाता है। साहित्य में उसकी विशेष रुचि होती है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु सामान्य फल देता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु शुभ फल देता है। राजनीति के क्षेत्र में जातक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करता है। वह यशस्वी और प्रसिद्ध भी होता है। उसके अच्छी संतान होती है।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को धनी, समादृत और पारिवारिक दृष्टि से सुखी रखती है।

चंद्र की दृष्टि योग्य प्रशासक बनाती है। उसमें नेतृत्व के गुण होते हैं।

मंगल की दृष्टि उसे वाहन संबंधी रोजगारों में प्रवृत्त करती है।

बुध की दृष्टि उसे सफल ज्योतिषी और गणितज्ञ बनाती है।

शुक्र की दृष्टि उसे धनी बनाती है।

शनि की दृष्टि का अत्यंत शुभ फल होता है। जातक धनी और पारिवारिक दृष्टि से भी बेहद सुखी रहता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शुक्र

उत्तरा फाल्गुनी में शुक्र सामान्य एवं मिश्रित फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र व्यक्ति को धीर–गंभीर और उदार बनाता है। स्त्रियों से उसे आर्थिक लाभ होता है। उसकी पत्नी सुंदर, सुशील और सुशिक्षित होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र जातक को अभावग्रस्त रखता है। पत्नी के स्वभाव के कारण उसका पारिवारिक जीवन दुखी रहता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र सामान्य फल देता है। उत्तरा भाद्रपद में मंगल की स्थिति पत्नी के जीवन की दृष्टि से अशुभ कही गयी है।

जातक के अवैध संबंध होने के भी योग बताये गये हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र अप्रत्याशित फल देता है। बेहद शुभ भी और बेहद अशुभ भी।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को चिकित्सक बनाती है। दो पत्नियों के भी संकेत बताये गये हैं।

चंद्र की दृष्टि उसे संकोची बनाती है। वह स्त्रियों में लोकप्रिय होता है।

मंगल की दृष्टि उसे सौभाग्यशाली बनाती है।

बुध की दृष्टि से जातक का व्यक्तित्व आकर्षक एवं स्वभाव का शांत होता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप वह विद्वान होता है।

शनि की दृष्टि उसे चरित्र की दृष्टि से कमजोर बनाती है। कामातिरेक के कारण जातक तरह–तरह की व्याधियों का शिकार हो सकता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शनि

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में शनि के विशेष शुभ फल नहीं मिलते।

प्रथम चरण: यहाँ शनि सामान्य फल देता है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी शनि से सामान्य फल मिलते हैं।

तृतीय चरण: यहाँ शनि जातक को गुह्य विद्याओं की ओर प्रेरित करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि कष्ट कारक होता है।

उत्तरा फाल्गुनी स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को पिता से कोई लाभ नहीं मिलता। पिता से उसकी अनबन बनी रहती है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप उसे विधवा बहन का बोझ उठाना पड़ता है।

मंगल की दृष्टि भाई–बहनों के लिए अशुभ मानी गयी है।

बुध की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त करता है।

गुरु की दृष्टि उसे शासन से लाभ दिलवाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप दो पत्नियों का योग बनता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में राहु

उत्तरा फाल्गुनी के द्वितीय चरण में ही राहु कुछ शुभ फल देता है, अन्यथा उसका प्रभाव ही होता है।

प्रथम चरण: यहाँ राहु जातक को दुर्गुणी बनाता है। वह अभावग्रस्त, निष्ठाहीन होता है। चोरी की मनोवृत्ति के फलस्वरूप वह हेय दृष्टि से देखा जाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ राहु होने से जातक अतिशय महत्त्वाकांक्षी होता है। वह कार्य दक्ष भी होता है। पर उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

तृतीय चरण: यहाँ राहु जातक को विलासी बनाता है। कामाधिक्य के कारण उसे गुप्त रोग होते हैं। उसके धन का नाश भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ राहु जातक को दरिद्र बनाता है। व्यक्ति ईमानदारी भी खो बैठता है।

उत्तरा फाल्गुनी के विभिन्न चरणों में केतु

राहु की तुलना में केतु उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में कुछ शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ केतु जातक को धनी बनाता है। उसका पारिवारिक जीवन भी सुखी रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ केतु जातक में प्रतिहिंसा की भावना भरता है। जातक को पत्नी पक्ष से आर्थिक लाभ होता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु जातक को गुह्य विद्याओं का प्रेमी और ज्योतिषी बनाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ केतु वाहन से दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ाता है। जातक शासकीय सेवा में होता है।

हस्त

हस्त राशिपथ में 160.00 से 173.20 अंशों के मध्य स्थित नक्षत्र है। भानु, अर्क एवं असण' अन्य पर्यायवाची नाम हैं। अरबी में इसे 'अल अवा' कहते है। हस्त नक्षत्र में पांच तारों की स्थिति मानी गयी है, जो हथेली की भांति दिखायी देते हैं। हस्त नामकरण के पीछे शायद यही कारण है। हस्त का देवता सूर्य एवं स्वामी ग्रह चंद्र माना गया है।

गण: देव, योनि: महिष एवं नाड़ी: आदि है। इस नक्षत्र के चारों चरण कन्या राशि में आते हैं, जिसका स्वामी बुध है।

चरणाक्षर हैं—पू, ष, ण, ठ।

हस्त नक्षत्र में जन्मे जातक लंबे एवं हृष्ट—पुष्ट शरीर वाले होते हैं। ऐसे जातक शांतप्रिय, जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तत्पर, आडम्बर से शून्य होते हैं। वे सदैव मुस्कराते रहते हैं तथा अपने व्यक्तित्व और कृतित्त्व से लोगों में सम्मान और आदर के पात्र बनते हैं। ऐसे जातक अनुशासनप्रिय तथा जीवन में आने—वाले हर उतार—चढ़ाव का विवेक से सामना करते हैं। उनके जीवन में उतार—चढ़ाव आते ही रहते हैं। चूंकि ऐसे जातक किसी की पराधीनता पसंद नहीं करते, अतः अक्सर वे उद्योग एवं व्यवसाय में उच्च पद पर अपनी मेहनत के बल पर पहुँच ही जाते हैं।

हस्त नक्षत्र में जातक अच्छे सलाहकार भी सिद्ध होते हैं। विवादों का निपटारा करने में उन्हें एक तरह की दक्षता प्राप्त होती है।

हस्त नक्षत्र में जातक छोटे—मोटे विवादों के बावजूद वैवाहिक जीवन

सुख से बिताते हैं। उन्हें पत्नी भी अच्छी मिलती है, सुगृहिणी, गृहकार्य में दक्ष।

हस्त नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर, कोमल शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती हैं। नारी सुलभ लज्जा से युक्त ऐसी जातिकाएं बड़ों का आदर करने तथापि अपनी अभिव्यक्ति को येन–केन–प्रकरेण प्रकट कर देने वाली होती हैं। कभी–कभी अभिव्यक्ति की उनकी यह स्वतंत्रता संबंधियों को शत्रु तक बना देती है।

ऐसी जातिकाओं का वैवाहिक जीवन सुखद माना गया है, तथापि उन्हें मूल नक्षत्र में जन्मे जातक से विवाह न करने का परामर्श दिया गया है। ऐसी जातिकाओं को प्रथम संतान पुत्र होती है।

हस्त नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी ग्रह इस प्रकार हैं–प्रथम चरण: मंगल, द्वितीय चरण: शुक्र, तृतीय चरण: बुध एवं चतुर्थ चरण: चंद्रमा।

हस्त के विभिन्न चरणों में सूर्य

हस्त के विभिन्न चरणों में सूर्य सामान्य फल देता है। यदि सूर्य के साथ शुक्र की भी युति हो तो विवाह में विलंब होता है। पैंतीस वर्ष की अवस्था में ही यह कार्य संपन्न हो पाता है।

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य जातक को निर्माण कार्यों से संबंधित व्यवसाय में प्रवृत्त करता है, यथा इंजीनियर, ठेकेदार आदि। इस चरण में यदि सूर्य के साथ शुक्र भी हो तो विवाह में विलंब होता है, विशेषकर स्त्रियों के मामले में।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है। जीवन साधारण बीतता है। यदि सूर्य के साथ शुक्र हो तो जातक की पत्नी उसके लिए मानसिक संताप का कारण बन जाती है।

तृतीय चरण: यहाँ भी सूर्य शुक्र की युति विवाह में विलंब कारक है, विशेषकर स्त्रियों के मामले में। इस चरण मे सूर्य अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ाता है। जातक विद्वान होता है और ज्ञानदान में उसे संतोष मिलता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य साहित्य के प्रति रुझान जागृत करता है। व्यक्ति में लेखन प्रतिभा होती है। वह अनुवादक और दुभाषिये का कार्य भी भली–भांति कर सकता है।

हस्त स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को जन्म–स्थल से दूर रखती है। संबंधी भी सहायक नहीं होते। उनसे कष्ट ही मिलता है।

मंगल की दृष्टि उसे आलसी बनाती है।

बुध की दृष्टि उसकी संतान को शासन से लाभ प्राप्त करवाती है।

गुरु की दृष्टि उसे गुह्य विद्याओं की ओर प्रवृत्त करती है। पत्नी और संतान से संबंधों की दृष्टि से यह स्थिति अशुभ है।

शुक्र की दृष्टि विदेशों का प्रवासी बनाती है।

शनि की दृष्टि कामवासना बढ़ाती है।

हस्त के विभिन्न चरणों में चंद्र

हस्त के विभिन्न चरणों में चंद्र सामान्य फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र सामान्य फल देता है। इस चरण में जन्म पिता के लिए अशुभ माना गया है।

द्वितीय चरण: इसमें जन्म मामा के लिए अशुभ होता है। जातक को मादक पदार्थ ग्रहण करने में विशेष रुचि होती है। यह उसे रोगी बनाती है।

तृतीय चरण: यहाँ जन्म स्वयं जातक के लिए घातक बताया गया है। जातक व्यवसाय भी कर सकता है। इंजीनियरिंग में भी उसकी रुचि होती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र जातक को सहृदय, संवदेनशील बनाता है। वह लेखक भी हो सकता है। प्रकाशन व्यवसाय में भी रुचि होती है। इस चरण में जन्म माता के लिए अशुभ माना गया है।

हस्त स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को विद्वान बनाती है, पर वह अर्थाभाव से ग्रस्त भी रहता है।

मंगल की दृष्टि उसे विविध विषयों का विद्वान और धनी बनाती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप उसे सदैव अपने उच्चाधिकारियों की कृपा का लाभ मिलता रहता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप वह एक प्रतिभाशाली एवं प्रसिद्ध विद्वान बनता है।

शुक्र की दृष्टि उसे चिकित्सा–व्यवसाय में प्रवृत्त करती है।

शनि की दृष्टि उसे धन से, पारिवारिक सुख से वंचित रखती है।

हस्त के विभिन्न चरणों में बुध

हस्त के विभिन्न चरणों में बुध सामान्य फल देता है तथापि यदि अन्य ग्रह भी अनुकूल हो, तो जातक राजा अथवा राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के तुल्य

होता है, उदाहरण के लिए यदि प्रथम चरण में यह नक्षत्र लग्न में हो और उसमें बुध स्थित हो, साथ ही रेवती नक्षत्र में गुरु, सूर्य और मंगल हो, पुष्य में शनि हो तथा पूर्वाषाढ़ा में शुक्र हो तो जातक राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के तुल्य होता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध मध्यम श्रेणी की संपन्नता प्रदान करता है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी बुध सामान्य फल देता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध जातक को वित्तीय विषयों में निष्णात बनाता है। यदि सूर्य के साथ बुध हो अर्थात् बुद्धादित्य योग बनता हो तो जातक अच्छा ज्योतिषी बनता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध नौकरी पेशे में प्रवृत्त करता है। अपनी खान–पान की आदतों के फलस्वरूप जातक उदर रोगों का शिकार हो जाता है।

हस्त स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल देती है। व्यक्ति, सत्यवादी, उच्च पदासीन और सत्ता पक्ष से लाभान्वित होता है।

चंद्र की दृष्टि उसे मृदुभाषी लेकिन स्वभाव से उग्र भी बनाती है। जातक सरकारी नौकरी को प्राथमिकता देता है।

मंगल की दृष्टि उसे कला–प्रिय बनाती है। वह विविध कलाओं में निष्णात भी होता है।

गुरु की दृष्टि उसे साहसी और सर्वगुण संपन्न बनाती है।

शुक्र की दृष्टि से जातक सहजता से शत्रुओं को पराजित करता है।

शनि की दृष्टि उसे कठिन परिश्रमी बनाती है। ऐसे जातक को अपने परिश्रम का तत्काल फल भी मिलता है।

हस्त के विभिन्न चरणों में गुरु

हस्त के विभिन्न चरणों में गुरु के मध्यम फल मिलते हैं।

प्रथम चरण: यहाँ गुरु सामान्य फल देता है तथापि यदि लग्न में रेवती नक्षत्र हो तो जातक वित्तीय विषयों का विशेषज्ञ बनाता है और शासन में उच्च पद प्राप्त करता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु जातक को नौ सेना अथवा जहाज रानी से जोड़ता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु जातक को वास्तुकार अथवा इंजीनियर

बनाता है। उसे अच्छी पत्नी मिलती है। स्वास्थ्य और धन की दृष्टि से भी जीवन उत्तम बीतता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु जातक को प्रकाशन व्यवसाय से जोड़ता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति शुभ नही है। जातक को उदर रोगों से पीड़ा बनी रहती है।

हस्त स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी और पत्नी, बच्चे एवं संबंधियों का पूर्ण सुख प्राप्त करता है।

चंद्र की दृष्टि उसे व्यवहार कुशल, सफल प्रशासक बनाती है।

मंगल की दृष्टि उसे सेना में सेवा के लिए प्रवृत्त करती है।

बुध की दृष्टि ज्योतिर्विद बनाती है। पारिवारिक जीवन सुखी रहता है।

शुक्र की दृष्टि का शुभ फल नहीं होता। जातक को स्त्रियों से अपमानित होना पड़ता है।

शनि की दृष्टि उसे शासन का कृपा भाजन बनाती है। जातक राजनीतिक दायित्व सफलतापूर्वक संपादित करता है।

हस्त के विभिन्न चरणों में शुक्र

हस्त के विभिन्न चरणों में शुक्र व्यक्ति को मिष्ठान प्रिय, विलासी और रोगी बनाता है। पारिवारिक जीवन के लिए भी यह स्थिति शुभ नहीं है।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र जातक को मिष्ठान प्रिय बनाता है फलतः अच्छे स्वास्थ्य के बावजूद शर्करा रोग का शिकार हो जाता है। जातक का पारिवारिक जीवन सुखी नहीं बीतता।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र एकाधिक स्त्रियों से संबंध कराता है, फलतः उसका पारिवारिक जीवन नर्क तुल्य बन जाता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को मिष्ठान भोजी बनाता है। जातक या तो सूती मिल में सेवारत होता है या फिर कपड़े का व्यवसाय करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र जातक को अत्याधिक विलासी बनाता है फलतः वह यौन रोगों का भी शिकार होता है। वह मद्य प्रेमी भी होता है।

हस्त स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को सुरक्षा विभाग में उच्च पद दिलाती है।

चंद्र की दृष्टि उसे सुरुचिपूर्ण स्वभाव देती है।

मंगल की दृष्टि उसे हर दृष्टि से सौभाग्यशाली बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे विद्वान और धनी बनाती है।

गुरु की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है।

शनि की दृष्टि का फल ठीक नहीं होता। जातक का अपमानित जीवन कष्टमय होता है।

हस्त के विभिन्न चरणों में शनि की स्थिति

हस्त के विभिन्न चरणों में शनि सामान्य फल देता है। जातक उदर रोगों से भी ग्रस्त रहता है।

प्रथम चरणः यहाँ शनि सामान्य फल देता है। जातक कब्ज का शिकार हो जाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी शनि के विशेष फल प्राप्त नहीं होते।

तृतीय चरणः यहाँ शनि जातक को लेखन–प्रकाशन के व्यवसाय में प्रवृत्त करता है। चमड़े से बनी वस्तुओं के व्यापार में उसे सफलता मिलती है। जातक उदर व्याधि से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि जातक को इतना स्वार्थी, चतुर और व्यवहार कुशल बनाता है कि लोग उसे 'धूर्त' कहने लगते हैं। वह अवैध कार्य करने में कोई हिचक नहीं अनुभव करता। इस चरण में शनि उदर रोगों से पीड़ित रखता है।

हस्त स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के फलस्वरूप व्यक्ति कुसंगति का शिकार होता है।

चंद्र की दृष्टि का फल शुभ होता है। आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त जातक प्रसिद्ध, धनी और अधिकार–संपन्न होता है।

मंगल की दृष्टि उसे शास्त्रज्ञ और विद्वान बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे धनी, विद्वान और सामरिक नीति में निपुण बनाती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप धनी, प्रसिद्ध और परोपकारी होता है।

शुक्र की दृष्टि उसे आभूषणों से संबंधित व्यवसाय में सफल बनाती है।

हस्त के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरणः यहाँ राहु जातक को तकनीकी क्षेत्र में सफल बनाता है। पर उसे परिश्रम का फल विलंब से मिलता है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु की स्थिति जातक को नौकरी में प्रवृत्त करती है। वह यातायात अथवा राजस्व विभाग में नौकरी करता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु सामान्य फल देता है। स्त्रियों की कुंडली में में स्थित राहु कामावेग में वृद्धि करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु व्यक्ति को दुर्गुणों से युक्त करता है।

हस्त के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरणः यहाँ केतु विशेष लाभ नहीं देता। जातक का जीवन सामान्य बीतता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी केतु शुभ फल नहीं देता। जातक की स्मरण–शक्ति क्षीण होती है।

तृतीय चरणः यहाँ केतु शुभ फल देता है। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है और उत्तरोत्तर उन्नति करता जाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी केतु शुभ फल देता है। गुरु के साथ केतु की युति जातक को प्रकाशन व्यवसाय में प्रवृत्त करती है।

चित्रा

चित्रा नक्षत्र राशिपथ में 173.20 से 186.40 अंशों के बीच स्थित है। त्वष्टा एवं सरवर्द्धक इसके पर्यायवाची नाम हैं। अरबी में चित्रा को 'अज़ सिमक' कहा जाता है। इस नक्षत्र के प्रथम दो चरण कन्या राशि (स्वामी : बुध) एवं शेष दो चरण तुला राशि (स्वामी : शुक्र) में आते हैं। चित्रा में एक ही तारे की स्थिति मानी गयी है और उसे मोती के समान माना गया है। चित्रा का नक्षत्र देवता त्वष्टा एवं स्वामी ग्रह मंगल है।

गण: राक्षस, योनि: व्याघ्र एवं नाड़ी: मध्य है।

चरणाक्षर हैं–पे, पो, रा, री।

चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक प्रायः छरहरे होते हैं। वे बेहद बुद्धिमान, शांतिप्रिय तथा अंतर्ज्ञान शक्ति से संपन्न होते हैं। अक्सर उन्हें स्वप्न में भावी का ज्ञान हो जाता है। यद्यपि ऐसे जातक स्वार्थी नहीं होते तथापि वे अपनी जिद के भी पक्के होते हैं। फलतः जीवन में उन्हें पग–पग पर विरोध का सामना करना पड़ता है। लेकिन यह विरोध और बाधा उनकी प्रगति का ही कारक बनता है। ऐसे जातकों में समाज के वंचित वर्गों के प्रति सच्ची सहानुभूति होती है तथा उनके उत्थान के लिए वे चेष्टारत भी रहते हैं।

ऐसे जातकों का बत्तीस वर्ष तक की अवस्था का जीवन संघर्षमय रहता है। तैंतीसवें वर्ष से उनके जीवन में जैसे स्वर्णकाल का पदार्पण होता है।

चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातकों को पिता से विशेष स्नेह एवं संरक्षण तथा उसकी स्थिति का लाभ भी मिलता है। तथापि ऐसे जातकों के वैवाहिक जीवन में अनबन जैसे स्थायी पारिवारिक सदस्य बनकर रहने लगती है।

चित्रा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर, स्वतंत्रताप्रिय तथा कभी–कभी गैर–जिम्मेदार व्यवहार करने वाली होती हैं। उनकी विज्ञान में रुचि होती है और उसी में शिक्षा प्राप्त करती हैं। ऐसी जातिकाओं के विवाह के समय कुंडली–मिलान आवश्यक कहा गया है अन्यथा वैवाहिक जीवन के दुखी अथवा जीवन साथी से विलगाव की आशंका बनी रहती है।

चित्रा नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी इस प्रकार हैं–प्रथम चरण: सूर्य, द्वितीय चरण: बुध, तृतीय चरण: शुक्र एवं चतुर्थ चरण: मंगल।

चित्रा के विभिन्न चरणों में सूर्य

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य जातक को धनी बनाता है। उसकी मशीनों में दिलचस्पी होती है और वह एक सफल मैकेनिक बन सकता है। ऐसा जातक अपनी पत्नी की कोई बात टालता नहीं।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य व्यक्ति को औषधियों, रसायन अथवा मादक द्रव्यों के व्यवसाय में प्रवृत्त करता है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य जातक की धार्मिक विषयों में अभिरुचि बढ़ाता है। वह विद्वान भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य प्रथम चरण की भांति मशीनों के प्रति दिलचस्पी बढ़ाता है। जातक एक सफल–कुशल मैकेनिक बन सकता है।

चित्रा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को जल संबंधी व्यवसाय में लाभ देती है। उस पर अनेक स्त्रियों के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व भी होता है।

मंगल की दृष्टि उसे साहसी और वैभव–संपन्न बनाती है।

बुध की दृष्टि से उसे लेखन प्रतिभा प्राप्त होती है।

गुरु की दृष्टि से उसे सत्ता पक्ष से लाभ मिलता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप राजनीतिक क्षेत्र में उच्च पद–प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

शनि की दृष्टि मनोवृत्ति संकीर्ण बनाती है। कामाधिक्य के फलस्वरूप व्यक्ति अपनी उम्र से बड़ी स्त्रियों से भी संबंध जोड़ लेता है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में चंद्र

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र मृदुभाषी बनाता है। ललित कलाओं में जातक की विशेष अभिरुचि होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र जातक को उदार, परोपकारी और सत्यवादी बनाता है। विदेश में प्रवास करने की अवसर मिलते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र जातक को बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ और मृदुभाषी बनाता है। जातक प्रसिद्ध होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी चंद्र उदार, परोपकारी और माता–पिता एवं गुरुजन के प्रति आदर रखने वाला बनाता है।

चित्रा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को धनी, साहूकार बनाती है। कृषि में भी उसे लाभ होता है।

मंगल की दृष्टि वैवाहिक जीवन के लिए अशुभ होती है। परस्त्री के कारण जातक अपनी पत्नी को भी त्याग देता है।

बुध की दृष्टि उसे विद्वान बनाती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप उसे पारिवारिक ही नहीं, अन्य सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

शुक्र की दृष्टि भी जीवन सुखी रखती है। मातृ--पक्ष से लाभ होता है।

शनि की दृष्टि अभावग्रस्त रखती है। माता के लिए यह दृष्टि अशुभ मानी गयी है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में बुध

चित्रा नक्षत्र में बुध शुभ फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ बुध जातक की हर विपत्ति से रक्षा करता है। वह अपने सद्गुणों के कारण सबके आदर का पात्र भी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध जातक को धार्मिक, सद्गुणी, उदार और विद्वान बनाता है। वैवाहिक जीवन भी सुखी होता है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध जातक को धनी बनाता है। जातक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विशेष दक्षता प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध की स्थिति शुभ नहीं मानी गयी है। जातक को संबंधियों से सदैव परेशानी रहती है।

चित्रा स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि प्रायः नहीं पड़ती। कारण सूर्य के निकट ही बुध होता है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करता है।

मंगल की दृष्टि के विषय में भी सूर्य की स्थिति समझनी चाहिए।

गुरु की दृष्टि उसमें नेतृत्व के गुण भरती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को हर तरह की सुख-सुविधा प्राप्त होती है।

शनि की दृष्टि जीवन में बाधाएं पैदा करती है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में गुरु

प्रथम चरण: यहाँ गुरु रोग कारक माना गया है तथापि जातक दीर्घजीवी होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु व्यक्ति को मित्रों के लिए सर्वस्व जुटा देने वाला बनाता है, फलतः उसका पारिवारिक जीवन दुखी रहता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक धनी, स्वस्थ और परिवार से सुखी-संपन्न रहता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी गुरु शुभ फल देता है। यदि लग्न में गुरु इसी चरण में हो तो जातक दीर्घजीवी, धनी और विद्वान होता है।

चित्रा स्थित गुरु पर ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक धनी, सुख-सुविधा संपन्न और सत्ता-पक्ष के निकट होता है।

चंद्र की दृष्टि का मिश्रित फल होता है। एक ओर जातक समृद्धियुक्त होता है तो दूसरी ओर कामाधिक्य के कारण वह बदनाम भी हो जाता है।

मंगल की दृष्टि जातक को विद्वान और साहसी बनाती है।

बुध की दृष्टि का भी शुभ फल मिलता है। जातक धनी, विद्वान और सद्गुणों से युक्त होता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है।

शनि की दृष्टि का भी शुभ फल मिलता है। जातक विविध विषयों का विद्वान होता है पर उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

चित्रा के विभिन्न चरणों में शुक्र

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र मिश्रित फल देता है। जातक सुशिक्षित होता है, तथापि उसका व्यवहार निम्न श्रेणी का होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र जातक को पत्नी और संतान का पूर्ण सुख प्रदान करता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र शुभ फल देता है। जातक में नेतृत्व और प्रशासन की क्षमता होती है। सत्ता पक्ष से उसे लाभ मिलता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र जातक को साहसी और परिश्रमी बनाता है। वह अपने बल–बूते पर जीवन में सब कुछ अर्जित करता है।

चित्रा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि का शुभ फल मिलता है। जातक वैभव–संपन्न होता है। पत्नी भी सुंदर मिलती है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक को अपनी मां की पद–प्रतिष्ठा का लाभ मिलता है।

मंगल की दृष्टि का वैवाहिक जीवन पर बुरा असर पड़ता है।

बुध की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक सौभाग्यशाली, सुखी होता है।

गुरु की दृष्टि पारिवारिक जीवन सुखी–संपन्न रखती है। पत्नी और बच्चे से पूर्ण संतोष मिलता है।

शनि की दृष्टि का शुभ फल नहीं मिलता। जातक अभावग्रसत रहता है। उसका पारिवारिक जीवन भी अशांत रहता है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में शनि

प्रथम चरणः यहाँ शनि शुभ फल नहीं देता। जातक धनहीन होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि जातक को अभावग्रस्त रखता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि सामान्य फल देता है तथापि यदि लग्न में पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो एवं चंद्र अश्विनी नक्षत्र में स्थित हो तो जातक अत्यंत वैभवशाली ही नहीं, अधिकार–संपन्न भी हो जाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि अत्यंत शुभ फल देता है। जातक धनी ही नहीं प्रसिद्ध भी होता है।

चित्रा स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक विद्वान होता है। एक यही दोष होता है कि उसे परावलंबन का जीवन बिताना पड़ता है।

चंद्र की दृष्टि उसे राजनीति के क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठा प्रदान करती है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप वह प्रतिरक्षा सेवाओं से जुड़ता है।

बुध की दृष्टि के कारण वह अवैध कार्यों में लिप्त होता है।

गुरु की दृष्टि उसे परोपकारी और सबके सुख दुःख में सहभागी होने की प्रवृत्ति देती है।

शुक्र की दृष्टि उसे विलासी बनाती है। सुरा–सुंदरी का वह शौकीन होता है। साथ ही उसे सत्ता पक्ष से भी लाभ मिलता है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में राहु

चित्रा के द्वितीय चरण को छोड़ शेष सभी चरणों में राहु मिश्रित फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ राहु शुभ फल नहीं देता। स्वभाव को क्रूर बना देता है।

द्वितीय चरण: यहाँ राहु धन की दृष्टि से सुखी, संपन्न रखता है। जातक साहसी भी होता है। कामाधिक्य के कारण वह परस्त्रीरत रहता है, फलः पारिवारिक जीवन नर्क बन जाता है।

तृतीय चरण: यहाँ राहु पारिवारिक जीवन सुखी रखता है। जातक को पत्नी और संतान से सुख–संतोष मिलता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ राहु की स्थिति पारिवारिक जीवन के लिए अशुभ है। व्यक्ति अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है।

चित्रा के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरण: यहाँ केतु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ केतु मध्यम फल देता है।

तृतीय चरण: यहाँ भी केतु की स्थिति शुभ नहीं होती। जातक निराशापूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ केतु शुभ फल देता है। जातक धनी और गुणी होता है। पैंतीस वर्ष के पूर्व विवाह होने से संबंध–विच्छेद का योग बताया गया है। पैंतीस वर्ष के उपरांत विवाह शुभ होता है।

स्वाति

स्वाति नक्षत्र राशि पथ में 186.40 से 200.00 अंशों के मध्य स्थित है। पर्यायवाची नाम हैं—मरुत, वात, समीरण, वायु। अरबी में इसे 'अल गफर' कहते हैं। चित्रा की तरह स्वाति नक्षत्र में भी केवल एक तारे की स्थिति मानी गयी है। यह नक्षत्र तुला राशि (स्वामी : शुक्र) के अंतर्गत आता है। देवता पवन एवं नक्षत्र स्वामी राहु है।

गण: देव, **योनि**: महिष एवं **नाड़ी**: अंत्य है।

चरणाक्षर हैं—रु, रे, रो, ता।

स्वाति नक्षत्र में जन्मे जातक मांसल देह एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाले होते हैं, विशेषकर स्त्रियों के आकर्षण के पात्र। स्वाति नक्षत्र में जन्मे जातक शांतिप्रिय, स्वतंत्र विचारों के और जिद्दी होते हैं। वे अपने कार्य की आलोचना बिलकुल पसंद नहीं करते। यों वे शंततिप्रिय होते हैं, तथापि एक बार क्रुद्ध हो जाने पर उन्हें संभालना कठिन हो जाता है। अतः उन्हें विवेक से काम करने की आदत डालनी चाहिए। वे अपनी स्वाधीनता पर बिना आंच आये सबकी सहायता के लिए तत्पर होते हैं। वे जरूरतमंदों के सच्चे दोस्त सिद्ध होते हैं लेकिन उनके मन में यदि किसी के प्रति नफरत घर कर जाए तो वह स्थायी हो जाती है।

स्वाति नक्षत्र में जन्मे जातकों का बाल्यकाल समस्याओं से लबालब रहता है। यद्यपि ऐसे जातक बुद्धिमान, कठोर परिश्रमी होते हैं तथापि उन्हें आर्थिक अभाव एक तरह से जकड़े रहता है। तीस से साठ वर्ष का उनका जीवन काल स्वर्णिम कहा जा सकता है।

स्वाति नक्षत्र में जातकों का वैवाहिक जीवन बहुत मधुर नहीं रहता

तथापि दुनिया की नजरों के सामने वे एक आदर्श दंपत्ति के रूप में नजर आते हैं।

स्वाति नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सत्यनिष्ठ, स्नेहिल, गुणवती, सहृदय तथा उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती हैं। धार्मिक वृत्ति की ऐसी जातिकाएं अपने विरोधियों का भी हृदय जीत लेती हैं। ऐसी जातिकाओं को पारिवारिक सुख शांति के लिए अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध भी कार्य करना पड़ता है।

स्वाति नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी इस प्रकार हैं–प्रथम चरण: गुरु, द्वितीय चरण: शनि, तृतीय चरण: शनि एवं चतुर्थ चरण: गुरु।

स्वाति के विभिन्न चरणों में सूर्य

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है। शुभ ग्रहों की दृष्टि ही उसे धनवान, विद्वान और सुखी बनाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य जातक को आभूषणों के व्यवसाय में प्रवृत्त करता है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है। शनि की दृष्टि नेत्र रोग उत्पन्न करती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य जातक को साहसी बनाता है।

स्वाति स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को जल से संबंधित उद्योगों यथा जहाजरानी आदि की ओर प्रवृत्त करती है। ऐसा जातक स्त्रियों के प्रति उदार, उनकी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है।

मंगल की दृष्टि उसे धनी बनाती है। वह प्रसिद्ध भी होता है। जातक युद्ध कौशल में निपुण होता है।

बुध की दृष्टि उसे ललित कलाओं में निष्णात बनाती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप वह सफल–कुशल और नेतृत्व के गुण वाला होता है।

शुक्र की दृष्टि से उसका व्यक्तित्व आकर्षक बनता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक धनहीन और रुग्ण होता है। पत्नी से उसकी नहीं बनती।

स्वाति के विभिन्न चरणों में चंद्र

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र जातक को विद्वान और धार्मिक बनाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक को सुशील और कृतज्ञ बनाता है। वह स्वयं को मिली सहायता कभी भूलता नहीं।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र जातक को व्यापारिक बुद्धि देता है। वह उदार, परोपकारी भी होता है और अपने इन गुणों के कारण वह लोकप्रिय भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र जातक को ललित कलाओं में निष्णात बनाता है। उसे अच्छी आय भी होती है। वह महत्त्वाकांक्षी और शत्रुहंता होता है।

स्वाति स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को गुह्य विद्याओं का प्रेमी बनाती है। सूर्य की अशुभ दृष्टि उसके पुरुषत्व पर प्रभाव डालती है।

मंगल की दृष्टि उसे सत्यवादी बनाती है। पुरुषत्व के लिए यह दृष्टि अशुभ कही गयी है।

बुध की दृष्टि उसे उद्भट विद्वान और जीवन में सदैव सफल बनाती है।

गुरु की दृष्टि उसे धार्मिक, उदार और सफल बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक व्यापार में प्रवृत्त होता है।

शनि की दृष्टि विशेष शुभ फल नहीं देती।

स्वाति नक्षत्र में मंगल के फल

स्वाति नक्षत्र में मंगल शुभ फल नहीं देता।

प्रथम चरण: यहाँ मंगल हो तो जातक कामाधिक्य के कारण किसी कार्य में सफल नहीं हो पाता है। उसमें ईमानदारी का अभाव भी बाधाएं ही उत्पन्न करता है।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल विशेष फल नहीं देता। ऐसा फल कहा गया है कि यदि लग्न में रोहिणी नक्षत्र हो तथा इस चरण में मंगल के साथ शनि हो तो जातक को कैंसर रोग होने की आशंका रहती है।

तृतीय चरण: यहाँ मंगल हो तो जातक साहसी, अस्थिर मति, यायावरी तबीयत का होने के साथ--साथ क्रूर हृदय भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल हो तो भी जातक में ईमानदारी का अभाव होता है तथा उसके कारण उसे दंड भी भुगतना पड़ता है।

स्वाति के विभिन्न चरणों में बुध

प्रथम चरणः यहाँ बुध जातक को विद्वान बनाता है। सामान्यः उसका जीवन सुखी लेकिन रोगी के रूप में बीतता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध जातक को उदार परोपकारी बनाता है। उसे पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध सामान्य फल देता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध जातक को इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल बनाता है।

स्वाति स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ नहीं मानी गयी है। जातक रोगग्रस्त और धनहीन होता है।

चंद्र की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक कठिन परिश्रमी और धनी होता है।

मंगल की दृष्टि भी शुभ होती है। जातक को सत्ता पक्ष से लाभ मिलता है।

गुरु की दृष्टि उसे विद्वान और धनी बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप वह स्त्रियों के प्रति आकर्षित होता रहता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नही होता। जातक अभावग्रस्त, उपेक्षापूर्ण जीवन बिताता है।

स्वाति के विभिन्न चरणों में गुरु

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक को धनी, लोकप्रिय और स्वस्थ बनाता है। उसे पूर्ण संतान सुख मिलता है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक को जीवन में हर तरह का सुख मिलता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु सामान्यतः शुभ फल देता है। शुक्र के साथ गुरु की युति जातक को चिकित्सक बनाती है।

स्वाति स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक सत्ता पक्ष का कृपा पात्र होता है।

चंद्र की दृष्टि उसे वैभव संपन्न बनाती है। वह काम–पीड़ित भी रहता है।

मंगल की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक विद्वान, साहसी और भाग्यवान होता है।

बुध की दृष्टि का भी शुभ फल होता है। जातक हर दृष्टि से सौभाग्यशाली होता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप उसे सुंदर स्त्रियों का संसर्ग मिलता है। जातक स्वयं भी आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

शनि की दृष्टि का भी शुभ फल होता है। जातक विविध विषयों का विद्वान होता है। उसे सर्वत्र प्रशंसा मिलती है। पर उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

स्वाति के विभिन्न चरणों में शुक्र

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र जातक को कठिन परिश्रमी बनाता है। जातक अपने बाहुबल से ही धन, संपत्ति अर्जित करता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र जातक को स्त्री–प्रेमी बनाता है। वह उन पर दिल खोलकर खर्च करता है, फलतः उसका पारिवारिक जीवन दुखी रहता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र सामान्य फल देता है। जातक का जीवन साधारण बीतता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र जातक को प्रतिरक्षा विभाग से संबद्ध करता है। वह कीर्ति भी अर्जित करता है।

स्वाति स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक को पत्नी सुंदर मिलती है।

चंद्र की दृष्टि भी शुभ फल देती है। जातक की मां प्रभावशाली होती है, जिसका लाभ उसे भी मिलता है।

मंगल की दृष्टि वैवाहिक जीवन दुखद बनाती है।

बुध की दृष्टि का शुभ फल होता है।

गुरु की दृष्टि के कारण वह धनी होता है। उसे पत्नी और संतान का पूर्ण सुख मिलता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक का जीवन दुखी बीतता है, विशेषकर पत्नी और उसके संबंधियों के कारण।

स्वाति के विभिन्न चरणों में शनि

प्रथम चरणः यहाँ शनि शुभ फल देता है। जातक प्रसिद्ध और धनी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि विशेष फल नहीं देता। जातक को जीवन में अथक परिश्रम करना पड़ता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि शुभ फल नहीं देता है। जातक का जीवन अभावग्रस्त बीतता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि प्रथम चरण की भांति फल देता है। जातक में नेतृत्व की क्षमता भी होती है। शुक्र के साथ शनि की युति जातक को मंत्री–तुल्य बना सकती है।

स्वाति स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ नहीं होती। जातक को अभावग्रस्त जीवन बिताना पड़ता है।

चंद्र की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक धनी और सत्ता पक्ष से सम्मानित होता है।

बुध की दृष्टि उसे अतिशय कामुक बनाती है। उसमें वह भला–बुरा कुछ नहीं सोचता।

गुरु की दृष्टि उसे सेवाभावी बनाती है। वह सदैव दूसरों की सहायता में तत्पर रहता है।

शुक्र की दृष्टि मिश्रित फल देती है। एक ओर तो जातक रत्नों या आभूषणों के व्यवसाय में जुड़ता है, दूसरी ओर वह मद्य प्रेमी और कामुक भी होता है।

स्वाति के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरणः यहाँ राहु जातक को क्रूर और नैतिकता–हीन बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी राहु जीवन को अभावग्रस्त रखता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु जातक को रोगग्रस्त रखता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु अपेक्षाकृत शुभ होता है। जातक उदार होता है।

स्वाति के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक को ललितकला प्रेमी और दीर्घजीवी बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु शुभ फल नहीं देता। जातक स्त्री–लोलुप होता है।

तृतीय चरणः यहाँ भी केतु शुभ फल नहीं देता। जातक निम्न प्रवृत्ति के लोगों के बीच समय बिताता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु शुभ फल देता है। जातक का पारिवारिक जीवन सुखी रहता है। यों तो वह अधिकार संपन्न भी होता है तथापि धन के मामले में उसे मात्र उदर पूर्ति के लिए पर्याप्त आय ही होती है।

विशाखा

विशाखा नक्षत्र राशिपथ में 200.00 से 213.20 अंशों के मध्य स्थित है। पर्यायवाची नाम है–इंद्राग्नि। अरबी में इसे 'अजजुबनान' कहते हैं। यह नक्षत्र वृश्चिक राशि (स्वामी : मंगल) के अंतर्गत आता है। इसमें चार तारों की स्थिति मानी गयी है, जो एक तोरण की भांति दिखायी देते हैं। नक्षत्र स्वामी इंद्राग्नि तथा स्वामी ग्रह गुरु है। गण: राक्षस, योनि: व्याघ्र एवं नाड़ी: अंत्य है। चरणाक्षर हैं: ती, तू, ते, तो।

विशाखा नक्षत्र में जन्मे जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक एवं आभायुक्त होता है। वे बेहद बुद्धिमान, ऊर्जा–संपन्न, सत्यनिष्ठ एवं ईश्वरभक्त होते हैं तथापि उन्हें रुढ़िवादिता या पुरानी परंपराओं से कोई मोह नहीं होता। जीवन में किसी का अहित नहीं चाहते, और यह भी चाहते हैं कि लोग दूसरों का अहित न करें। गांधीजी की तरह वे भी सत्य को ईश्वर तथा अहिंसा को 'परम धर्म' मानते हैं। उनकी ओजस्वी वाणी श्रोताओं को प्रभावित किये बिना नहीं रहती अतः यदि ऐसे जातक राजनीति में जाएं तो वे समाज का काफी भला कर सकते हैं। वैसे वे व्यवसाय में भी सफल हो सकते हैं तथा जिम्मेदारी के किसी पद का भी बखूबी निर्वाह कर सकते हैं।

ऐसे जातकों को माता का पर्याप्त स्नेह और सुख नहीं मिल पाता। कारण हो सकते हैं या तो मां का निधन या अन्य कारणों से मां का विलगाव।

ऐसे जातक अपनी पत्नी तथा बच्चों से बेहद प्यार करते हैं तथापि

सुरापान की अधिकता तथा परस्त्रीगमन की लालसा उनके जीवन में विष घोल देती है।

विशाखा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं अत्यंत सुंदर, मृदुभाषी तथा गृहकार्य में दक्ष होती हैं। धार्मिक प्रवृत्ति की ऐसी जातिकाएं व्रत, उपवासादि पर भी विशेष ध्यान देती हैं। उनमें साहित्यिक रुचि भी होती है तथा काव्य सृजन की प्रतिभा भी। ऐसी जातिकाएं पति को परमेश्वर ही मानती हैं तथा पति के माता–पिता का भी यथोचित आदर करती हैं।

विशाखा नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं–प्रथम चरण: मंगल, द्वितीय चरण: शुक्र, तृतीय चरण: बुध एवं चतुर्थ चरण: चन्द्र।

विशाखा के विभिन्न चरणों में सूर्य

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य विवाह में विलंब करवाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य शुभ फल नहीं देता। जातक स्वभाव से क्रूर होता है। उसके झगड़ालू स्वभाव से सभी त्रस्त रहते हैं।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य ललित कलाओं के प्रति रुचि जगाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य जातक को दूसरों का विवाद सुलझा देने की क्षमता देता है।

विशाखा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जल संबंधी उद्योगों से संबद्ध करती है।

मंगल की दृष्टि उसे साहस और रण–कौशल प्रदान करती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप उसमें ललित कलाओं के प्रति गहरी रुचि होती है।

गुरु की दृष्टि उसे राजनीतिज्ञों के निकट लाती है।

शुक्र की दृष्टि उसे सफल राजनेता बनाती है। पारिवारिक जीवन भी सुखी बीतता है।

शनि की दृष्टि अशुभ होती है। जातक गलत कार्यों में लिप्त रहता है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में चंद्र

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र जातक को धार्मिक बनाता है। पशु–व्यवसाय में उसे लाभ होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र कामवासना में वृद्धि करता है। जातक स्त्रियों से संबंध बना कर उनका आर्थिक शोषण करता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र जातक को धार्मिक, आस्थावान, स्वाभिमानी और शत्रुहंता बनाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र युवावस्था तक जातक का जीवन संघर्षमय बनाता है। इसके पश्चात् जातक बाहुबल से धन, यश, कीर्ति अर्जित करता है। जातक विदेश में भी बस सकता है।

विशाखा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि कृषि कर्म में प्रेरित करती है। वह साहूकारी भी कर सकता है।

मंगल की दृष्टि स्त्रियों में प्रिय बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे विद्वान और गणितज्ञ बना देती है।

गुरु की दृष्टि पत्नी के लिए अशुभ होती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप जीवन में सभी सुख मिलते हैं। वैवाहिक जीवन भी सुखी होता है।

शनि की दृष्टि स्त्रियों से विरक्त ही नहीं बनाती, उनके प्रति घृणा का भाव भी भरती है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में मंगल

प्रथम चरण: यहाँ मंगल विशेष शुभ फल नहीं देता। आय से व्यय अधिक होता है, अतः सदैव अभाव की स्थिति रहती है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी मंगल शुभ फल नहीं देता। सूर्य–मंगल की युति जातक को मिथ्याभाषी, पाप कर्मरत बना देती है। चंद्र के साथ मंगल का योग रक्त–विकार उत्पन्न करता है।

तृतीय चरण: जातक के व्यक्तित्व का लाभ दूसरे लोग उठाते हैं और एवज में मिलती है उपेक्षा! शिक्षा में भी व्यवधान आते हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी मंगल शिक्षा में व्यवधान उपस्थित करता है।

विशाखा स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि वैवाहिक जीवन दुखी रखती है। जातक पत्नी से प्यार नहीं करता।

चंद्र की दृष्टि उसे मातृभक्त बनाती है।

बुध की दृष्टि शुभ होती है। जातक की संतान बुद्धिमान होती है।

गुरु की दृष्टि से जातक परिवार के दायित्वों को भली भांति निभाता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को प्रसिद्ध बनाती है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक सर्वगुण संपन्न लेकिन बेहद मितव्ययी होता है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में बुध

प्रथम चरणः यहाँ बुध विवाह में विलंब कराता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध कामवासना बढ़ाता है। जातक इस सुख के लिए उचित–अनुचित नहीं देखता।

तृतीय चरणः यहाँ बुध जातक को अवैध कार्यों की ओर प्रेरित करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी बुध चारित्रिक दोष बढ़ाता है। जातक मिथ्या भाषी और बुरी स्त्रियों की संगति में जीवन बिताता है।

विशाखा स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि वैवाहिक जीवन सुखी रखती है।

चंद्र की दृष्टि उसे परिश्रमी और सत्ता पक्ष का कृपा पात्र बनाती है।

मंगल की दृष्टि से भी उसे शासन से लाभ मिलता है।

गुरु की दृष्टि उसे बुद्धिमान और धनवान बनाती है

शुक्र की दृष्टि के कारण उसे जीवन के सभी सुख उपलब्ध होते हैं।

शनि की दृष्टि विपत्तिकारक सिद्ध होती है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में गुरु

प्रथम चरणः यहाँ गुरु शास्त्रज्ञ बनाता है। जातक को मुकदमों में भी उलझा रहना पड़ता है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु धार्मिक और उदार बनाता है।

तृतीय चरणः यहाँ भी गुरु जातक को धार्मिक एवं कर्म–कांडी बनाता है। उसकी आजीविका भी उसी से चलती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक का जीवन सामान्यतः सुखी रहता है। इस चरण में गुरु महत्त्वाकांक्षी बनाता है।

विशाखा स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक धनी और हर तरह से सुखी होता है।

चंद्र की दृष्टि का भी शुभ फल होता है। जातक संपन्नता के मध्य जीवन बिताता है।

मंगल की दृष्टि साहस प्रदान करती है।

बुध की दृष्टि का भी शुभ फल होता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप उसे सुंदर स्त्रियों का संसर्ग मिलता है।

शनि की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक बुद्धिमान, विविध विषयों का ज्ञाता होता है। उसका पारिवारिक जीवन सुखी नही होता।

विशाखा के विभिन्न चरणों में शुक्र

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र जातक को विद्वान बनाता है। दो पत्नियों का भी योग बताया गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र शिक्षाविद् बनाता है। जातक उच्च पद पर आसीन होता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र विवाह में विलंब उत्पन्न करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र जातक को साहित्यकार और यायावरी प्रवृत्ति का बनाता है। वह यशस्वी लेखक भी होता है।

विशाखा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

विशाखा स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि संपन्न बनाती है। जातक की पत्नी सुंदर होती है।

चंद्र की दृष्टि उसे मृदुभाषी बनाती है। काम वासना भी बढ़ाती है।

मंगल की दृष्टि स्वभाव में क्रूर बना देती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

गुरु की दृष्टि हर प्रकार का सुख उपलब्ध कराती है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक का स्वभाव क्रूर होता है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में शनि

प्रथम चरणः यहाँ शनि मिश्रित फल देता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि जीवन सुखी नहीं रखता। पग–पग पर बाधाएं मार्ग रोकती हैं।

तृतीय चरणः यहाँ शनि शुभ फल देता है। अपने सद्गुणों के कारण वह प्रभावशाली लोगों की कृपा का पात्र बनता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि सामान्य फल देता है।

विशाखा स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल नहीं देती। जातक अभावपूर्ण जीवन जीता है।

चंद्र की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक राजनीति के क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करता है।

मंगल की दृष्टि का फल ठीक नहीं होता। जातक कार्यों के प्रति दायित्वहीन होता है।

बुध की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक विद्वान और धनी होता है।

गुरु की दृष्टि का भी शुभ फल होता है। जातक सुखी जीवन बिताता है।

शुक्र की दृष्टि सामान्य फल देती है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरणः यहाँ राहु मिश्रित फल देता है। जातक उदार होता है। राहु उसे अनैतिकता की ओर धकेलता है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु जातक को झगड़ालू प्रवृत्ति का बना देता है। यहाँ राहु पत्नी के लिए भी अशुभ माना गया है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु शुभ फल देता है। जातक धनी और यशस्वी होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु रोगकारक सिद्ध होता है।

विशाखा के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक में आत्म–विश्वास को न्यून करता है। वह बेहद जल्दी घबरा जाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु जातक को अस्थिर बुद्धि बनाता है। अनैतिक कार्यों में उसकी रुचि रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ केतु जातक को तुनुक–मिजाज बना देता है। वह अपने अभिभावकों का ही विरोधी बन जाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक स्वभाव से घमण्डी होता है।

अनुराधा

अनुराधा की राशिपथ में 213.20 अंश से 226.40 अंश तक स्थिति मानी गयी है। अनुराधा का अन्य नाम मैत्रम् भी है। अरब मंजिल में उसे अल-उकलील अर्थात् ताज नाम दिया गया है। अनुराधा का एक अर्थ सफलता भी बताया गया है। अनुराधा की एक व्याख्या इस तरह भी की गयी है-अनु अर्थात् लघु एवं राधा अर्थात् पूजा-उपासना। एक ऐसी लघु वस्तु या पदार्थ जिसको पूजा में उपयोग किया जाता है। अनु का एक अर्थ अनुसरण भी है। राधा को विशाखा का पर्याय माना गया है। अनुराधा नक्षत्र विशाखा नक्षत्र के बाद आता है। इसीलिए विशाखा का अनुसरण करने वाला नक्षत्र-अनुराधा। वैदिक साहित्य में इस नक्षत्र को प्रजापति का चरण कहा गया है।

अनुराधा नक्षत्र की रचना तीन तारों को मिलाकर की गयी है।

अनुराधा का देवता मित्र माना गया है, बारह आदित्यों में से एक।

गणः देव, योनिः मृग एवं नाड़ीः मध्य है।

इस नक्षत्र का स्वामी ग्रह शनि है। अनुराधा के प्रथम चरण के स्वामी सूर्य द्वितीया चरण के बुध, तृतीय चरण के शुक्र व चतुर्थ पद के स्वामी मंगल है। चरणाक्षर हैं: न, नी, नू, ने।

अनुराधा नक्षत्र में जन्मे जातक

'जातक पारिजात' के अनुसार अनुराधा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अत्यंत मिठास भरी वाणी से युक्त, सुखी, पूज्य, यशस्वी तथा उच्च पदस्थ होता है। श्लोक है-

मैत्र सुप्रियवाक् धनी सुखरत् पूज्ये यशस्वी विभुः।

सामान्यतः अनुराधा नक्षत्र में जन्मे जातकों का मुख सुंदर, नेत्र आभावान एवं व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

ऐसे जातक ईश्वर पर अगाध आस्था रखने वाले होते हैं। यही आस्था उन्हें घोर से घोर विपत्तियों में भी निराशावादी नहीं बनने देती। ऐसे जातक के जीवन में बाधाएं भी बहुत आती हैं। उनसे वह अशांत–चित्त भी रहता है लेकिन निरंतर असफलताएं भी उसे अपने लक्ष्य से नहीं डिगा पातीं। वह कठोर परिश्रमी होता है। यह सब संभवतः शनि के प्रभाव के कारण होता है। अनुराधा नक्षत्र का स्वामी ग्रह शनि को ही माना गया है।

अनुराधा नक्षत्र में जातक नवयुवावस्था में ही कर्म क्षेत्र में उतर जाते हैं। अर्थात् 17 से 18 वर्ष की अवस्था में वे आजीविका कमाने लगते हैं। इसमें उन्हें कई अवरोधों का भी सामना करना पड़ता है। लेकिन चालीस व्रर्ष के बाद उनका जीवन सुखपूर्वक बीतने लगता है। ऐसे जातक व्यवसाय के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। यदि अनुराधा नक्षत्र में चंद्रमा के साथ मंगल की युति हो तो जातक चिकित्सक भी बन सकते हैं अन्यथा औषध–व्यवसाय से संबंधित होते हैं।

पारिवारिक जीवन में भी दुर्भाग्य उनका पीछा नहीं छोड़ता। पिता के साथ–साथ माता से भी उन्हें पर्याप्त स्नेह नहीं मिल पाता। हाँ, उसका वैवाहिक जीवन सुयोग्य एवं दक्ष पत्नी के कारण सुखी रहता है। ऐसे जातक अपनी संतानों को उन सब कष्टों एवं बाधाओं से बचाना चाहते हैं; जिन्हें उन्होंने अपने जीवन में भुगता है। वह हर कीमत पर अपने बच्चों के लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा पर ध्यान देते हैं ताकि वे सुयोग्य बन सकें और ऐसे जातकों की संतानें भी उन्हें निराश नहीं करतीं। पिता के मार्गदर्शन के फलस्वरूप वे जीवन में तरक्की करते हैं; पिता की हैसियत से भी आगे निकल जाते हैं।

सामान्यतः ऐसे जातकों का स्वास्थ्य ठीक ही रहता है। तथापि उन्हें अस्थमा, दंत पीड़ा, कफ, जुकाम, कब्ज आदि की शिकायत शीघ्र हो सकती है, अतः इन स्थितियों से बचना चाहिए, जिनसे उपरोक्त विकारों के पैदा होने की आशंका प्रबल हो।

अनुराधा नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं के चेहरे और व्यवहार में एक निर्दोष भाव झलकता है। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है।

ऐसी जातिकाएं विनम्र, बड़ों के प्रति आदर मान से युक्त, शुद्ध हृदय, अपने व्यवहार से सबको प्रसन्न करने वाली तथा हठी स्वभाव से युक्त होती हैं। उनके मन में निस्वार्थ भावना होती है। वे अपने किसी भी कार्य या सेवा

का प्रतिदान नहीं चाहतीं फलतः वे सबकी प्रिय पात्र भी बन जाती हैं। अपने इस गुण के कारण वे राजनीति या सामाजिक क्षेत्र में भी सफल हो सकती हैं।

ऐसी जातिकाओं की नृत्य–संगीत एवं ललित कलाओं में भी रुचि होती है। यदि वे इन विषयों में अध्ययन करें तो वे उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त कर सकती हैं। अपनी कला में पारंगत होने के कारण वे पर्याप्त ख्याति प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं।

ऐसे सद्गुणों से युक्त जातिकाओं का वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन सुखी तो होगा ही। वे पति के प्रति पूर्ण निष्ठा, बच्चों के लालन–पालन पर पर्याप्त ध्यान देने वाली अर्थात् आदर्श मां होती हैं। सास–ससुर के प्रति भी उनके मन में अपार आदर होता है।

जहाँ तक स्वास्थ्य का संबंध है, आम तौर पर ऐसी जातिकाएं स्वस्थ ही रहती हैं तथापि अपने मासिक धर्म में किसी गड़बड़ी के प्रति उन्हें सचेत रहना चाहिए।

अनुराधा नक्षत्र में सूर्य की स्थिति के फल

अनुराधा के प्रथम एवं अंतिम चरण में सूर्य की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं जबकि द्वितीय एवं तृतीय चरण में मिश्रित फल। यथा :

प्रथम चरणः जातक साहसी, शत्रुहंता और अपने जन्म स्थल से दूर बसने वाला होता है। उसमें स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति होती है।

द्वितीय चरणः जातक धनी एवं विद्वान होता है। तथापि उसकी मति बेहद अस्थिर होती है और वह कोई भी निर्णय शीघ्र नहीं ले पाता।

तृतीय चरणः ऐसा जातक अपनी हैसियत से अधिक का प्रदर्शन करता है। फलतः उसमें एक दंभ भी आ जाता है तथा वह अपने से निम्न हैसियत वालों को हेय दृष्टि से देखता है।

चतुर्थ चरणः ऐसा जातक अपने सारे कार्यों का निष्ठा से संपादन करता है। उसमें निर्णय करने की भी बुद्धि होती है। उसमें विभिन्न कलाओं में निष्णात होने की लालसा भी रहती है। वह सुंदर स्त्रियों की संगति भी पंसद करता है।

अनुराधा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक जल से संबंधित कार्यों से धनोपार्जन करता है। उसे अनेक स्त्रियों के भरण–पोषण का भी भार उठाना पड़ता है।

मंगल की दृष्टि जातक को साहसी शूरवीर बनाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक की ललित कलाओं में रुचि होती है। वह ललित कलाओं में अपनी दक्षता के कारण यश एवं अर्थ भी प्राप्त करता है।

गुरु की दृष्टि जातक को राजनीति के क्षेत्र के लोगों के निकट ले जा सकती है तथा वह उनसे पर्याप्त लाभ भी उठा सकता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो वैवाहिक जीवन सफल और सुखी रहता है। जातक राजनीति के क्षेत्र में भी अपना स्थान बना सकता है।

शनि की दृष्टि जातक में धूर्तता को जन्म देती है। तथाकथित पाप कर्मों से उसे कोई परहेज नहीं होता। फलतः कभी न कभी शासकीय दंड मिलने की भी संभावना बनी रहती है।

अनुराधा नक्षत्र में चंद्र की स्थिति के फल

अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में स्थित चंद्र के ही अच्छे फल मिलते हैं। शेष चरणों में चंद्र की स्थिति कोई शुभ फल नहीं देती। यथा .

प्रथम चरण: जातक प्रसिद्ध, मान–सम्मान से युक्त तथा अधिकार संपन्न होता है। वाणी में माधुर्य उसका विशेष गुण बताया गया है। तथापि ऐसा जातक कोई भी कार्य बड़ी धीमी गति से आहिस्ता–आहिस्ता करता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र की स्थिति कोई विशेष फल नहीं देती। हाँ, यह कहा गया है कि यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में शुक्र स्थित हो तो व्यक्ति उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र सामान्य फल देता है।

चतुर्थ चरण: विवाह की दृष्टि से चंद्र की यह स्थिति अशुभ बतायी गयी है। एक तरह से यह विवाह प्रतिबंधक योग की स्थिति बनाता है। यदि अन्य ग्रहों के प्रभाव के कारण विवाह हो भी गया तो जातक उसे निभा नहीं पाता। ऐसा जातक हठी, रुग्ण और भटकाव में ही विश्राम पाता है।

अनुराधा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि का एक फल यह बताया गया है कि जातक कहीं गोद लिया जा सकता है। फलतः उसके जन्मदाता माता–पिता के अलावा पालनकर्ता माता–पिता भी होते हैं।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक सत्तासीन लोगों की कृपा का पात्र बनता है।

बुध की दृष्टि जातक को कुटिल प्रवृत्ति का बना सकती है। सभी उसे हेय दृष्टि से देखते हैं।

गुरु की दृष्टि भी कोई लाभ नहीं पहुँचाती। जातक रुग्ण जीवन बिताता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को अभावग्रस्त जीवन बिताना पड़ सकता है।

शनि की दृष्टि के शुभ फल कहे गये हैं। जातक राजनीति के क्षेत्र में बेहद सफलता प्राप्त करता है। उसका मान–सम्मान, पद मंत्रियों जैसा होता है। यदि अन्य ग्रहों के योग अच्छे हों तो जातक स्वयं भी मंत्री बन सकता है।

अनुराधा स्थित मंगल के फल

अनुराधा नक्षत्र में मंगल की स्थिति केवल चतुर्थ चरण में ही लाभदायक सिद्ध होती है। शेष चरणों में सामान्य फल मिलते हैं।

प्रथम चरण: इस चरण में मंगल विशेष शुभ फल नहीं देता।

यदि लग्नस्थ अश्विनी में चंद्र के साथ मंगल हो तो जातिका का क्रूर हृदय तथा अवैध कार्यों में संलिप्त होना बताया गया है। यदि किसी पुरुष की कुंडली में ऐसा योग हो तो कहा जाता है कि उससे जातक हठी, मलिन, क्रूर हृदय एवं विघ्न–संतोषी प्रवृत्ति का होगा।

द्वितीय चरण: यहाँ भी मंगल के कोई उल्लेखनीय फल नहीं मिलते।

तृतीय चरण: यहाँ मंगल जातक में कामातिरेक की प्रवृत्ति पैदा करता है। अपने आमोद–प्रमोद के लिए ही वह धनी मित्रों की संगति करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल जातक को कृषि संपत्ति का स्वामी बनाता है। इससे उसे पर्याप्त आर्थिक आय भी होती है।

अनुराधा स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को जन्म स्थल से दूर ले जाती है। पत्नी से भी उसकी अनबन रहती है।

चंद्र की दृष्टि जातक को पित्तृ विरोधी बनाती है। वह मां को अधिक चाहता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक की संतानें सुयोग्य, सुशिक्षित होती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप जातक न केवल अपने परिवार के प्रति

घोर आसक्त रहता है, वह अपने संबंधियों की जिम्मेदारी निभाने में आगे रहता है।

शुक्र की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक यशस्वी और शासन में उच्च पद पर पहुँचने की योग्यता रखता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद कृपण वृत्ति का होता है।

अनुराधा स्थित बुध के फल

अनुराधा स्थित बुध के प्रायः शुभ फल दर्शाये गये हैं। जातक विनोदी वृत्ति का, धनी और उदार भी होता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध की स्थिति जातक के जीवन को बाधाओं से भर देती है तथापि वह अपनी विनोदी वृत्ति एवं कर्मठता के फलस्वरूप उन्हें पार कर जाता है। जातक संपत्तिशाली भी होता है लेकिन उसके उदारतापूर्ण और लापरवाह स्वभाव के कारण उसकी संपत्ति आसानी से हड़प ली जाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ बुध जातक को मध्यम संपत्ति प्रदान करता है। उसका जीवन भी सुखी होता है। वैवाहिक जीवन में सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। नहीं तो सारा जीवन कलहमय बीतता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध सामान्य फल देता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ जातक हृष्ट-पुष्ट तथा सद्‌गुण संपन्न होता है। उसका वैवाहिक जीवन भी सुखी रहता है।

अनुराधा स्थित बुध पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक किसी औद्योगिक उद्यम का प्रमुख हो सकता है। उसका वैवाहिक जीवन भी सुखी रहता है।

चंद्र की दृष्टि उसे कठोर परिश्रमी एवं धनी बनाती है। ऐसे लोग सत्ता पक्ष के विश्वासपात्र भी होते हैं।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप जातक/जातिका के इंजीनियरिंग क्षेत्र में सफल होने की संभावना बढती है। उन्हें सत्ता पक्ष से भी लाभ होता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान, धनी और यशस्वी होता है।

शुक्र की दृष्टि से जातक जीवन के हर क्षेत्र में सुखी और संपन्न होता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक को जीवन में निरंतर अवरोधों का सामना करना पड़ता है। जीवन भी विपन्नावस्था में बीतता है।

अनुराधा नक्षत्र में गुरु के फल

अनुराधा नक्षत्र में गुरु की स्थिति सामान्यतः शुभ फल ही देती है। जातक सुखी, साहसी अधिकार संपन्न होता है।

प्रथम चरणः यहाँ गुरु के सामान्य फल मिलते हैं। यदि लग्नस्थ अनुराधा नक्षत्र के उस चरण में सूर्य भी हो तो यह जातक की आयु की दृष्टि से अशुभ योग माना गया है।

द्वितीय चरणः जातक संपन्न होता है। सेना अथवा पुलिस सेवा में जाने पर वह उच्च पद प्राप्त कर सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु के द्वितीय चरण जैसे फल मिलते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु जातक को साहसी बनाता है।

अनुराधा स्थिति गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि से जातक धनी, स्वस्थ एवं सुखी जीवन वाला होता है।

चंद्र की दृष्टि उसे जन्म से ही वैभव संपन्न बनाती है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप जातक विद्वान एवं साहसी होता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक संपन्न और सद्गुणों से युक्त होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को धीर--गंभीर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला बनाती है। उसे सुंदर स्त्रियों का साथ मिलता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता तथा विद्वान होता है। वैवाहिक जीवन के लिए शनि की दृष्टि अशुभ सिद्ध होती है। जातक सुखी नहीं रह पाता।

अनुराधा स्थित शुक्र के फल

अनुराधा नक्षत्र में शुक्र की स्थिति जातक में काम भावना बढ़ाने वाली मानी गयी है। आर्थिक दृष्टि से भी यह कोई शुभ स्थिति नहीं है।

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र की स्थिति के कारण जातक पर सदैव ही काम ज्वर चढ़ा रहता है। ऐसी स्थिति में वह ऊंच–नीच का भी ख्याल नहीं करता। विवाह उसके लिए मात्र सैक्स–क्रीड़ा ही होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी उपरोक्त स्थिति ही बनती है। जातक कामातिरेक के कारण गुप्त रोगों का भी शिकार हो सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र के कारण जातक का जीवन मध्यम गति से चलता है। जातिकाओं के लिए गर्भाशय के रोगों से ग्रस्त होने की आशंका भी बतलायी जाती है।

चतुर्थ चरण: ऐसे जातक अनिंद्रा के शिकार हो सकते हैं। उनकी रासायनिक विज्ञान में भी रुचि होती है।

अनुराधा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो पत्नी सुंदर मिलती है। जातक भूमिपति एवं भवनपति होता है।

चंद्र की दृष्टि जहाँ जातक को परिवार में श्रेष्ठ बनाती है वही उसमें तीव्र कामभावना का संचार भी करती है।

मंगल की दृष्टि उसे क्रूरमना और अवैध कार्यों में लिप्त बनाती है।

बुध की दृष्टि जातक का पारिवारिक जीबन सुखी रहता है। संतान भी सुशिक्षित होती है।

गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक का जीवन सुखी रहता है। अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चों के सुख के अलावा वाहन एवं गृह सुख आदि भी प्राप्त होता है।

शनि की दृष्टि के अशुभ परिणाम होते है। जातक में ईमानदारी न्यून होती है।

अनुराधा नक्षत्र में शनि के फल

अनुराधा नक्षत्र में शनि की स्थिति को जातक के स्वभाव को क्रूर बनाने वाला कहा गया है। इस नक्षत्र में शनि की स्थिति अशुभ ही प्रतीत होती है।

प्रथम चरण: जातक में साहसिक वृत्ति होती है। लेकिन इसके कारण दूसरे परेशानी में पड़ सकते हैं। इस चरण में शनि के कारण जातक का क्रूर हृदय होना बताया गया है जो हत्या तक कर सकता है। चोरी जैसे कामों से भी उसे कोई परहेज नहीं होता।

द्वितीय चरण: जातक अपनी मूर्खता के कारण बिना बात लोगों से कलह कर सकता है। उसमें दूसरों की संपत्ति को भी हड़पने की प्रवृत्ति होती है।

तृतीय चरण: जातक का क्रूर हृदय होना कहा गया है। उसका प्रारंभिक जीवन कठिनाई–पूर्ण होता है। 52 वर्ष की अवस्था के बाद जीवन में सुख–समृद्धि का प्रवेश होता है।

चतुर्थ चरण: आय से अधिक व्यय की स्थिति निरंतर बनी रहने के कारण जातक का जीवन दुखी रहता है। जातक को शस्त्र एवं अग्नि से भी भय रहता है। वह काम भावना से भी शून्य रहता है।

अनुराधा स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक का जीवन अभावपूर्ण रहता है। उसके अपने पिता से अच्छे संबंध नहीं रहते।

चंद्र की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। वह किसी औद्योगिक उपक्रम का प्रमुख भी बन सकता है।

मंगल की दृष्टि जातक को कलह प्रिय बना देती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता होता है अर्थात् शिक्षा एवं ज्ञान लाभ की दृष्टि से शनि पर कुछ की दृष्टि शुभ होती है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है।

शुक्र की दृष्टि के सामान्य फल मिलते हैं।

अनुराधा नक्षत्र के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरणः यहाँ राहु के कारण जातक को अपनी शिक्षा व हैसियत से निम्न कार्य करना पड़ता है। परिवार में भी समस्याएं उत्पन्न होती रहती है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु जातक में स्वार्थ की भावना बढ़ाता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु कुछ अच्छे फल देता है। जातक का जीवन सुखपूर्वक गुजर जाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु कोई विशेष फल नहीं देता।

अनुराधा नक्षत्र के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक को धार्मिक वृत्ति का बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक मुकद्दमे बाजी में फंसा रहता है। शत्रु उसके लिए कोई न कोई परेशानी पैदा ही करते रहते हैं। वह स्वयं भी सच्चरित्र नहीं होता। निम्न कोटि की स्त्रियों के संबंध रखने में उसे आनंद मिलता है।

तृतीय चरणः यहाँ केतु हो तो जातक तीस वर्ष की अवस्था के बाद जीवन में सुख चैन पाता है। यदि केतु के साथ शनि हो तो जातक में इंजीनियर बन सकने की प्रतिभा होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु हो तो जातक को विदेश में प्रवास करना पड सकता है। पैतृक संपत्ति के भी बिक जाने का फल कहा गया है।

ज्येष्ठा

ज्येष्ठा नक्षत्र राशि पथ में 226.40 से 240.00 अंश के मध्य स्थित है। इसमें एक सीध में स्थित तीन तारे हैं और आकृति कुंडल की भांति है। अरब मंजिल में इसे 'अल कल्ब' कहा गया है। ज्येष्ठा का सामान्य अर्थ 'बड़े' से होता है। इसका आधार यह कहा गया है कि एक समय बसंत संपात बिंदु इस नक्षत्र में होने के कारण यह नक्षत्र सबसे ज्येष्ठ या बड़ा माना गया। लेकिन कुछ ज्योतिष शास्त्री इस अर्थ को नहीं मानते।

ज्येष्ठा के अन्य पर्यायवाची नाम हैं–कुलिश तारा, इरतमाव, सुर स्वामी वासवः। सुर स्वामी अर्थात् देवताओं का राजा इंद्र। इंद्र को ही इस नक्षत्र का देवता माना गया है। ग्रहों में बुध को इसका अधिपति माना गया है।

ज्येष्ठा के संबंध में अन्य विवरण इस प्रकार है :

गणः राक्षस, योनिः मृग और नाड़ीः आदि।

चरणाक्षर हैं–नो, य, यी, यू।

यह नक्षत्र वृश्चिक राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी मंगल है।

नक्षत्र के स्वामी बुध के साथ मंगल के तो सम संबंध हैं तथापि बुध उसे शत्रु दृष्टि से देखता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक के बारे में 'जातक पारिजात' में कहा गया है–

ज्येष्ठायामतिकोवान परवधूसक्तो विभु धार्मिकः

यदि जन्म के समय चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में हो तो मनुष्य अत्यंत क्रोध करने वाला, परस्त्री में आसक्ति रखने वाला, ऐश्वर्यशाली तथा धार्मिक होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक हृष्ट–पुष्ट, ऊर्जा संपन्न तथा आकर्षक व्यक्तित्व के होते हैं। निर्मल हृदय, धीर–गंभीर स्वभाव उनकी विशेषता होती है।

ऐसे व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज के अनुसार ही कार्य करना पसंद करते हैं। चूंकि वे दूसरों की सलाह मानतें नहीं, अतः उन्हें हठी कहा जाने लगता है। ऐसे व्यक्तियों का स्वभाव कभी–कभी उग्र भी हो जाता है। वे सिद्धांत–प्रिय भी होते हैं और उसी के अनुसार तमाम विरोधों या परामर्शों के बावजूद वही निर्णय करते हैं, जो उन्हें अपने सिद्धांत के अनुसार ठीक लगता है। फलतः उन्हें दंभी भी समझ लिया जाता है। जबकि वास्तव में वे ऐसे होते नहीं। हाँ, उनमें प्रतिशोध की भावना कुछ अधिक होती है, तब वे आगा–पीछा नहीं देखते।

ऐसे जातकों को जीवन में बहुत शीघ्र आजीविका के क्षेत्र में उतर जाना पड़ता है। इसके लिए वे कहीं दूर–दराज के क्षेत्रों में भी जाने से नही हिचकते। वे अपना कार्य निष्ठा से करते हैं, फलतः उनकी तरक्की भी होती है। लेकिन अठारह वर्ष से छब्बीस वर्ष तक उनके जीवन में पर्याप्त संघर्ष रहता है जो प्रौढ़ावस्था तक चलता ही रहता है।

ऐसे जातकों की युवावस्था भले ही कठिन संघर्ष में बीतती हो तथापि वह संघर्ष उन्हें भावी जीवन के लिए बहुत कुछ सिखा जाता है।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन उनके अपने स्वभाव के कारण कुछ दुखी ही रहता है। वे अपने आगे किसी को कुछ समझते नहीं, फलतः परिवार वाले भी कुछ अलग–थलग रहने लगते हैं।

ऐसे जातकों की पत्नी उनके लिए एक अंकुश का काम करती है। ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातकों को मादक पदार्थों से बचने की चेतावनी भी दी गयी है, क्योंकि फिर वे अपनी इस प्रवृत्ति को सीमा में नहीं रख पाते। अत्यधिक मादक पदार्थों का सेवन उनके स्वास्थ्य पर तो बुरा असर डालता ही है, साथ ही उनका वैवाहिक जीवन भी दुष्प्रभावित करता है। इस स्थिति में पत्नी का अंकुश उनके लिए हितकर ही होता है। सामान्यतः उनका वैवाहिक जीवन सुखी ही बीतता है तथापि अन्य कारणों से समय–समय पर अलग–अलग भी रहना पड़ सकता है।

ऐसे जातकों को बार–बार बुखार, अतिसार एवं अस्थमा की शिकायतें हो सकती हैं; अतः उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहने की भी सलाह दी गयी है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सामान्यतः हृष्ट पुष्ट, लंबी बाहों एवं धुंधराले केश वाली होती हैं।

ऐसी जातिकाएं बुद्धिमान, विचारवान और कुशल संगठक होती हैं। उनमें गहरी अनुभूति होती है, फलतः वे गहनता से स्नेह भी करती हैं। अपनी छवि बनाये रखने के लिए वे सदैव सतर्क रहती हैं। वे अच्छी खासी शिक्षा पा सकती हैं। लेकिन वे अपनी शिक्षा का उपयोग अपने घर को चलाने में ज्यादा करती हैं। यह विडम्बना ही है कि उन्हें अपने ससुराल पक्ष के लोगों से त्रास ही अधिक मिलता है। वे उसे नीचा दिखाने के लिए तरह–तरह की कहानियां भी गढ़ सकते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं को यह सलाह दी गयी है कि वे अपने संबंधियों एवं पड़ोसियों से वार्तालाप करते समय अत्यंत सावधानी बरतें। ऐसे लोग द्वेषवश उनके जीवन में विष भी घोल सकते हैं।

पारिवारिक कलह के कारण वे अपने बच्चों पर भी ध्यान नहीं दे पातीं, जिसका बच्चों के मन पर विपरीत असर भी पड़ता है।

ऐसी जातिकाओं को अपनी गर्भाशय संबंधी छोटी से छोटी तकलीफ की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

ज्येष्ठा नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं: प्रथम चरणः गुरु, द्वितीय चरणः शनि, तृतीय चरणः शनि, चतुर्थ चरणः गुरु।

ज्येष्ठा नक्षत्र में सूर्य के फल

ज्येष्ठा नक्षत्र में सूर्य की स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। और यदि इस नक्षत्र में स्थित सूर्य पाप ग्रहों से प्रभावित है तो वह पिता के लिए अशुभ बन जाता है।

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य स्थित हो तो जातक को विष–बाधा या अग्नि अथवा शस्त्र से आहत होने की आशंका बनी रहती है।

द्वितीय चरणः जातक अधीर स्वभाव का होता है। वह दूसरों के प्रति सहानुभूति से शून्य भी होता है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो और सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो इसे जातक के पिता के लिए घातक माना गया है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी सूर्य यदि अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो पिता के लिए घातक होता है।

ज्येष्ठा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

मंगल की दृष्टि जातक को क्रूर हृदय बनाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व सुंदर होता है। जीवन सुखी होता है। चालीस वर्ष की आयु के बाद अर्थाभाव की स्थिति आ सकती है।

गुरु की दृष्टि जातक को परोपकारी वृत्ति का बनाती है। वह राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त कर सकता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक शासन में उच्च पद पाता है।

शनि की दृष्टि हो तो भी जातक शासन में उच्च पद पाता है। लेकिन पिता के प्रति उसके मन में आदर भाव नहीं रहता।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित चंद्र के फल

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म के समय चंद्र हो तो इसी नक्षत्र को जातक का नक्षत्र माना जाता है। देवज्ञ वैद्यनाथ ने अपने 'जातक परिजात' में इस नक्षत्र में जन्मे जातकों की जो विशेषताएं बतलायी हैं, उनका उल्लेख हमने प्रारंभ में किया है। अब यहाँ ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित चंद्र के फल विस्तार से :

प्रथम चरण: इस चरण में जन्म हो तो जातक के जन्म के एक वर्ष की अवधि तक स्वास्थ्य चिंताजनक रहता है।

द्वितीय चरण: इस चरण में जन्म हो तो जातक क्रोधी स्वभाव का और काम भावना से सदा पीड़ित रहता है।

तृतीय चरण: इस चरण में चंद्र के कारण जातक की अपनी अभिभावकों से नहीं बनती। यदि चंद्र के साथ शनि की युति हो तो जातक विज्ञान एवं शास्त्रों में पारंगत होता है।

चतुर्थ चरण: इस चरण में चंद्र हो तो जातक में विज्ञान के प्रति रुझान होता है। जातक चिकित्सा के क्षेत्र में जा सकता है।

ज्येष्ठा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को सत्ता के निकट रखती है। यों वह क्रूर हृदय होता है तथापि सहायता की याचना करने वालों को वह निराश नहीं करता।

मंगल की दृष्टि पराधीन जीवन बिताने की आशंका दर्शाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक सभी सुविधाओं से युक्त और यशस्वी होता है।

गुरु की दृष्टि भी शुभ फल देती है। जातक विद्वान होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को धनी एवं स्त्रियों में प्रिय बनाती है।

शनि की दृष्टि के अशुभ फल कहे गये है। जातक रूग्ण एवं अनुदार होता है।

ज्येष्ठा के विभिन्न चरणों में मंगल

प्रथम चरण: विष बाधा, शस्त्र से चोट आदि का भय बना रहता है। जातक को अग्नि के पास सावधानी रखनी चाहिए।

द्वितीय चरण: कृषि के प्रति रुझान जातक को उससे जुड़े व्यवसायों में ले जाती है। सत्ता पक्ष से अनायास लाभ मिलने की मी संभावना भी होती है।

तृतीय चरण: जातक अभावग्रस्त नहीं रहता। यदि इसी चरण में मंगल के साथ बुध, शुक्र एवं शनि हो तो जातक के 'कुबेर' होने की भविष्यवाणी की गयी है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अहितकर माना गया है। विशेषकर यदि मंगल के साथ राहु हो और उसके तीसरे स्थान पर शनि हो। पत्नी के जीवन के लिए इस स्थिति को बेहद अशुभ कहा गया है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को विद्वान बनाती है।

चंद्र की दृष्टि उसमें परायी स्त्रियों के प्रति आसक्ति बढ़ाती है। जातक की मनोवृत्ति भी क्रूर होती है।

बुध की दृष्टि भी जातक को परायी स्त्रियों के पीछे भागने वाला बनाती है। जातक प्रदर्शन-प्रिय एवं दूसरे के धन पर नजर रखने वाला भी होता है।

गुरु की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक धनी और अपने परिवार में श्रेष्ठ होता है तथापि उसका उग्र स्वभाव लोगों को परेशान किये रहता है।

शुक्र की दृष्टि उसे खान-पान का शौकीन एवं कामासक्त बनाती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक अपने ही परिवार का विरोधी बन जाता है। उसे मां का भी स्नेह नहीं मिलता।

ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध के फल

यद्यपि ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिपति स्वयं बुध को माना गया है तथापि इस नक्षत्र में उसके विशेष फल नहीं मिलते। हाँ, यदि ऐसे बुध पर अन्य ग्रहों की दृष्टि हो तो बुध शुभ प्रभाव कर सकता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध जातक को संगीत एवं ललित कलाओं में दक्ष बनाता है। अपनी कला से उसे अर्थ एवं यश दोनों की प्राप्ति होती है।

द्वितीय चरण: यहाँ बुध के सामान्य फल मिलते हैं। यदि उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो वह लाभदायक होता है। सूर्य के साथ युति जातक को मृदुभाषी बनाती है, जबकि यदि मंगल साथ हो तो जातक अपनी पत्नी के व्यवहार से दुखी रहता है। शुक्र के साथ युति हो तो पत्नी अच्छी मिलती है। जातक को स्वर्ण से संबंधित व्यवसाय या कार्यों में लाभ हो सकता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध के कारण जातक का स्वभाव क्रूर होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध नेत्र विकार की आशंका बलवती करता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को सत्यवादी, सर्वप्रिय बनाती है। उसे सत्ता पक्ष से भी लाभ होता है।

चंद्र की दृष्टि जातक को ललित कलाओं के क्षेत्र में ले जाती है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक राजनीति के क्षेत्र में सफल होता है। वह दूसरों से लाभ उठाने की कलाओं में माहिर होता है।

गुरु की दृष्टि उसे परिवार का पूर्ण सुख प्रदान करती है। जातक धनी होता है। उसकी संतानें भी अच्छी होती हैं।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धनी एवं यशस्वी होता है। अपने आचरण के कारण वह सर्वप्रिय बन जाता है।

शनि की दृष्टि जातक को तार्किक बनाती है। समाज--सेवा एवं परोपकार में उसकी गहरी रुचि होती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु के फल

ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु की अन्य ग्रहों से युति हो, तभी अच्छे फल मिलते हैं।

प्रथम चरण: यहाँ गुरु के सामान्य फल मिलते हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु के कारण जातक विद्वान एवं शास्त्रों में पारंगत होता है। यदि गुरु के साथ मंगल भी हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु के कारण जातक चिंता मुक्त होता है। यदि इस चरण में गुरु की सूर्य, चंद्र, मंगल से युति हो तो जातक धनी, कलाविद तथा स्त्रियों में प्रिय होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल–शनि से गुरु की युति जातक को मलिन हृदय वाला, अनुदार बनाती है। तथापि उसे सत्ता पक्ष से लाभ मिलता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि उसे ईश्वर भक्त, ईमानदार बनाती है।

चंद्र की दृष्टि के कारण उसे यश एवं अर्थ की प्राप्ति होती है।

मंगल की दृष्टि के कारण उसे सत्ता पक्ष से लाभ मिलता है। जातक औरों का मान–मर्दन करने वाला होता हे।

बुध की दृष्टि हो तो जातक आचार–विचार शून्य, दूसरों के विवादों में अकारण रुचि लेने वाला होता है।

शुक्र की दृष्टि के कारण वह महिलाओं से संबंधित कार्य–व्यापार में जुटता है।

शनि की दृष्टि अशुभ मानी गयी है, जातक परिवार के सुख से वंचित एवं अभावग्रस्त रहता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित शुक्र के फल

ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्र हो तो जातक कामप्रिय होता है।

प्रथम चरण: यहाँ मंगल के साथ शुक्र की युति जातक को गणितज्ञ, समाज में समादृत बनाती है। जातक की ज्योतिष शास्त्र में अच्छी पैठ होती है। लेकिन यह युति जुआरी वृत्ति भी पैदा करती है।

द्वितीय चरण: जातक कामातिरेक का शिकार होता है। रासायनिक उत्पादनों अथवा स्त्रियों के प्रसाधनादि से संबंधित कार्यों में वह सफल होता है।

तृतीय चरण: जातक में इंजीनियर एवं जातिका में चिकित्सक बनने की क्षमता होती है।

चतुर्थ चरण: जीवन के उत्तरार्द्ध में जातक सुखी–संपन्न होता है। पूर्वार्द्ध में तो वह स्वयं अपनी संपत्ति का नाश करता है। उसका पारिवारिक जीवन भी सुखी नहीं होता।

ज्येष्ठा स्थित शुक्र पर ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त करता है।

चंद्र की दृष्टि से उसे समाज में सम्मान और उच्चपद प्राप्त होता है। चंद्र की दृष्टि कामभावना भी बढ़ाती है।

मंगल की दृष्टि अशुभ फल देती है। जातक अभावग्रस्त रहता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक के जीवन में अनेक बाधाओं के संकेत मिलते हैं।

गुरु की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक सुखी, समृद्ध होता है। उसे अच्छी पत्नी एवं अच्छे बच्चों का भी पूर्ण सुख मिलता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक उदारमना, शांतिप्रिय एवं समाज में समादृत होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में शनि के फल

ज्येष्ठा नक्षत्र में शनि की स्थिति के अशुभ फल ही मिलते हैं।

प्रथम चरण: यहाँ शनि के कारण जातक कलहप्रिय, गर्म मिजाज तथा मुकदमेंबाजी में फंसा रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि के कारण जातक अपनी कुटिल बुद्धि से काफी लाभ प्राप्त करता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि की स्थिति बहु पत्नीत्व का योग बनाती है, फिर भी जातक सुख से वंचित रहता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि के शुभ फल मिलते हैं। जातक सक्रिय, धनी लेकिन सुखहीन होता है। वह अवैध कार्यों में भी लिप्त रहता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित शनि पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पशु पालक, सत्कर्म करने वाला होता है।

चंद्र की दृष्टि जातक में धूर्त्त बुद्धि भरती है। वह कुटिल और क्रूर होता है।

मंगल की दृष्टि के कारण जातक उदार, दूसरों का सहायक लेकिन वाचाल होता है।

बुध की दृष्टि परिवार सुख को क्षीण करती है। जातक अवैध कार्यों से धन कमाता है।

गुरु की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक धनी एवं सरकार में उच्च पद प्राप्त करता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। उसे यात्राओं में आनंद मिलता है। उसमें काम भावना भी कुछ अधिक होती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित राहु के फल

प्रथम चरण: यहाँ स्थित राहु दो पत्नियों का योग दर्शाता है। यदि लग्न भी इसी चरण में हो तो इसे अवश्यंभावी माना गया है। यदि राहु

पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो इसे जातक के जीवन के लिए अनिष्टकर माना गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु जातक में कुटिल बुद्धि एवं धूर्तता का संचार करता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु शुभ फल देता है। जातक अपने विचारों को प्रभावपूर्ण तरीके से व्यक्त करता है तथापि जीवन कुछ कठिन स्थितियों में ही बीतता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक रुग्ण एवं परिवार द्वारा तिरस्कृत भी होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र स्थित केतु के फल

राहु की तुलना में ज्येष्ठा नक्षत्र में केतु अच्छे फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक को प्रशासकीय सेवाओं में ले जाता है। यदि साथ में मंगल भी हो तो जातक शीर्ष पद तक पहुँच सकता है। विदेश यात्राओं के भी योग बनते हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ भी ऐसे ही फल मिलते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ केतु के कारण जातक धनी एवं खेल-कूद तथा मनोरंजन संबंधी कार्यों से लाभ प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी केतु अच्छे फल देता है। जातक का आजीवन सुखी रहता है। व्यवसाय में भी उसे अच्छी सफलता मिलती है।

मूल

मूल नक्षत्र राशिपथ में 240.00 253.20 अंशों के मध्य स्थित है एवं धनुराशि (स्वामी : गुरु) के अंतर्गत आता है। पर्यायवाची नाम है–असुर, मुतऋक। अरबी में इसे 'अंश सौलाह' कहते हैं। इस नक्षत्र में ग्यारह तारे हैं तथा आकृति सिंह की पूंछ की भांति है। नक्षत्र देवता राक्षस तथा स्वामी ग्रह केतु है। गण: राक्षस, योनि: श्वान तथा नाड़ी: आदि है। चरणाक्षर हैं– ये यो भ भी। नक्षत्र के चारों चरण धनु राशि (स्वामी : गुरु के अतंर्गत आते हैं। मूल नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी–प्रथम चरण: मंगल, द्वितीय चरण: शुक्र, तृतीय चरण: बुध, चतुर्थ चरण: चंद्र।

मूल नक्षत्र में जन्मे जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। शरीर हृष्ट–पुष्ट, चमकीले नेत्र, मधुर स्वभाव। सामान्यत: इस नक्षत्र में जातक शांतिप्रिय, सिद्धांतवादी एवं विपरीत परिस्थितियों में भी पराजय न मानने वाले होते हैं। एक बार दृढ़ संकल्प कर लें तो वे उसे प्राप्त कर ही छोड़ते हैं। ईश्वर पर उनकी अगाध आस्था होती है, इतनी कि वे सब कुछ 'प्रभु के भरोसे' वाली उक्ति चरितार्थ करने लगते हैं। उन्हें न तो कल की चिंता होती है, न अपने वर्तमान की फ्रिक। वे दूसरों को अच्छी सलाह देते हैं, पर अपने मामले में लापरवाह ही होते हैं।

जहाँ तक आजीविका या कार्य का संबंध है, उनमें ईमानदारी होती है, साथ ही एक तरह की अस्थिर मति भी होती है। वे अनेक मामलों में कुशल भी होते हैं तथापि निरंतर परिवर्तनशील जीवन बिताने की चाह उन्हें कहीं टिकने नहीं देती। यों वे लेखन, कला, सामाजिक क्षेत्र में सफल सिद्ध होते

हैं। दूसरे, दोस्तों के साथ उनका 'दरियादिली' का व्यवहार कभी–कभी उन्हें आर्थिक संकट में भी डाल देता है। आय से अधिक व्यय उनके स्वभाव की विशेषता होती है। अतः ऐसे जातकों को इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की सलाह भी दी जाती है।

ऐसे जातकों की प्रतिभा एवं भाग्य अक्सर जन्म–स्थल से दूर विदेश–भूमि पर ही चमकता है। यदि ऐसे जातक विदेश जाने का सफल उपक्रम करें तो उन्हें आशातीत लाभ होता है।

ऐसे जातक अपना जीवन स्वयं गढ़ते हैं। परिवार से समर्थन और सहारा तो मिलता है, पर विशेष नहीं।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन भी सुखी होता है। पत्नी अच्छी मिलती है।

ऐसे जातकों को अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही मादक पदार्थों से बिल्कुल बचना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार उन्हें किसी नशे की लत लग गयी तो वे फिर बिल्कुल 'अति' कर देते हैं।

मूल नक्षत्र में जातिकाएं भी शुद्ध हृदय, उदार होती हैं, तथापि घोर हठी स्वभाव उनका एक दुर्गुण ही होता है। उसके कारण उन्हें अकारण ही विवादों और तरह–तरह की समस्याओं में उलझना पड़ता है।

ऐसी जातिकाओं का वैवाहिक जीवन बहुत सुखी नहीं होता। किसी न किसी कारण पति से अलगाव की स्थिति पैदा होने की आशंका बनी ही रहती है। विवाह में विलंब के संकेत मिलते हैं।

ऐसी जातिकाएं वातरोग की जल्दी शिकार हो सकती है।

मूल नक्षत्र में सूर्य के फल

मूल नक्षत्र के विभिन्न चरणों में सूर्य मिले–जुले फल देता है। अन्य शुभ ग्रहों से युति या उनकी दृष्टि ही कुछ शुभ फल प्रदान कर सकती है।

प्रथम चरण: यहाँ यदि सूर्य के साथ बुध हो तो जातक को विद्वान एवं परोपकारी पिता का पुत्र होने का गौरव मिलता है।

द्वितीय चरण: जातक का जीवन सामान्य बीतता है। शुक्र के साथ युति जातक को वस्त्र–व्यवसाय के क्षेत्र में सफल बना सकती है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य जातक को कल्पनाशील और विनोदी वृत्ति का बनाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। यहाँ शुक्र एवं मंगल से युति उसके चिकित्सा क्षेत्र में जाने की संभावना प्रबल करती है।

मूल नक्षत्र स्थित सूर्य पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी होता है। पुत्र सुंदर होते हैं।

मंगल की दृष्टि उसे सेना या पुलिस सेवा में सफल बनाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक को धातुओं के व्यवसाय से लाभ होता है।

गुरु की दृष्टि उसे मंत्री तुल्य पद दिला सकती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धनी किंतु कामुक भी अधिक होता है।

शनि की दृष्टि उसे कुसंगति का शिकार बनाती है।

मूल नक्षत्र में चंद्र के फल

मूल नक्षत्र में चंद्र के फल मिले–जुले होते हैं। यदि मूल नक्षत्र स्थित चंद्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो फल शुभ मिलने लगते हैं।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र के फल सामान्य ही मिलते हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र पारिवारिक सुख के लिए हानिप्रद माना गया है। जातक में निष्ठा या ईमानदारी का भी अभाव होता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र पर मंगल या सूर्य अथवा शनि की दृष्टि हो तो जातक विधि–सेवा के क्षेत्र में सफल होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र जातक के लिए बालारिष्ठ योग बनाता है। जन्म से चार वर्ष तक समय कुछ संकटपूर्ण माना गया है।

मूल नक्षत्र स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक यशस्वी और राजसी ठाठ–बाट वाला होता है।

मंगल की दृष्टि उसे सुरक्षा सेनाओं में सफल बनाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक अच्छा ज्योतिषी बन सकता है। जीवन सुखी, सेवकों से युक्त होता है।

गुरु की दृष्टि के श्रेष्ठ फल मिलते हैं। जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला और उच्च पद पर आसीन होता है। यदि वह उद्यमी है तो अनेक उद्योगों का स्वामी होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को धनी, धार्मिक वृत्ति का बनाती है। संतान सुख भी मिलता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, धार्मिक विषयों का ज्ञाता तथापि कुछ क्रूर मनोवृत्ति का होता है।

मूल नक्षत्र स्थित मंगल के फल

मूल नक्षत्र में मंगल हो तो जातक को शरीर में घाव लगने की आशंका बनी रहती है। जातक काफी उम्र तक परिपक्व नहीं हो पाता। वाणी भी कुछ क्रूर ही होती है।

प्रथम चरण: यहाँ मंगल जातक को शत्रुहंता बनाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल हो तो उपरोक्त बातें स्पष्ट नजर आती हैं। जीवन में चालीस वर्ष के बाद ही तरक्की होती है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक को कठिन संघर्ष के बाद ही कुछ सुख मिलता है। शरीर में घाव लगने की भी आशंका बनी रहती है। जातक तेज–तर्रार स्वभाव का होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल हो तो जातक के सुरक्षा सेनाओं में जाने के योग होते हैं। जातक चिड़चिड़े स्वभाव का कलह–प्रिय होता है। जीवन–संघर्ष पूर्ण तथा निराशा से भी भरा होता है। अतः जातक का गुह्य विद्याओं के प्रति भी रुझान हो जाता है।

मूल स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि बहुत शुभ फल देती है। जातक सौभाग्यशाली एवं समाज में समादृत होता है। तथापि उसके व्यवहार में रुक्षता होती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक विद्वान होता है। लेकिन उस पर कुछ फौजदारी के आरोप भी लग सकते हैं।

बुध की दृष्टि उसे कलाविद् बनाती है। कुछ कलाओं में वह विशेष दक्षता प्राप्त कर सकता है।

गुरु की दृष्टि धनी एवं सुख–सुविधा पूर्ण जीवन का संकेत करती है तथापि जातक का वैवाहिक जीवन विषमय हो सकता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को उदार बनाती है। लेकिन उसमें काम वासना भी उग्र होती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक यायावरी प्रवृत्ति का होता है। शरीर में किसी विकलांगता की भी आशंका बनी रहती है।

मूल नक्षत्र में बुध की स्थिति के फल

मूल नक्षत्र में बुध प्रायः शुभ फल ही देता है। जीवन सुखी एवं मान–सम्मान से युक्त होता है।

प्रथम चरण: जातक सत्ता पक्ष के उच्च पदासीन लोगों की निकटता से लाभान्वित होता है।

द्वितीय चरण: जीवन सुखी रहता है। जातक शासकीय सेवा में रत रहता है यदि बुध के साथ राहु भी हो तो जातक की इंजीनियरिंग क्षेत्र में जाने की संभावना बनती है। वह स्वयं भी कोई उद्योग शुरू कर सकता है।

तृतीय चरण: जातक स्वतंत्र व्यावसायिक जीवन बिताना पसंद करता है। यदि बुध के साथ गुरु हो तो जातक वेदों का ज्ञाता भी हो सकता है। उसके चार्टड एकाउंटेंट बनने का योग होते हैं। जातक के शीर्ष स्थान पर पहुँचने की भी संभावना होती है।

चतुर्थ चरण: जातक का जीवन सुखी होता है।

मूल नक्षत्र स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को शांत चित्त बनाती है।

चंद्रमा की दृष्टि हो तो जातक में प्रख्यात लेखक बनने की क्षमता होती है। मिलनसार वृत्ति का ऐसा जातक किसी का विश्वास नहीं तोड़ता।

मंगल की दृष्टि भी जातक को लेखकीय प्रतिभा होने का संकेत करती है।

गुरु की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। उसमें राजनीति के क्षेत्र में बहुत ऊंचे जाने की क्षमता होती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी एवं अध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है।

शनि की दृष्टि को अशुभ बताया गया है। जातक का जीवन दुख से भरा होता हे। यह सब शायद इसलिए कि जातक क्रूर एवं कुटिल व्यक्ति के रूप में बदनाम हो जाता है।

मूल नक्षत्र में गुरु की स्थिति के फल

मूल नक्षत्र में गुरु की स्थिति शुभ फल प्रदान करती है। जातक सद्गुणी, धनी, दीर्घायुष्य और धार्मिक वृत्ति का होता है।

प्रथम चरण: यहाँ जातक ईमानदारी से भरा सात्विक जीवन व्यतीत करता है। शिक्षा के क्षेत्र में वह विशेष सफल रहता है।

द्वितीय चरण: जातक धनी एवं अधिकार संपन्न होता है।

तृतीय चरण: जातक सुखी, संपन्न वैवाहिक जीवन व्यतीत करता है। यदि गुरु के साथ बुध की युति हो तो जातक विभिन्न विषयों का विद्वान होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी उपरोक्त फल मिलते हैं। जातक के किसी धार्मिक या विज्ञान संबंधी संस्थान के प्रमुख बनने के योग मिलते हैं।

मूल नक्षत्र में स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि अशुभ फल देती है। जातक सौभाग्यशाली, धनी एवं अच्छे पारिवारिक सुख वाला होता है।

चंद्र की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक बेहद धनी एवं परम सौभाग्यशाली होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को कलहप्रिय बना देती है।

बुध की दृष्टि के फल शुभ कहे गये है। जातक मंत्री तुल्य स्थिति में होता है।

शुक्र की दृष्टि एक सुखी, समृद्ध दीर्घायु वाले जीवन का संकेत करती है।

शनि की दृष्टि अशुभ फल देती है। जातक को तिरस्कृत जीवन बिताना पड़ सकता है।

मूल नक्षत्र स्थित शुक्र के फल

मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में ही शुक्र अशुभ फल देता है। शेष चरणों में प्रायः शुभ मिलते हैं।

प्रथम चरणः जातक का जीवन सुखी होता है। यदि शुक्र के साथ सूर्य एवं गुरु भी हो तो जातक बुद्धिमान, निर्भीक एवं मंत्री तुल्य पद पा सकता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी शुक्र जातक को सुखी–समृद्ध बनाता है। वह महिलाओं या अनाथ बच्चों के कल्याण से जुड़ी संस्थाओं का भी कर्त्ता–धर्त्ता बनता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र अभावग्रस्त जीवन की सूचना देता है।

चतुर्थ चरणः यदि शुक्र शनि एवं सूर्य के साथ हो तो जातक यद्यपि धार्मिक विषयों का विद्वान होता है तथापि जीवन समृद्ध नहीं रह पाता। हाँ, जातक को अपने परिवार से पूरा सुख, सहयोग और समर्थन मिलता है।

मूल नक्षत्र स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

मूल नक्षत्र स्थित शुक्र पर सभी ग्रहों की दृष्टि उत्तम फल देती है।

सूर्य की दृष्टि जातक को धनी एवं विद्वान बनाती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक नृप तुल्य सुख पाता है।

मंगल की दृष्टि भी ऐसे ही फल देती है। जातक उद्योग–व्यापार में सफलता प्राप्त करता है।

बुध की दृष्टि भी शुभ फल देती है। जातक धनी, चल–अचल संपत्ति से युक्त होता है।

गुरु की दृष्टि विशाल परिवार एवं एकाधिक विवाह की सूचना देती है।

शनि की दृष्टि भी शुभ फल देती है। जातक परम सौभाग्ययुक्त, सुखी एवं समृद्ध होता है।

मूल नक्षत्र स्थित शनि के फल

मूल नक्षत्र में शनि की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं। जातक सुखी, यशस्वी, उदार एवं प्रमुख पदों पर जिम्मेदारी निबाहता है।

प्रथम चरणः यहाँ शनि जातक को उदार वृत्ति का बनाता है। उसे परिवार में पत्नी से, बच्चों से पूर्ण सुख एवं प्रतिष्ठा मिलती है।

द्वितीय चरण: जातक विभिन्न विषयों का प्रसिद्ध विद्वान होता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि जातक को प्रायः प्रतिरक्षा सेवाओं में ले जाता है। यदि ऐसे शनि पर मंगल की दृष्टि हो और जातक सेना में हो तो परिवार एवं देश का गौरव बढ़ाता है।

चतुर्थ चरणः जातक ग्राम, नगर या किसी शैक्षणिक संस्थान में उच्च पद की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाता है।

मूल नक्षत्र स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को समृद्धि से पूर्ण यशस्वी बनाती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो पारिवारिक जीवन सुखी बीतता है तथापि माता के लिए यह स्थिति हानिप्रद कही गयी है।

मंगल की दृष्टि के अशुभ फल होते हैं। जातक की कुटिल वृत्ति उसे नफरत का शिकार बना देती है।

बुध की दृष्टि जातक को मंत्री तुल्य प्रसिद्ध बनाती है।

गुरु की दृष्टि शोध एवं शिक्षा के क्षेत्र में जातक की रुचि बढ़ाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अनेक जिम्मेदारियां उठाता है। यह भी कहा गया है कि माता के अलावा कोई अन्य स्त्री भी उसके लालन–पालन में योग देती है।

मूल नक्षत्र में राहु की स्थिति के फल

मूल नक्षत्र में केवल तीसरे चरण में ही राहु के शुभ फल कहे गये हैं। शेष चरणों में अशुभ फल ही मिलते हैं।

प्रथम चरणः जातक संतान के कारण मानसिक विकार से ग्रस्त हो सकता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी अच्छे फल नहीं मिलते। जीवन दुखी ही रहता है।

तृतीय चरणः जातक वेदों का ज्ञाता एवं भू संपत्ति का स्वामी होता है।

चतुर्थ चरणः जातक निर्लज्ज प्रकृति का होता है। यों उसमें प्रशासन की क्षमता भी होती है।

मूल नक्षत्र में केतु की स्थिति के फल

मूल नक्षत्र में स्थित केतु भी कोई शुभ फल प्रदान नहीं करता।

प्रथम चरणः अनुराधा नक्षत्र के लग्न में होने पर ज़ातक को सुख–सुविधापूर्ण जीवन के योग बताये गये हैं। लेकिन बाद में उसे अपनी संपत्ति गंवानी भी पड़ सकती है। यह स्थिति जीवन के इक्तीसवें वर्ष में बनती है तथापि तीन–चार वर्षों बाद जातक पुनः उसे प्राप्त कर लेता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी केतु उपरोक्त फल देता है। मंगल के साथ केतु की युति जातक को मंत्री या मंत्री तुल्य पद दिला सकती है।

तृतीय चरणः यहाँ भी उपरोक्त फल मिलते हैं।

चतुर्थ चरणः जातक तरक्की तो करता है पर उसका पारिवारिक जीवन दुखी रहता है।

पूर्वाषाढ़ा

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र राशि पथ में 253.20 अंश से 266.40 अंश तक स्थित है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के पर्यायवाची नाम हैं पय, सलिलम्, जलम्, तोयम्। अरब मंजिल में उसे 'अल नाईम' कहा जाता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में चार तारे हैं, जो हाथी दांत की तरह दिखायी देते हैं। देवता जल एवं स्वामी ग्रह शुक्र है। प्रथम चरण का स्वामी: सूर्य, द्वितीय चरण का: बुध, तृतीय चरण का: शनि एवं चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है।

गण: मनुष्य, योनि: वानर, एवं नाड़ी: मध्य है।

चरणाक्षर हैं: भू, धा, फ, ढ।

यह नक्षत्र धनु राशि के 13.20 अंशों से 27.40 अंश तक स्थित है। धनु का स्वामी गुरु है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्मे जातक बुद्धिमान, तार्किक, अपनी बात पर अड़े रहने वाले, ईश्वर भक्त, विनम्र, पाखंड रहित तथा सहृदय एवं सहायक प्रवृत्ति के होते हैं। उनमें लेखन प्रतिभा भी होती है, विशेषकर कविताएं लिखने में उन्हें आनंद आता है।

इन जातकों में एक ही कमी होती है कि जहाँ वे बहुत जल्दी ही किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं, वहाँ निर्णय करने में सदैव सोच–विचार, तर्क–कुतर्क किया करते हैं। लेकिन उनमें यह भी एक गुण होता है कि एक बार निर्णय करने के बाद वे उससे पीछे नहीं हटते, भले ही उन्हें मालूम भी पड़ जाए कि उनका निर्णय सही नहीं है।

ऐसे जातक अच्छी शिक्षा पाते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा खास तौर पर चमकती है। उनमें गुह्य विद्याओं के अध्ययन के प्रति भी पर्याप्य रुचि होती है।

व्यवसाय के क्षेत्र में भी वे सफल हो सकते हैं, बशर्ते उनके अधीनस्थ कर्मचारी ईमानदार एवं विश्वास योग्य हों।

ऐसे जातकों का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है तथापि उनका वैवाहिक जीवन न्यूनाधिक रूप से सुखी ही रहता है। इसका एक कारण यह है कि तमाम विवादों के बावजूद वे पत्नी को बेहद प्यार करते हैं। ऐसे जातकों की संतानें भी अच्छी होती हैं।

ऐसे जातकों को अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए, विशेषकर श्वास सम्बन्धी किसी भी शिकायत को हल्के से नहीं लेना चाहिए।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर होती हैं। लंबी नाक, भव्य चेहरा, आँखों में एक चुम्बकीय आकर्षण, यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता होती है।

ऐसी जातिकाएं बुद्धिमती, ऊर्जा युक्त, सक्रिय और उत्साह से पूर्ण होती हैं। वे विपरीत परिस्थितियों में झुकना नहीं जानती तथा वे काफी सोच–विचार व सभी अच्छे–बुरे पहलुओं का आकलन करने के बाद ही किसी निर्णय पर पहुँचती हैं। झूठ से उन्हें चिढ़ होती है, क्योंकि वे स्वयं सत्य पर विश्वास करती हैं। वे अपनी बात भी निःसंकोच भाव से व्यक्त कर देती हैं।

गृह कार्य में चतुर ऐसी जातिकाएं पति की प्रसन्नता का पूरा ध्यान रखती हैं। उनका पारिवारिक जीवन सुखी ही बीतता है।

ऐसी जातिकाओं का स्वास्थ्य प्रायः ठीक ही रहता है, तथापि उन्हें गर्भाशय संबंधी किसी शिकायत की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के स्वामी इस प्रकार हैं–प्रथम चरणः सूर्य, द्वितीय चरणः बुध, तृतीय चरणः शुक्र एवं चतुर्थ चरणः मंगल।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में सूर्य के फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में सूर्य स्थित हो तो सामान्यतः शुभ फल ही मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य जातक के जीवन को सुख–सुविधाओं से पूर्ण बनाता है। जातक जीवन में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का समन्वय स्थापित करता है।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य के कारण जातक धनी एवं सबके आदर का पात्र होता है। लेकिन उसका हठी स्वभाव कभी–कभी परेशानी पैदा कर सकता है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य जातक को साहसी बनाता है। पैंतीस से चौवालिस वर्ष की अवस्था सर्वोत्तम होती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य के कारण जातक में व्यावसायिक बुद्धि होती है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को मधुरभाषी बनाती है। पुत्र भी सुंदर होता है।

मंगल की दृष्टि प्रतिरक्षा सेनाओं या पुलिस सेवा में यशस्वी बनाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक शास्त्रज्ञ, मंत्रज्ञ, धातुओं के व्यापार से लाभ कमाने वाला होता है।

गुरु की दृष्टि जातक की पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है। वह मंत्री–तुल्य सम्मान पाता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वैभव–संपन्न व विलासिता–प्रिय होता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक को पशु–पालन से लाभ होता है। वह कुसंगति का भी शिकार हो सकता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में चंद्र की स्थिति के फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में चंद्रमा की स्थिति न केवल जातक वरन् उसके माता–पिता, मामा आदि के लिए भी अशुभ मानी गयी है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र माता के लिए अशुभ होता है। स्वयं तेरहवें वर्ष में जातक के स्वयं के स्वास्थ्य को खतरा रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र के कारण जातक की नौ माह की अवस्था में पिता को खतरा बताया गया है। यों वयस्क होने पर जातक बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ और परोपकारी वृत्ति का होता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र को मामा के लिए अशुभ कहा गया है। स्वयं जातक शांत प्रकृति का, स्वाभिमानी और सद्व्यवहार से युक्त होता है। चालीस वर्ष की अवस्था के बाद अर्थाभाव की स्थिति बन सकती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ जातक के स्वयं के लिए खतरा होता है। किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसे दीर्घायुष्य होने में भी कोई संदेह नहीं।

पूर्वाषाढ़ा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को यशस्वी एवं ऐशो आराम से युक्त बनाती है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक के सुरक्षा या पुलिस सेवा में जाने की संभावना प्रबल होती है।

बुध की दृष्टि जातक को ज्योतिष शास्त्र में प्रवृत्त करती है। उसका जीवन भी सुखी होता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप जातक उच्च पद पा सकता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धनी और धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

शनि की दृष्टि भी शुभ प्रभाव डालती है। यद्यपि जातक कुछ क्रूर मना तथापि धार्मिक एवं विभिन्न शास्त्रों में पारंगत होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में मंगल की स्थिति के फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में मंगल चतुर्थ चरण में ही शुभ फल देता है। शेष चरणों में फल सामान्यतः सामान्य ही मिलते है।

प्रथम चरणः यहाँ मंगल जातक को साहसी बनाता है। यदि मंगल के साथ गुरु हो तो जातक सुयोग्य प्रशासक बनता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक चिंतित मनःस्थिति वाला होता है। यहाँ शनि के साथ मंगल की युति विपत्तिकारक होती है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक उदार एवं दृढ़–चरित्र होता है। उसमें सामान्य स्थिति से उबरकर ऊंचे उठने की क्षमता होती है।

इस चरण में स्थित मंगल पर गुरु की दृष्टि जातक को दीर्घायु बनाती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ मंगल जातक को साहसी बनाता है। वह राजनीति में हो तो ऊंचे पद पर पहुँच सकता है। उसके शत्रु कुछ अधिक होते हैं तथा बावन वर्ष की आयु में शस्त्र से अपघात की आशंका दर्शायी गयी है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक समाज में सम्मान पाता है।

चंद्र की दृष्टि उसके विद्वान होने की सूचना देती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक विभिन्न कलाओं में विख्यात होता है।

गुरु की दृष्टि संपन्न होने की संभावना दर्शाती है। हाँ, जातक का पारिवारिक जीवन कुछ कलहमय रहता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक में कामुक वृत्ति की अधिकता होती है। स्त्रियों की सहायता करते वक्त वह उनसे प्रतिदान में कुछ चाहता भी है।

शनि की दृष्टि भटकाव को बढ़ाती है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरणः जातक के विदेश में बसने की इच्छा बलवती होती है।

उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो यह योग और प्रबल होता है। वह विदेशों में पर्याप्त धन भी अर्जित करता है। यदि चंद्र की ऐसे बुध पर दृष्टि हो तो जातक स्वदेश नहीं लौटता। विदेश में ही बस जाता है।

द्वितीय चरणः जातक सरकार में उच्च पद पर सलाहकार की हैसियता से कार्य करता है। उसकी कानून में अच्छी पैठ होती है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध जातक में परस्त्रीगमन की लालसा तीव्र करता है। इस कार्य में वह अपनी संपत्ति भी लुटा सकता है।

चतुर्थ चरणः यदि बुध की गुरु के साथ युति हो तो जातक एक सरकारी अधिकारी के रूप में विश्व की व्यावसयिक यात्राएं करता है। उसके जीवन का पैतालिसवां एवं बावनवां वर्ष कष्टकारक बताया गया है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शांत प्रकृति का होता है।

चंद्र की दृष्टि उसकी लेखन प्रतिभा को निखारती है।

मंगल की दृष्टि भी जातक को प्रख्यात लेखक बना सकती है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक के विद्वान, उदार एवं उच्च राजनीतिक पद पर होने की सूचना मिलती है।

शुक्र की दृष्टि जातक को अध्यापन क्षेत्र में सफल बनाती है।

शनि की दृष्टि के अशुभ फल मिलते हैं। उसका जीवन दुखी रहता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में गुरु के फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में गुरु उसके तृतीय एवं चतुर्थ चरण में अच्छे फल दर्शाता है। शेष दो चरणों में फल सामान्य ही होते हैं।

प्रथम चरणः जातक के भाई अधिक होते हैं।

द्वितीय चरणः गुरु पर यदि अन्य ग्रहों की शुभ दृष्टि हो तो जातक तीर्थाटन प्रिय होता है।

यदि चंद्र की गुरु पर दृष्टि हो तो किसी पवित्र नदी में जल समाधि के संकेत किये गये हैं।

तृतीय चरणः जातक को पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है। अच्छी पत्नी और अच्छे बच्चे। पच्चीस से पैंतालिस वर्ष की अवस्था जीवन का स्वर्णिम काल होता है।

चतुर्थ चरणः जातक अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, साथ ही वैज्ञानिक शोध कार्यों में भी रुचि रखने वाला होता है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि दरिद्रता भरे जीवन का संकेत करती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक सौभाग्यशाली एवं पारिवारिक सुख से युक्त होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को बहुत संतोषी बनाती है।

बुध की दृष्टि के शुभ फल होते हैं। जातक मंत्री तुल्य जीवन बिताता है।

शुक्र की दृष्टि भी जातक के लिए सौभाग्यप्रद सिद्ध होती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक में चोरी की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है, जिसके कारण तिरस्कृत जीवन बिताना पड़ सकता है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित शुक्र के फल

पूर्वाषाढ़ा के चतुर्थ चरण में ही शुक्र शुभ फल देता है। अन्य चरणों में विभिन्न ग्रहों की दृष्टि उसके फलों को प्रभावित करती है।

प्रथम चरणः यहाँ जातक के शीघ्र विवाह के योग बनते हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ भी यही योग कहा गया है। यदि शुक्र के साथ गुरु हो तो वैवाहिक जीवन सुखी और स्थायी होता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र अच्छी शिक्षा के संकेत देता है। ऐसे शुक्र पर चंद्र की दृष्टि चिकित्सक बनने की संभावना दर्शाती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र जातक को उदार एवं स्पष्ट वक्ता बनाता है। जातक धनी एवं परोपकारी भी होता है। दार्शनिकता का पुट उसके जीवन को संयमित रखता है।

पूर्वाषाढ़ा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनी और विद्वान होता है।

चंद्र की दृष्टि उसे राजसी वैभव वाला बनाती है।

मंगल की दृष्टि उसे सफल व्यापारी और धन–संपन्न करती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक चल–अचल संपत्ति का स्वामी बनता है।

गुरु की दृष्टि एकाधिक विवाह की सूचना देती है।

शनि की दृष्टि के भी शुभ फल मिलते हैं। जातक सौभाग्यशाली एवं धनी होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र स्थित शनि के फल

प्रथम चरणः जातक में प्रशासक बनने की योग्यता होती है।

यदि शनि के साथ गुरु भी हो तो जातक शासन में उच्च पद पर होता है। जातक में धार्मिक प्रवृत्ति भी प्रचुर होती है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक अक्सर विश्वासघात का शिकार होता है।

तृतीय चरण: शनि यदि बुध के साथ हो तो जीवन सुखमय बीतता है। मंगल की दृष्टि से उसे जोड़ों का रोग हो सकता है।

चतुर्थ चरण: शनि पैंतालिस वर्ष की अवस्था के बाद ही जीवन में स्थिरता लाता है। उससे पूर्व का समय संघर्ष एवं बाधाओं से जूझने में बीतता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक यशस्वी, धनी और सौभाग्यशाली होता है।

चंद्र की दृष्टि माता के लिए अशुभ होती है। यों जातक का अपना पारिवारिक जीवन सुखी होता है।

मंगल की दृष्टि जातक में कुटिल वृत्ति का संचार करती है, जिसके कारण उसे परेशानी भी उठानी पड़ सकती है।

बुध की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक मंत्री–तुल्य प्रतिष्ठा पाता है।

गुरु की दृष्टि उसे अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र में ले जाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अनेक जिम्मेदारियां निभाता है। माता के अलावा किसी अन्य स्त्री से भी मातृ–स्नेह प्राप्त होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में राहु के फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में चतुर्थ चरण में ही राहु के शुभ फल मिलते हैं। यदि चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक प्रभावशाली, परोपकारी, कलाप्रिय होता है। वह लोगों के विश्वास की रक्षा करता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में केतु के फल

पूर्वाषाढ़ा के चतुर्थ चरण में केतु हो तो जातक राजनीति से जुड़े लोगों के संपर्क में आकर अधिकार संपन्न बनता है। लेकिन धन का अभाव उसे बना ही रहता है। इस कारण भी कि जातक लोगों पर प्रभाव जमाने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई भी उड़ा डालता है।

उत्तराषाढ़ा

राशि पथ के 266.40–270.00 अंशों के मध्य उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की स्थिति मानी गयी है। एक अन्य नाम विश्वम भी है। अरबी में इसे अल बलदाह कहते हैं।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में चार तारे हैं तथा उसकी स्थिति एक मचान अथवा शैया की तरह अर्थात् चौकोर है। नक्षत्र का देवता विश्व देव कहा गया है। सूर्य को उसका अधिपत्य दिया गया है। प्रथम चरण का स्वामी: गुरु, द्वितीय चरण का स्वामी: शनि, तृतीय चरण का स्वामी: शनि तथा चतुर्थ चरण का स्वामी: गुरु है।

गण: मनुष्य, योनि: नेवला तथा नाड़ी: अंत मानी गयी है।

चरणाक्षर हैं: भे, भो, ज, जी।

इस नक्षत्र के प्रथम तीन चरण मकर राशि एवं अंतिम चरण कुंभ राशि में होता है। दोनों राशियों का स्वामी शनि है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मे जातकों का शरीर सुगठित, नाक लंबी, आँखें चमकीली होती हैं। उनका व्यक्तित्व आकर्षक तथा स्वभाव विनम्र होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मे जातक शुद्ध हृदय, प्रदर्शन–प्रियता से दूर, उच्च पद पर होने के बावजूद दंभ रहित तथा परोपकारी वृत्ति के होते हैं। वे सभी का आदर करना जानते हैं, विशेषकर नारी जाति के प्रति उनमें एक हार्दिक सम्मान की भावना होती है।

अपने कार्य–व्यवहार में सदैव ईमानदारी बरतने वाले ये जातक पारदर्शी होते हैं। अपने कार्य के प्रति, सहयोगियों के प्रति उनमें एक निष्ठा का भाव होता है। वे कभी किसी को धोखा नहीं देते। स्वयं भी धोखा पंसद नहीं करते तथा धोखेबाजों से दूर रहते हैं। उनमें एक दृढ़ता भी होती है, जो उन्हें अनीति के सामने झुकने नहीं देती।

वे हर दबाव का यथाशक्ति प्रतिरोध करते हैं। उनका हर निर्णय सुविचारित तथा विश्वास पात्रों के परामर्शों पर आधारित होता है।

उनमें इतनी अधिक विनम्रता होती है कि वे सदैव कटु वचन कहने से परहेज करते हैं। यदि किसी की राय उन्हें जंचती भी नहीं तो वे प्रत्यक्ष में उससे असहमति व्यक्त नहीं करते। यदि उन्हें कभी अपनी गलती का अहसास हो जाए तो उसे स्वीकार करने में भी नहीं हिचकते।

नरसी मेहता के शब्दों में कहा जाए तो वे वैष्णव जन की भांति होते हैं, जो दूसरों की पीर को जानते हैं, समझते हैं।

लेकिन ऐसे जातक अंततः होते तो मनुष्य ही हैं। औरों द्वारा प्रशंसित होने की चाह उनके मन के किसी कोने में दबी रहती है।

ऐसे जातकों को विवादपूर्ण कार्यों से बचने की सलाह दी जाती है ताकि बाद में असफलता का सामना नहीं करना पड़े।

ऐसे जातकों का बचपन अच्छा बीतता है लेकिन बाद में परिवार में अनेक झंझटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातकों का अठ्ठाइस से इक्तीस वर्ष का जीवन महत्त्वपूर्ण होता है।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन सुखी रहता है। पत्नी स्नेहिल व्यवहार से युक्त होती है तथापि उसका स्वास्थ्य पति के लिए चिंता का कारण बना रहता है।

ऐसे जातकों को उदर रोगों से सावधान रहना चाहिए। नेत्र विकार भी उन्हें परेशान कर सकता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मी जातिकाओ में न्यूनाधिक रूप से उपरोक्त गुण होते हैं। उनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। लेकिन जातकों के विपरीत वे हठी अधिक होती हैं। वे बिना सोचे–समझे कोई भी बात कह देती है। फलतः अनावश्यक विवादों में उलझ जाती हैं। अपने इस स्वभावगत दोष से उन्हें बचना चाहिए।

ऐसी जातिकाएं सुशिक्षित होती हैं तथा अध्यापन अथवा बैंकिग सर्विस में सफलता पाती हैं।

वैवाहिक जीवन वैसे तो सुखी रहता है तथापि पति से अलगाव उन्हें दुखी किये रहता है।

ऐसी जातिकाओं को वायु विकार की शिकायत हो सकती है। उसी तरह उन्हें अपने गर्भाशय से संबंधित किसी भी शिकायत की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी–प्रथम चरण: गुरु, द्वितीय चरण: शनि, तृतीय चरण: शनि, चतुर्थ चरण: गुरु

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्य के फल

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य के कारण जातक जल्दी क्रोधित हो जाने वाला होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक शांतिप्रिय, एकांत प्रिय, निष्पक्ष एवं उद्यमी वृत्ति का होता है।

तृतीय चरण: जातक चतुर होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य जातक के लिए दीर्घायु कारक बनता है। यह अधिकार–संपन्न भी होता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि वही फल होते हैं, जो मूल नक्षत्र में होते हैं। केवल सूर्य ही नहीं, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि ग्रहों के संबंध में यही बात लागू होती है। पुनरावृत्ति दोष से बचने के लिए यहाँ सूर्य एवं अन्य ग्रहों पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फल नहीं दिये जा रहे हैं। पाठक इन्हें जानने के लिए मूल नक्षत्र एवं पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों से संबंधित अध्यायों में यह वर्णन पढ़ सकते हैं।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में चंद्र के फल

प्रथम चरण: यहाँ जातक की संगीत में रुचि होती है। पैतृक संपत्ति भी पर्याप्त होती है। जातक में परस्त्रीगमन की लालसा बनी रहती है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र के शुभ फल मिलते हैं। जातक विद्वान एवं धनी होता है। लेकिन उसमें कुछ पाखंड प्रियता भी होती है। यद्यपि जातक कृपण मनोवृत्ति का होता है तथापि स्वयं को उदार एवं दानी दर्शाता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र हो तो जातक को शीतल प्रदेश या शीतल ऋतु परेशान कर सकती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र कोई विशेष फल नहीं देता।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरण: शिक्षा में व्यवधान आते रहते हैं। जातक के लिए पिता का व्यवसाय ही उपयुक्त रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल जातक को पशु पालन के क्षेत्र में ले जाता

है, यदि इस चरण में गुरु के साथ युति हो तो पैतृक संपत्ति प्राप्त होती है।

तृतीय चरणः यहाँ मंगल शुभ फल देता है। जातक राजसी जीवन बिताता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक प्रतिरक्षा सेना या राजनीति में सफलता प्राप्त कर सकता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरणः यहाँ बुध जातक को विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा दिलवाता है। उसमें वैज्ञानिक प्रतिभा भी होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक समाज में समादृत होता है। उसमें कुछ कुटिलता भी होती है फलतः उसके शत्रुओं की संख्या भी अच्छी खासी होती है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध द्वितीय चरण की भांति ही फल देता है। चंद्र की दृष्टि हो तो जातक के विदेश जाने के योग बनते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ मिश्रित फल प्राप्त होते हैं।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक को अच्छी शिक्षा प्रदान करता है। शनि के साथ युति हो तो बेहद ऊंची शिक्षा पाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक का जीवन पर्याप्त सुखी नहीं रहता। उसे जोड़ों के दर्द की भी शिकायत हो सकती है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक का व्यक्तित्व सुंदर, आकर्षक लेकिन मन भटकाव से भरा रहता है। यह भटकाव उसकी कविताओं में व्यक्त होता है। जातक को पैतृक संपत्ति भी प्राप्त होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक के उच्च सरकारी पद पर पहुँचने की संभावना रहती है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में शुक्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अशुभ है। उसे मधुमेह, नेत्र विकार, ट्यूमर आदि की शिकायत हो सकती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र जातक को विलासी बनाता है। उसके विवाह में विलंब के भी योग हैं।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र शुभ फल देता है। जातक साहसी, न्यायप्रिय और सहृदय होता है। लेकिन कामातिरेक उसे गुप्त रोगों का भी शिकार बना सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र विवाह के लिए विलंब कारक योग बनाता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में शनि के फल

प्रथम चरणः जातक उदार और परोपकारी होता है।

द्वितीय चरणः पत्नी रुग्ण रहती है। जातक भी अपने कार्यों में बार–बार परिवर्तन करता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि सत्ता पक्ष से लाभ करवाता है। जातक किसी संस्थान का प्रमुख हो सकता है।

चतुर्थ चरणः शनि अशुभ फल देता है। जातक का जीवन कष्टमय बीतता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में राहु के फल

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में राहु की स्थिति विशेष अशुभ फल देती है।

प्रथम चरणः यहाँ जातक दंभी, सिद्धांत हीन, कुटिल प्रवृत्ति का होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक रुढ़िविरोधी, एकांतप्रिय और खर्चीले स्वभाव का होता है।

तृतीय चरणः जातक के अनैतिक कार्यों में लिप्त होने के फल कहे गये हैं। उसे अपने परिवार से भी कोई सुख नहीं मिल पाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक परिवार ही नहीं, समाज के लिए भी समस्याएं पैदा करने वाला होता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में केतु के फल

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में केतु कुछ शुभ फल देता है। जातक बुद्धिमान होता है लेकिन उसके जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक का उत्थान–पतन करवाता रहता है।

द्वितीय चरणः जातक बुद्धिमान एवं धार्मिक होता है।

तृतीय चरणः जातक वकील बनता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में वह राजनीति में भी सफल हो सकता है।

चतुर्थ चरणः जातक बेहद विद्वान तथा सरकार या किसी उद्योग में उच्च्य पद पर होता है।

अभिजित

अभिजित नक्षत्र राशि पथ में 276.40 अंशों से 280.54.13 अंशों के मध्य स्थित माना गया है। अभिजित के देवता ब्रह्मा हैं। इस नक्षत्र में तीन तारे हैं जो एक त्रिकोण की रचना करते हैं।

अभिजित नक्षत्र के संबंध में एक पौराणिक कथा भी मिलती है। महर्षि व्यास के अनुसार एक बार अभिजित नक्षत्र आकाश में बहुत नीचे की ओर सरक कर लुप्त प्रायः हो गया। अब आकाश में केवल 27 नक्षत्र ही रहे। इंद्र ने स्कंद से इस समस्या का निवारण करने के लिए कहा क्योंकि गणना के लिए 27 नक्षत्रों का होना आवश्यक था। स्कंद ने किस नक्षत्र को मिलाकर यह समस्या सुलझायी, इसकी कोई चर्चा नहीं है। विशोतरी दशा पद्धति में अभिजित का कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता अर्थात् उत्तर भारत में प्रायः अभिजित की उपेक्षा ही है। दक्षिण में अष्टोत्तरी महादशा पद्धति का प्रचलन है। उसमें अभिजित को मान्यता है।

इस नक्षत्र में जन्मे जातक मध्यम कद के उदार, सौजन्यशील व्यवहार वाले तथा किसी न किसी क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले होते हैं। वे ईश्वर भक्त तथा गुह्य विद्याओं में भी रुचि रखते हैं। अध्ययन में उनकी विशेष रुचि होती है तथा अपने व्यक्तित्व–कृतित्व से समाज में आदर भी पाते हैं। उनका विवाह लगभग तेईस वर्ष में हो जाता है। संतान भी अधिक ही होती हैं।

इस नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं व्यवहार कुशल एवं किसी भी स्थिति से निपटने की सामर्थ्य रखती हैं। अपने परिश्रम से वे पर्याप्त धन अर्जित करती

हैं। यद्यपि ऐसी जातिकाएं कई कारणों से पुरुषों से घृणा करती हैं तथापि विवाह के बाद उनका पारिवारिक जीवन सुखी ही बीतता है।

अभिजित नक्षत्र में स्थित सूर्य दीर्घायुष्य प्रदान करता है जबकि चंद्रमा जातक के मन को ही विशेष प्रभावित करता है। मंगल भी जातक के मन को ही प्रभावित करता है। मंगल जातक को प्रतिरक्षा सेनाओं के प्रति आकर्षित करता है। बुध के मिश्रित फल मिलते हैं। गुरु जातक को किसी शासकीय उच्च पर पर आसीन करवाता है। शुक्र के कारण प्रेम–विवाह की स्थिति बनती है। शनि के फल अशुभ होते हैं। राहु भी विपत्ति कारक सिद्ध होता है। जातक दूसरों को भी परेशानी में डालता रहता है। लेकिन राहु की तुलना में केतु के फल गुरु के फल जैसे होते हैं। जातक उच्च शासकीय पद पर हो सकता है। स्वयं के व्यवसाय में हो तो उसमें भी सफल होता है।

प्रतिदिन सामान्यतः 1.36–12.24 तक अर्थात् मध्याह्न काल 12 बजे से 1 घंटे पहले और 1 घंटे बाद तक इस नक्षत्र को माना जाता है।

मुहुर्त शास्त्र में अभिजित का महत्व सबसे ज्यादा है। अभिजित मुहुर्त में तिथि, वार, नक्षत्र योग कारण अर्थात् पंचांग के पांचों अंग शुभ न हो तो भी यात्रा में उत्तम फल देने वाला होता है केवल दक्षिण दिशा को छोड़कर।

श्रवण

राशि पथ में श्रवण नक्षत्र 280.00 अंशों से 293.20 अंशों के मध्य स्थित माना गया है। इसके पर्यायवाची नाम हैं—श्रोणा, विष्णु, हरि एवं श्रुति। अरबी में उसे सद बुला या अल बुला कहते हैं।

श्रवण नक्षत्र में तीन तारे हैं जो वामन की भांति प्रतीत होते हैं। विष्णु को इस नक्षत्र का देवता माना गया है, जबकि ग्रहों में चंद्र को इस नक्षत्र का आधिपत्य दिया गया है।

गण: देव, योनि: वानर और, नाड़ी: अंत है।

चरणाक्षर हैं: खि, खू, खे, खो।

यह नक्षत्र मकर राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी शनि है।

श्रवण नक्षत्र में जन्मे जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वे मधुर भाषी, स्वच्छता प्रिय, सिद्धांतवादी तथा दयालु स्वभाव के होते हैं। ऐसे जातक सत्यनिष्ठ, ईश्वर भक्त, गुरु भक्त तथा औरों के मन की थाह लेने वाले होते हैं। उनमें एक साथ कई काम करने की क्षमता होती है। वे अच्छे प्रशासक भी सिद्ध होते हैं। उनमें प्रतिहिंसा की भावना नगण्य ही होती है।

सामान्यतः ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन सुखी ही बीतता है। पत्नी सद्गृहिणी एवं आज्ञाकारिणी होती है। संतान भी सुयोग्य ही होती है।

श्रवण नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं छरहरी होती हैं। प्रदर्शन प्रियता एवं वाचालता कभी—कभी उनका दुर्गुण बन जाती है।

ऐसी जातिकाओं की नृत्य—संगीत एवं अन्य ललित कलाओं में भी पर्याप्त रुचि होती है।

जहाँ तक वैवाहिक जीवन का संबंध है, वे सुखी ही रहती हैं। चूंकि वे

हर कार्य सुचारू रूप से करना चाहती हैं, पति के साथ–उनकी नोक झोक चलती ही रहती है।

ऐसी जातिकाएं चर्म रोग, तपेदिक आदि की आसानी से शिकार हो सकती है, अतः सावधानी अपेक्षित है।

श्रवण नक्षत्र के चरणों के स्वामी हैं–प्रथम चरणः मंगल, द्वितीय चरणः शुक्र, तृतीय चरणः बुध, चतुर्थ चरणः चंद्र।

श्रवण नक्षत्र के विभिन्न चरणों में सूर्य

श्रवण नक्षत्र में सूर्य कोई विशेष अच्छे फल नहीं देता। विशेषकर यदि सूर्य पर चंद्र या बुध की दृष्टि हो। जैसे

प्रथम चरणः सूर्य एवं चंद्र की युति पर शनि की दृष्टि हो तो वह माता–पिता, दोनों के लिए घातक मानी गयी है।

द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण में भी कोई उल्लेखनीय फल नहीं मिलते।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक कामुक वृत्ति का, वेश्यागामी तक हो सकता है। उसके अनेक शत्रु भी होते हैं।

श्रवण नक्षत्र स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि सुखहीन जीवन का संकेत करती है। जातक महिलाओं के माध्यम से धन अर्जित करता है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक वकालत के पेशे में सफल हो सकता है।

बुध की दृष्टि हो तो दूसरों के लिए परेशानी पैदा करने वाला होता है। उसका व्यवहार वृहन्नालाओं की भांति देखा गया है।

गुरु की दृष्टि जातक को उदार, परोपकारी बनाती है। वह बुद्धिमान भी होता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को जीवन में सभी प्रकार के सुख मिलते हैं। स्त्रियों से भी उसे आर्थिक लाभ होता है।

शनि की दृष्टि जातक को शत्रुहंता बनाती है तथापि वह दंभी भी होता है।

श्रवण नक्षत्र में चंद्र की स्थिति

श्रवण नक्षत्र में चंद्र की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र मान–सम्मान में वृद्धि करता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र की स्थिति जातक को सद्गुणी बनाती है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक विद्वान होता है। वह बड़ो का आदर करना जानता है। पुत्र भी अनेक होते हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र जातक को धार्मिक वृत्ति का बनाता है। समाज में एक सदाचारी, श्रद्धालु व्यक्ति के रूप में उसकी प्रतिष्ठा होती है।

श्रवण नक्षत्र स्थित चंद्र पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को राजा के समान मान–सम्मान प्रदान करने वाली होती है।

मंगल की दृष्टि विद्वत्ता बढ़ाती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक के धन में इजाफा होता है।

गुरु की दृष्टि उसे सुयोग्य, प्रतिष्ठित, यशस्वी शासक बनाती है।

शुक्र की दृष्टि अशुभ फल देती है। जीवन अभावमय बीतता है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक जन्मजात भूपति होता है।

श्रवण नक्षत्र में मंगल की स्थिति के फल

श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में मंगल हो तो जातक के चिकित्सा क्षेत्र में जाने की संभावना प्रबल रहती है। शेष चरणों में विशेष फल नहीं मिलते। ग्रहों की दृष्टि भी अच्छे–बुरे फल देती है।

श्रवण नक्षत्र में मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक का पारिवारिक जीवन सुखी होता है। पर्याप्त धन, अच्छी पत्नी, संतान के कारण जातक का जीवन अच्छा बीतता है।

चंद्र की दृष्टि जातक को धनी तो बनाती है तथापि मातृ–सुख से वंचित रहने की संभावना भी दर्शाती है।

बुध की दृष्टि जातक को मृदुभाषी, पर मिथ्याचरण करने वाला बनाती है।

गुरु की दृष्टि जातक को सद्गुणी बनाती है। वह सत्ता पक्ष से भी लाभान्वित होता है।

शुक्र की दृष्टि के कारण जातक को विलासितापूर्ण जीवन बिताने के प्रचुर अवसर मिलते हैं।

शनि की दृष्टि के कारण जातक बुद्धिमान, यशस्वी होता है तथापि स्त्रियों को वह हेय दृष्टि से देखता है।

श्रवण नक्षत्र में बुध की स्थिति के फल

श्रवण नक्षत्र के प्रथम एवं द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक व्यावसायिक बुद्धि का होता है। तृतीय चरण में बुध जातक को अर्थशास्त्र में निष्णात बनाता है। जातक निस्वार्थ लेकिन बैचेन मनःस्थिति वाला होता है। चतुर्थ चरण में बुध जातक को होटल व्यवसाय में सफल बनाता है।

श्रवण नक्षत्र में स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक, चालाक, बलिष्ठ होने के कारण दंभी होता है। मल्ल विद्या का वह ज्ञाता होता है।

चंद्र की दृष्टि से वह जलीय वस्तुओं के उत्पादन से लाभान्वित होता है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक धनोपार्जन के लिए छोटा से छोटा काम भी करने से नहीं हिचकता।

गुरु की दृष्टि जातक को ग्राम, नगर या किसी शासकीय विभाग में प्रमुख पद पर आसीन करवा सकती है।

शुक्र की दृष्टि संतान की दृष्टि से ठीक नहीं है। जातक भी कुसंगति का शिकार हो सकता है।

शनि की दृष्टि जातक को क्रूरकर्मी एवं सुखों से वंचित रखती है।

श्रवण नक्षत्र में स्थित गुरु के फल

श्रवण नक्षत्र में गुरु के फल अच्छे नहीं कहे गये हैं।

प्रथम चरणः यहाँ बुध हो और यदि लग्न में मूल नक्षत्र हो तो जातक पैतृक संपत्ति का नाश करने वाला कहा गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध शुक्र के साथ हो तथा लग्न में पुनर्वसु नक्षत्र हो तो आजीवन अविवाहित रने के योग कहे गये हैं।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु बालरिष्ट योग बनाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु हो तो जातक उदार वृत्ति का तो होता है, पर उसका व्यवहार चिडचिड़ा रहता है।

श्रवण नक्षत्र में स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक में नेतृत्व की क्षमता पैदा होती है। वह अपने समुदाय, ग्राम, नगर का प्रमुख बन सकता है।

मंगल की दृष्टि उसे सत्ता पक्ष का कृपापात्र बनाती है, जिससे उसे अर्थ–लाभ भी होता है।

बुध की दृष्टि जातक को धार्मिक, शांति–प्रिय बनाती है। वह स्त्रियों में भी प्रिय होता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सद्गुणों से युक्त विद्वान तथा सत्ता पक्ष से लाभ पाता है।

शनि की दृष्टि बहुत शुभ फल देती है। जातक की सभी आकांक्षाएं पूरी होती है।

श्रवण नक्षत्र स्थित शुक्र के फल

श्रवण नक्षत्र में शुक्र के फल अच्छे मिलते हैं।

प्रथम चरण: जातक हमेशा युवा एवं तरोताजा नजर आता है। उसमें परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता होती है। वह जीवन में ऊंचे पद तक पहुंचने की क्षमता रखता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को सौम्य स्वभाव वाला ईश्वर भक्त बनाता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि एवं सूर्य से युति जातक के लिए बालारिष्ट योग का संकेत देती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ जातक अतिशय महत्त्वाकांक्षी, दंभी एवं सिद्धांतहीन हो सकता है।

श्रवण नक्षत्र स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को साहसी और धनी बनाती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप जातक कठोर परिश्रमी तो होता है पर उसके जीवन में निरंतर बाधाएं भी आती रहती हैं।

बुध की दृष्टि हो तो जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता एवं यशस्वी होता है।

गुरु की दृष्टि जातक को धनी बनाने के साथ–साथ उसमें संगीत एवं अन्य ललित कलाओं के प्रति रुचि भी पैदा करती है।

शनि की दृष्टि सौभाग्य सूचक होती है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

श्रवण नक्षत्र स्थित शनि के फल

प्रथम चरण: यहाँ शनि के कारण जातक कृश शरीर वाला व स्वार्थी–

वृत्ति का होता है। वह सदैव असंतुष्ट भी रहता है। ससुराल पक्ष से लाभ होने की संभावना बनी रहती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि सुखी जीवन का द्योतक होता है तथापि जातक की पत्नी रुग्ण ही रहती है। जातक में प्रतिहिंसा की भावना भी होती हे।

तृतीय चरणः यहाँ शनि के कारण जातक बुद्धिमान, विद्वान लेकिन घोर अविश्वास प्रकृति का होता है। फलतः लोग भी उसका विश्वास नहीं करते।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि हो तो जातक मितभाषी और उच्च पद पर आसीन होने की क्षमता देता है।

श्रवण नक्षत्र स्थित शनि पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि दरिद्र जीवन की सूचना देती है। पत्नी के भी सुंदर होने के संकेत मिलते हैं।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक सच्चरित्र लेकिन मातृ–स्नेह से वंचित रहता है।

मंगल की दृष्टि विदेश में वास करने का संकेत देती है।

बुध की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी एवं शासन में उच्च पद पर होता है।

गुरु की दृष्टि के भी शुभ फल मिलते हैं। जातक हृष्ट पुष्ट, प्रतिरक्षा सेवाओं में, उच्च पद पर मंत्री तुल्य होता है।

शुक्र की दृष्टि के सामान्य फल मिलते हैं।

श्रवण नक्षत्र में राहु के फल

प्रथम चरणः जातक के लिए शुभ नहीं होता।

द्वितीय चरणः जातक शांतिप्रिय होता है लेकिन पत्नी के स्वभाव के कारण दुखी रहता है।

तृतीय चरणः जातक विद्वान लेकिन प्रतिहिंसा की भावना से भरा होता है।

चतुर्थ चरणः जातक विनोदी वृत्ति का होता है।

श्रवण नक्षत्र में केतु के फल

प्रथम चरणः जातक धनी होता है।

द्वितीय चरणः जातक मानसिक अवसाद का शिकार रहता है।

तृतीय चरणः जातक पत्नी के कारण दुखी रहता है।

चतुर्थ चरणः पत्नी एवं बच्चों से जातक दुःख ही पाता है।

धनिष्ठा

धनिष्ठा नक्षत्र राशि पथ में 293.20 अंशों से 306.40 अंशों के मध्य स्थित है। धनिष्ठा के पर्यायवाची नाम हैं अविहा एवं वसु। अरबी में उसे साद अस सुद कहा जाता है।

धनिष्ठा का अर्थ है, अत्यंत प्रसिद्ध। धनिष्ठा धन की विपुलता का सूचक है। एक अर्थ यह भी है कि वह स्थल जहाँ धन रखा जाए।

धनिष्ठा के देवता वसु हैं, जिसकी संख्या आठ हैं। ये हैं धरा, ध्रुव, सोम, अहा, अनिल, अनलोर, प्रत्यूष एवं प्रवष।

धनिष्ठा का स्वामित्व मंगल को दिया गया है।

कुछ लोगों के अनुसार धनिष्ठा आठ तारों को मिलाकर बनाया गया है तो कुछ लोग तारों की संख्या केवल चार मानते हैं।

धनिष्ठा की आकृति मृदंग की तरह अनुमानित की गयी है।

गणः राक्षस, योनिः सिंह एवं नाड़ीः मध्य है।

चरणाक्षर हैं—ग, गी, गू, गे।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक अत्यंत बुद्धिमान, विविध विषयों के ज्ञाता, 'मनसा, वाचा, कर्मणा' किसी को ठेस न पहुँचाने वाले, धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। वे जीवन में अपने बाहुबल से आगे बढ़ते हैं। सामान्यतः ऐसे जातक यथाशक्य किसी के विपरीत मत देने में हिचकते हैं। यह इसीलिए कि उससे किसी को ठेस न पहुंचे।

इस नक्षत्र में जन्मे जातकों की इतिहास के अलावा विज्ञान में भी रुचि होती है तथा वे इन क्षेत्रों में इतिहासज्ञ या वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन सुखी होता है। पत्नी वस्तुतः लक्ष्मी ही सिद्ध होती है तथापि ससुराल पक्ष से जातक को कोई लाभ नहीं मिलता। ऐसे जातक प्रायः अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहते हैं। और उनका यही स्वभाव उन्हें रुग्ण भी कर सकता है। उन्हें खांसी, कफ एवं रक्ताल्पता की शिकायत हो सकती है।

श्रवण नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर, सदैव तरुणी नजर आने वाली होती हैं। उनके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण होता है। वे स्वभाव से दयालु, परोपकारी तथा महत्त्वाकांक्षी होती हैं। उन्हें अपने खर्चीले स्वभाव पर अंकुश लगाने की सलाह दी जाती है।

ऐसी जातिकाओं का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक ही रहता है पर उन्हें अपनी रक्ताल्पता को हलके नहीं लेना चाहिए।

धनिष्ठा नक्षत्र के चरणों के स्वामी हैं—प्रथम चरणः सूर्य, द्वितीय चरणः बुध, तृतीय चरणः शुक्र, चतुर्थ चरणः मंगल।

धनिष्ठा नक्षत्र के विभिन्न चरणों में सूर्य

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य जातक को कार्य कुशल तथापि दंभी और स्वार्थी बना सकता है। विधवाओं और तलाकशुदा स्त्रियों में उसकी विशेष रुचि होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य जातक को कृपण मनोवृत्ति का बनाता है।

इस चरण में चंद्र, मंगल एवं शनि से सूर्य की युति जातक के लिए बचपन में घातक कही गयी है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य जातक को बुद्धिमान एवं दीर्घायु बनाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक की ललित कलाओं में रुचि होती है।

सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि फल वैसे ही होते हैं, जैसेकि श्रवण नक्षत्र स्थित सूर्य पर। यही बात अन्य ग्रहों के बारे में भी है। पुनरावृत्ति दोष से बचने के लिए वे यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं। पाठक सूर्य एवं अन्य ग्रहों पर दूसरे ग्रहों की दृष्टि के फल श्रवण नक्षत्र वाले अध्याय में पढ़ सकते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में चंद्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र रोगग्रस्त एवं दुर्घटनापूर्ण बचपन की सूचना देता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक धनी एवं समझदार होता है। युवावस्था में रोगग्रस्त होने की आशंका प्रबल रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक साहसी, उदार और सत्य वक्ता होता है। उसे 'भोजन भट्ट' कहा जा सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र दो पत्नियों का योग दर्शाता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरणः यहाँ मंगल शुभ फल देता है। जातक धनी, सुखी और यशस्वी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक की मंत्र शास्त्र में रुचि होती है। वह शत्रुहंता कहा जा सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ मंगल के कारण जातक संपत्तिशाली लेकिन चतुर और धूर्त भी होता है। जातक मेकेनिकल या इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी जा सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ मंगल के कारण जातक किसी लौह–उत्पादन संबंधी उद्योग में कार्यरत रहता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरणः यहाँ बुध के कारण जातक की संगीत एवं कला में रुचि होती है। प्रायः उसे अधीनस्थ जीवन ही बिताना पड़ता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध के अच्छे फल मिलते हैं। जातक सत्ता संपन्न होता है लेकिन वैवाहिक जीवन में दुःख की भरमार रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ भी बुध उपरोक्त फल देता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध के कारण वैवाहिक जीवन में कभी न कभी अलगाव की स्थिति के फल मिलते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरणः यहाँ गुरु अभावपूर्ण जीवन की सूचना देता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक अध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु के कारण जातक को जन्म–स्थल से दूर जीवन बिताना पड़ता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु अच्छे फल देता है। जातक सुखी, धनी और जीवन के सारे आनंदों का भोग करता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में शुक्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ पत्नी के रोगग्रस्त रहने का फल कहा गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र की गुरु के साथ युति हो तो अच्छे फल मिलते हैं। जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक पर्याप्त धनी तथा सुखी जीवन बिताता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र उदार तो होता है तथापि कुमारियों के प्रति घोर आसक्त भी।

धनिष्ठा में शनि के फल

प्रथम चरणः यहाँ शनि की बुध के साथ युति हो तो जातक अपार वैभव का स्वामी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि के कारण जातक यद्यपि कठोर और क्रूर नजर आता है तथापि उसका स्वभाव अच्छा होता है। दरअसल वह मूलतः एक भला व्यक्ति ही होता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि के कारण जातक का व्यक्तित्व आकर्षक लगता है। विज्ञान में उसकी विशेष रुचि होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक का जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित राहु के फल

प्रथम चरणः यहाँ राहु यद्यपि धनी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त होने के योग दर्शाता है, तथापि जातक का रूक्ष एवं कठोर स्वभाव उसे अलग-थलग कर देता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी यही फल मिलते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ हठी और दूसरों के लिए परेशानी ही बनाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु-चंद्र की युति माता के लिए घातक बताई गयी है।

धनिष्ठा नक्षत्र स्थित केतु के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है तथापि संपत्ति विषयक विवाद के कारण वह भाई-बहनों से मुकदमेबाजी में उलझ सकता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु निरंतर दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका दर्शाता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक को चोरों के कारण नुक्सान हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु कुछ शुभ फल देता है। जातक शासकीय सेवा में होता है। वह पर्याप्त धन भी कमाता है।

शतभिषा

राशि पथ में 306.40 से 320.00 अंशों के मध्य शतभिषा नक्षत्र की स्थिति मानी गयी है। शतभिषा के पर्यायवाची नाम हैं, प्रचोता, शत तारका, वरुण, यम। अरबी में इसे साद अल–मलिक कहते हैं।

जैसा कि नाम सूचना देता है, इस नक्षत्र में सर्वाधिक, सौ तारे हैं। इसका आकार वृत्त के समान अर्थात् गोल है। वरुण को देवता एवं राहु को इस नक्षत्र का अधिपति माना गया है।

गणः राक्षस, योनिः अश्व एवं नाड़ीः आदि मानी गयी है।

चरणाक्षर हैं—गो, सा, सी, सू।

शतभिषा नक्षत्र में जन्मे जातक व्यक्तित्व से अभिजात वर्गीय प्रतीत होते हैं। कोमल शरीर, आकर्षक आँखें, चौड़ा माथा तथा उदर किंचित बाहर होता है। ऐसे जातकों में विलक्षण स्मरण शक्ति होती है। ऐसे जातक सत्यनिष्ठ, सत्य के लिए बलिदान देने से भी पीछे न हटने वाले तथा निस्वार्थ–वृत्ति के होते हैं। वे अत्यंत कोमल हृदय भी होते हैं। वे अपने निर्णय पर अडिग रहना जानते हैं। उनमें धार्मिकता का भी पुट होता है।

ऐसे जातक अक्सर क्रोधित नहीं होते लेकिन क्रोधित होते हैं तो उन्हें रोक पाना कठिन होता है। लेकिन कोमल हृदय एवं बुद्धिमान होने के कारण उनका गुस्सा शीघ्र ही काफूर भी हो जाता है।

ऐसे जातक प्रदर्शन–प्रिय नहीं होते। संकोच के कारण वे अपनी प्रतिभा का पता नहीं लगने देते। लेकिन बातचीत के दौरान सामने वाला उनकी प्रतिभा का कायल हो जाता है।

ऐसे जातकों में सहित्यिक प्रतिभा भी होती है तथा बहुत जल्दी उनकी यह प्रतिभा प्रकाश में आ जाती है। वे ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के योग्य होते हैं।

अपनी सहृदयता के कारण वे लोकप्रिय भी हो जाते हैं। मनोविज्ञान एवं स्पर्श–चिकित्सा के क्षेत्र में वे दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। उनमें ज्योतिष शास्त्र के प्रति भी रुचि होती है तथा वे एक अच्छे सुलझे हुए विद्वान ज्योतिषी भी बन सकते हैं। उनमें चिकित्सा क्षेत्र में नाम कमाने की भी क्षमता होती है।

विडम्बना ही है कि ऐसे जातकों को अपने प्रियजन से ही काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपनी उदारता के कारण वे बिना मांगे सबकी सहायता के लिए सन्नद्ध रहते हैं तथापि स्वयं उन्हें मानसिक यातना से गुजरना पडता है, विशेषकर भाइयों से। ऐसे जातकों को माता–पिता का भी पूरा स्नेह मिलता है। माता से पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है जबकि पिता से पूर्ण संरक्षण।

ऐसे जातक प्रत्यक्ष में स्वस्थ नजर आते हैं लेकिन वे शरीर में कोई चोट बर्दाश्त नहीं कर पाते। उन्हें श्वास, मूत्र संबंधी रोग या मधुमेह की शिकायत हो सकती है। कामातिरेक उन्हें गुप्त रोग भी लगा सकता है। ऐसे जातको को शीत ऋतु से बचना चाहिए।

इस नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर होती हैं। ऐसी जातिकाओं की मूल प्रकृति तो शांत रहने की है तथापि उनका क्रोध भी प्रचंड स्वरूप धारण कर सकता है, फलतः लोग उन्हें ठीक से समझ नहीं पाते।

ऐसी जातिकाओं की स्मरण शक्ति भी अत्यंत तीव्र होती है। वे उदारता की प्रतिमूर्ति कही जा सकती हैं, सबकी सहायता के लिए तत्पर। एक विशेषता यह है कि वे 'नेकी कर कुएं में डाल' वाली उक्ति पर विश्वास करती हैं। अपनी उदारता सहायता के बदले कुछ नहीं चाहतीं।

ऐसी जातिकाओं में विज्ञान में गहरी रुचि होती है तथा वे एक सफल कुशल चिकित्सक बन सकती हैं।

ऐसी जातिकाएं पति को पूर्ण निष्ठा से प्यार करती हैं तथापि वैवाहिक जीवन विशेष सुखी नहीं रहता। पति से लंबे अलगाव के योग आते ही रहते हैं।

ऐसी जातिकाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव सतर्क रहना चाहिए। उन्हें छाती एवं मूत्र–मार्ग संबंधी रोग हो सकते हैं।

शतभिषा के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं–प्रथम चरण: राहु, द्वितीय एवं तृतीय चरण: शनि, चतुर्थ चरण: गुरु।

शतभिषा नक्षत्र में सूर्य की स्थिति

शतभिषा के चतुर्थ चरण में सूर्य हो तो जातक में कुटिल वृत्ति पैदा हो सकती है। गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी एवं उच्च पदस्थ होता है।

धनिष्ठा की तरह शतभिषा स्थित सभी ग्रहों पर अन्य ग्रहों की दृष्टि श्रवण नक्षत्र में स्थित ग्रहों पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फल देती है।

शतभिषा स्थित चंद्र के फल

शतभिषा में चंद्र की स्थिति के वही फल होते हैं जो जातक–जातिकाओं की चारित्रिक विशेषताओं में वर्णित किये गये हैं।

प्रथम चरण: यहाँ चिकित्सक बनने की संभावना होती है। जातक हठी एवं गोपनीय प्रवृत्ति का होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शतभिषा ज्योतिष शास्त्र में पारंगत होने की संभावना दर्शाता है। जातक में जुआरीपन की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र जातक को निर्भीक व्यक्तित्व प्रदान करता है। जातक शासकीय सेवा हो या व्यवसाय दोनों में सफल रहता है। इस चरण में जातक सुराप्रेमी हो सकता है, जो 'अति' के कारण हानिप्रद ही सिद्ध होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र सामान्य फल देता है।

शतभिषा नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरण: यहाँ मंगल जातक को कुसंगति प्रिय बना सकता है, फलतः जीवन दुखी ही रहता है। तथापि जातक अपना पारिवारिक दायित्व यथा शक्ति निभाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ सामान्य फल मिलते हैं।

तृतीय चरण: यहाँ बचपन में रोगग्रस्त होने का फल कहा गया है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल जातक को व्यवसाय में सफल बनाता है। बड़े भाई से भी उसे पर्याप्त सहयोग मिलता है।

शतभिषा नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरण: यहाँ बुध व्यवसाय में सफलता दर्शाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक को बड़े भाई से सहायता मिलती है। यदि मंगल के साथ बुध हो तो पचीसवें वर्ष में विवाह का योग बनता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध की यदि मंगल के साथ युति हो तो इकतीस वर्ष

की अवस्था तक जातक को कठिन संघर्ष करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध जातक को पर्याप्त धन–दौलत देता है।

शतभिषा नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरण: यहाँ जातक एवं उसकी मां को काफी कष्ट उठाना पड़ता है। जातक शासकीय सेवा में रत रहता है। आयु का इकतीसवां वर्ष दुर्घटनापूर्ण हो सकता है।

द्वितीय चरण: यहाँ वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होता।

तृतीय चरण: यहाँ पाप ग्रहों की दृष्टि बालारिष्ट योग बनाती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी उपरोक्त फल मिलते हैं।

शतभिषा नक्षत्र में शुक्र के फल

शतभिषा नक्षत्र में शुक्र के शुभ फल प्राप्त होते हैं। जातक सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, व्यवहार कुशल एवं सामान्यतः शासकीय सेवा में रत रहता है।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र जातक किशोरावस्था में ही काम के प्रति आसक्त कर सकता है। जातक का जीवन सुखी बीतता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को रसायन शास्त्र का विशेषज्ञ बनने की क्षमता देता है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। जातक में व्यवहार–कुशलता एवं जीवन में शीर्षस्थ पद पर पहुँचने की क्षमता होती है। वह कामभावना से पीड़ित रहता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ कभी–कभी शिक्षा में व्यवधान आता है तथापि शुक्र की बुध के साथ युति हो तो वह निम्न पद से ऊंचे पद पर पहुँच सकता है।

शतभिषा नक्षत्र में शनि के फल

शतभिषा नक्षत्र में शनि भी प्रायः अच्छे फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ सुखी वैवाहिक–पारिवारिक जीवन की सूचना मिलती है। जातक ईमानदार, परिश्रमी तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों में रुचि रखने वाला होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ फल शुभ नहीं मिलते। जातक कामासक्त, परस्त्रीगमन की लालसा रखने वाला तथा उग्र स्वभाव एवं रूक्ष वाणी का होता है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक में उच्च कोटि की प्रतिभा होती है। वह

कठिन से कठिन कार्यों को भी पूर्ण करता है। ऐसे जातक सेना एवं पुलिस सेवा में विशेष सफल होते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि जातक को वैभव संपन्न तथा विदेश में आवास करने वाला बनाता है। पारिवारिक जीवन सुखी होता है। पचपन वर्ष की अवधि में पत्नी मानसिक रुग्णता का शिकार हो सकती है।

शतभिषा नक्षत्र में राहु के फल

शतभिषा नक्षत्र में राहु अकेले हो तो विशेष शुभ फल नहीं मिलते। अन्य ग्रहों से युति होने पर उनकी प्रकृति के अनुसार राहु फल देता है। उनकी दृष्टि भी अच्छे–बुरे फल देती है।

प्रथम चरणः यहाँ राहु पर शनि बुध की दृष्टि तपेदिक का रोगी बना देती है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु पर गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक उच्च पद पर पहुँच सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि के साथ युति हो तो जातक में नौकरी, चोरी आदि कुकर्मों में प्रवृत्ति पैदा होती है। तथापि वह उदार भी होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र के साथ युति माता–पिता के लिए अशुभ मानी गयी है।

शतभिषा नक्षत्र में केतु के फल

शतभिषा नक्षत्र में केतु अच्छे फल नहीं देता है। अधिकांश चरण में वह जातक के दरिद्र, अभावग्रस्त और दुखी जीवन की ही सूचना देता है।

पूर्वाभाद्रपद

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र राशि पथ में 320.00 अंशों से 333.20 अंशों के मध्य स्थित है। पूर्वाभाद्रपद के पर्यायवाची नाम हैं—अजैक पाद, अजपाल। अरबी में उसे अल फर्ग—अल मुकदीम कहते हैं।

पूर्वाभाद्रपद का एक अर्थ है पूर्वाभद्र अर्थात् सुंदर, पाद अर्थात् चरण। इस दृष्टि से सही उच्चारण पूर्वाभद्र पद होना चाहिए।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में दो तारे हैं। स्वामी है अजैक पाद, जिसे रुद्र अर्थात् शिव का एक रूप माना गया है। गुरु को इस नक्षत्र का अधिपत्य दिया गया है।

इस नक्षत्र की आकृति किसी मंच की भांति है तथा **गण**: मनुष्य, योनिः सिंह एवं नाड़ीः आदि है।

चरणाक्षर हैं— से, सो, दा, दी।

यह नक्षत्र मीन राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी गुरु है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जातक सामान्यतः मध्यम कद के, शांतिप्रिय, बुद्धिमान, सिद्धांतवादी, सादगी पसंद तथा निष्पक्ष व्यवहार वाले होते हैं। ऐसे जातक ईश्वर के प्रति आस्था रखने वाले, धार्मिक कर्मकाण्ड करने वाले तथापि धर्म के मामले में रुढिवादी नहीं होते। वे सहृदय होते हैं, सबकी सहायता के लिए तत्पर। भौतिक संपत्ति से अधिक उनके पास सद्भावना एवं यश की पूंजी होती है।

ऐसे जातक व्यवसाय में भी सफल होते हैं तथा यदि शासकीय सेवा में हो तो उसमें भी उनकी अनायास पदोन्नति होती ही रहती है। वे प्रतिभा के

धनी होते हैं अतः किसी भी क्षेत्र में चमक सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र एवं खगोल विषय के प्रति भी उनका झुकाव होता है।

सामान्यतः ऐसे जातक को माता का पूर्ण स्नेह प्राप्त नहीं हो पाता। इसका एक कारण माता से ज्यादातर समय अलगाव भी हो सकता है। जातक के पिता का ललित–कला या लेखन में क्षेत्र में पर्याप्त यशस्वी होना भी बताया गया है और पिता की इस प्रसिद्धि का जातक को भी लाभ मिलता है।

वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी ही बीतता है।

इस नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं के विषय में भी लगभग उपरोक्त सभी बातें घटित होती हैं। वह भी सत्यनिष्ठ, ईमानदार, विनम्र तथा वाकई जरूरत मंदों की भरपूर सहायता करने वाली होती हैं। ऐसी जातिकाओं की विज्ञान या तकनीकी विषयों में ज्यादा रुचि होती है। वे एक सफल शिक्षिका, सांख्कीय विशेषज्ञा या शोधकर्त्री बन सकती है। उनकी ज्योतिष शास्त्र में भी अच्छी पैंठ हो सकती है।

ऐसी जातिकाओं का पारिवारिक जीवन सुखी होता है, वे पति को, अपने बच्चे को पूर्ण प्यार देती हैं।

ऐसी जातिकाओं को निम्न रक्तचाप के लक्षणों को सहजता से न लेकर चिकित्सा पर तत्काल ध्यान देना चाहिए।

पूर्वाभाद्रपद के प्रथम चरण का मंगल, द्वितीय का शुक्र, तृतीय का बुध तथा चतुर्थ का स्वामी चंद्र माना गया है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में सूर्य के फल

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य जातक के बच्चों से अलगाव की सूचना देता है। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक धनी एवं सुखी पारिवारिक जीवन वाला होता है, अन्यथा अभावग्रस्त जीवन के फल कहे गये हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य हो तो जातक को ससुराल पक्ष से लाभ मिलता है। वह जल से संबंधित व्यापार में ज्यादा सफल होता है।

तृतीय चरणः यहाँ यदि शनि, मंगल और चंद्र के साथ युति हो तो उसे जातक के लिए बचपन के तीन वर्ष घातक बताये गये हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक की मनःस्थिति सदैव बेचैन रहती है। वह अतिशय भावुक भी होता है। ऐसे जातक अतींद्रिय शक्ति से भी संपन्न माने गये हैं।

पूर्वाभाद्रपद स्थित सूर्य एवं अन्य ग्रहों पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के

फल सामान्यतः वैसे ही बताये गये हैं, जैसे श्रवण नक्षत्र स्थित ग्रहों पर अन्य ग्रहों की दृष्टि के फल।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में चंद्र

पूर्वाभाद्रपद में चंद्र की स्थिति हो तो जातक धनी, स्त्री के वश में रहने वाला, कृपण तथा अस्थिर मति का होता है।

प्रथम चरण: यहाँ उपरोक्त फल ही मिलते हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक छरहरा, निर्भीक तथा हठी स्वभाव का होता है। वह किसी की भी बात नहीं सुनता। तैंतीस वर्ष की अवस्था में उसे किसी दुर्घटना का शिकार होने की आशंका भी दर्शायी गयी है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक भीतर–बाहर कुटिल प्रवृत्ति का ही होता है। दो पत्नियों के भी योग बताये गये हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र के शुभ फल मिलते हैं। जातक धनी, स्वाभिमानी तथा बड़ों का आदर करने वाला होता है। बचपन में उसे जल दुर्घटना की आशंका दर्शयी गयी है।

ऐसे जातक को युवावस्था में नौकरी के कारण घर छोड़ना पड़ सकता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में मंगल के फल

इस नक्षत्र में **चतुर्थ चरण** में ही मंगल शुभ फल देता है। वह भी तब जब उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि न हो।

प्रथम चरण: यहाँ जीवन दुखी होता है। जातक चिड़चिड़े स्वभाव वाला पाखण्ड पूर्ण जीवन बिताता है।

द्वितीय चरण: यहाँ विशेष फल नहीं मिलते।

तृतीय चरण: यहाँ मंगल हो तो जातक मेटल या मेकेनेकिल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर धन कमा सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल शुभ फल देता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में बुध

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में बुध विधि के अलवा लेखन, प्रकाशन के क्षेत्र में सफलता की स्थिति दर्शाता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध की गुरु के साथ युति हो तो जातक कानूनी विषयों में दक्ष होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ लेखन के क्षेत्र में सफलता के योग बनते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ बुध हो तो जातक गणित, इंजीनियरिंग या ज्योतिष शास्त्र के क्षेत्र में सफल होता है। पत्नी भी बुद्धिमती मिलती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध अवैध एवं अनैतिक मार्गों में धनोपार्जन की प्रवृत्ति की सूचना देता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में गुरु के फल

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में गुरु हो तो फल प्रायः शुभ ही मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ जातक दर्शन के क्षेत्र में निष्णात होता है। वह एक सफल शिक्षक के अलावा कुशल शल्य चिकित्सक भी बन सकता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक कानून के क्षेत्र से संबद्ध होता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक आरंभ से नौकरी करने के साथ अपना व्यवसाय आरम्भ करता है। पारिवारिक जीवन भी अच्छा बीतता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक वैज्ञानिक बन सकता है। वह एक कुशल प्रशासक भी सिद्ध होता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में शुक्र के फल

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में शुक्र के भी अच्छे फल मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ जातक बुद्धिमान, शोध प्रिय तथा माता–पिता का भक्त होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक संगीत या चित्रकला के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र जातक को समाजसेवा के क्षेत्र में ले जाता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक चिकित्सा–क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में शनि के फल

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में शनि के भी शुभ फल कहे गये हैं।

प्रथम चरणः यहाँ जातक नौकरी में यशस्वी होता है। धन की भी कमी नहीं रहती।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि जातक को व्यावहारिक बुद्धि का बनाता है। इससे उसे सफलता भी मिलती हे।

तृतीय चरणः यहाँ जातक व्यवहार–कुशल होने के साथ सुरा–सुंदरी का भी शौकीन होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि जातक के उच्च पदस्थ होने की संभावना दर्शाता है। गुरु की दृष्टि हो तो जातक इंजीनियर या आर्किटेक्ट बन सकता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में राहु के फल

प्रथम चरणः यहाँ राहु के सामान्य फल मिलते हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक धनी, यशस्वी एवं सुखी परिवार वाला होता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक का युवावस्था तक का जीवन संघर्ष पूर्ण रहता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु शुभ फल देता है। जातक के धनी–मानी, शासक एवं अनेक उद्योगों के स्वामी होने का फल कहा गया है।

पूर्वाभादपद्र नक्षत्र में केतु के फल

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम दो चरणों में केतु के अच्छे फल कहे गये हैं।

प्रथम चरणः यहाँ यदि केतु के साथ मंगल हो तो जातक ग्राम या नगर–प्रमुख हो सकता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु के होने से धनी होने का फल कहा गया है तथापि पत्नी से जातक दुखी ही रहता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक मानसिक अवसाद का शिकार हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु जातक को सट्टे–फाटके की ओर प्रवृत्त करता है।

उत्तराभाद्रपद

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र राशि पथ में 333.20 अंशों से 346.40 अंशों तक स्थित है। इसका एक अन्य नाम अहिर्बुध्न्य। अरबी में उसे अल फर्ग अल मुखीर कहते हैं।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र की तीन तारों को मिलाकर रचना की गयी है।

देवता अहिर्बुध्न्य है। अर्थ दो कहे गये हैं। कुछ इसका अर्थ सूर्य देवता से लगाते हैं तो कुछ कहते हैं, इसका अर्थ है तल में रहने वाला सर्प या द्वीप का सर्प।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का आधिपत्य शनि को दिया गया है।

गण: मनुष्य, **योनि**: गौ, और **नाड़ी**: मध्य है।

चरणाक्षर हैं: दू, थ, झ, ञ।

इस नक्षत्र में जन्मे जातक आकर्षक एवं चुंबकीय व्यक्तित्व वाले होते हैं। चेहरे पर सदैव स्मित हास्य, एक अबोधपन दर्शाता है। वे बुद्धिमान, ज्ञानवान एवं समझदार भी होते हैं।

ऐसे जातक सभी से सम व्यवहार करने वाले होते हैं, अर्थात् वे ऊंच–नीच का कोई भेद नहीं रखते। निर्दोष हृदय के ऐसे जातक दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहते।

ऐसे जातकों में एक ही दोष होता है कि गुस्सा उनकी नाक पर चढ़ा रहता है। लेकिन वह क्षणिक होता है। मन से वे एकदम स्वच्छ एवं निर्मल होते हैं। जिनसे स्नेह करते हैं, उनके लिए वे प्राण तक देने को तत्पर रहते हैं, पर यदि उन्हें कोई चोट पहुँचाये तो वे खूंखार शेर की तरह हो जाते हैं।

उनकी वाणी में माधुर्य होता है। वे शत्रुहंता भी कहे जा सकते हैं। वे

ऊंचे पद पर भी पहुँच सकते हैं। उनकी शिक्षा भी अच्छी होती है। उन्हें अनेक विषयों का ज्ञान भी होता है।

ऐसे जातकों की काम-प्रवृत्ति उन्हें सदा दूसरे 'सेक्स' के लोगों के साथ बिताने के लिए प्रेरित करती है।

ऐसे जातक अठारह-उन्नीस वर्ष की अवस्था में ही आजीविका कमाने में लग जाते हैं।

ऐसे जातक अपने पिता के भक्त तो होते ही हैं, साथ ही उनकी सख्ती से कुछ खिन्न भी। उन्हें अपने पिता से कोई विशेष लाभ नहीं होता। सामान्यतः बचपन उपेक्षित ही बीतता है।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन सुखी बीतता है। पत्नी एवं बच्चों से उसे पूर्ण सुख मिलता है।

यद्यपि ऐसे जातक अपने स्वास्थ्य के प्रति किंचित लापरवाह रहते हैं तथापि उनका स्वास्थ्य प्रायः ठीक ही रहता है।

इस नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं भी उपरोक्त गुणों एवं चारित्रिक विशेषताओं से संपन्न होती है।

व्यक्तित्व आकर्षक, मध्यम कद तथा विशाल, सुंदर नेत्र।

ऐसी जातिकाएं किसी भी परिवार के लिए साक्षात 'लक्ष्मी' ही कही गयी हैं। व्यवहार-कुशलता, विनम्रता, परिस्थितियों के अनुरूप ढल जाना उनकी एक विशेषता है।

ऐसी जातिकाएं वकालत के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता पा सकती हैं। उनमें वे कुशल नर्स या चिकित्सक बनने के भी क्षमता होती है।

ऐसी जातिकाओं को पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे जातक से विवाह न करने की चेतावनी मिलती है। उसे पति से बिछुड़ना पड़ सकता है।

ऐसी जातिकाओं को अपच, कब्ज, हर्निया एवं तपेदिक की बीमारी हो सकती है, अतः उन्हें इन रोगों को जन्म देने वाले वातावरण से बनना चाहिए।

उत्तराभाद्रपद के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य, द्वितीय का बुध, तृतीय का शुक्र तथा चतुर्थ का मंगल माना गया है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में सूर्य की स्थिति के फल

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य जातक को समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाता है। जातक का पारिवारिक जीवन भी सुखी होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक कृषि विषयक कार्यों से पर्याप्त धन कमा सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध के साथ सूर्य की युति हो तो जातक का स्वभाव उग्र हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ सूर्य के अच्छे फल कहे गये हैं। जातक का स्वभाव उग्र हो सकता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में स्थित किसी भी ग्रह पर अन्य ग्रहों की दृष्टि के फल प्रायः वहीं हैं, जो मूल नक्षत्र में स्थित ग्रह–विशेष पर अन्य ग्रहों की दृष्टि के होते हैं।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में चंद्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक संपन्न जीवन बिताता है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र पर पाप ग्रहों की दृष्टि बचपन में जातक के जीवन के लिए अशुभ मानी गयी है। तथापि इस चरण में जातक में चोरी की प्रवृत्ति भी बतायी गयी है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक उदार, सद् व्यवहार से युक्त तथा विद्वान होता है। जातक को पिता से विशेष लाभ नहीं मिलता। वह अपने प्रयत्नों से जीवन में उन्नति करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक का पारिवारिक जीवन सुखी होता है। पत्नी अच्छी मिलती है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरणः यहाँ मंगल जातक के लिए विदेश–गमन की स्थिति दर्शाता है। उसे विश्वासघात का भी शिकार होना पड़ सकता है, जिससे उसे पर्याप्त आर्थिक क्षति उठानी पड़ सकती है।

द्वितीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक में स्वार्थ की भावना बढ़ जाती है।

तृतीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक प्रथम चरण की भांति विदेश गमन करता है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता।

चतुर्थ चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक स्वस्थ एवं सतर्क होता है। बुध के साथ मंगल की युति उसे इंजीनियरिंग के क्षेत्र में ले जा सकती है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक की कल्पना शक्ति प्रखर होती है। उसका अभिव्यक्ति पर भी अधिकार होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक को वाणिज्य या विधि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। उसमें साहित्यक रुचि भी होती है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध की स्थिति जातक के विद्वान होने की सूचना देती है। ऐसे जातक इंजीनियरिंग, आडिटिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। वे कोई स्वतंत्र व्यवसाय भी कर सकते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक शासकीय सेवा में रत होता है। उसका जीवन धन एवं अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चों के कारण सुखी बीतता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक शासकीय सेवा में जाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी धन आदि दृष्टि से सुखी जीवन के फल मिलते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक में चिकित्सक बनने की क्षमता दर्शाता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में शुक्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र की चंद्र के साथ युति जातक को ईर्ष्यालु प्रकृति का बनाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र के शुभ फल मिलते हैं। जातक का जीवन सफलताओं से भरा, सुखी होता है। पत्नी भी सुशील, व्यवहार कुशल मिलती है।

तृतीय चरणः यहाँ भी शुक्र अच्छी धन–दौलत और सुखी जीवन की सूचना देता है। जातक ठेकेदारी में सफलता पा सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र की स्थिति को परम सौभाग्यकारक माना गया है। जातक के पास प्रचुर संपत्ति ही नहीं, उसमें सुख भी मिलता है। अन्य ग्रहों की शुभ दृष्टि हो तो–जातक अनेक उद्योगों का स्वामी भी होता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में शनि के फल

प्रथम चरणः यहाँ गुरु के साथ शनि की युति एक उच्च्य प्रशासक पद के योग्य बनाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ पत्नी के जीवन की दृष्टि से शुभ फल नहीं मिलते।

तृतीय चरणः यहाँ शनि–चंद्र की युति हो तो जातक विज्ञान के क्षेत्र में निष्णात होता है। बुध के साथ युति जातक को लिपिक या इंजीनियर भी बना सकती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि अशुभ फल देता है। जातक को काफी परेशनियां उठानी पड़ सकती हैं।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में राहु के फल

उत्तराभाद्रपद के **प्रथम** चरण को छोड़ शेष अन्य चरणों में जातक के धनी, विद्वान होने की सूचना मिलती है। तृतीय चरण: यहाँ राहु विधवाओं की संगति की ओर प्रवृत्त करता है। चतुर्थ चरण में उसका जिद्दी स्वभाव उसके लिए हानिकारक होता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में केतु के फल

उत्तराभाद्रपद में केतु की स्थिति जातक के विदेश–गमन, पारिवारिक–कलह से दुखी होने की सूचना देती है।

प्रथम चरण: जातक के घर से भाग जाने की आशंका होती है।

द्वितीय चरण: जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है।

तृतीय चरण: जातक को कृषि कार्यों से लाभ होता है।

चतुर्थ चरण: जातक विदेश में प्रवास करता है। शिक्षा में भी व्यवधान आता है।

रेवती

राशि पथ में यह नक्षत्र 346.40 अंशों से 360.00 अंशों के मध्य स्थित है। पूषा एवं पौष्णम इसके अन्य नाम है। अरबी में से बत्तन अल हूत कहते है–अर्थात् मछली का पेट।

इस नक्षत्र में बत्तीस तारे माने गये हैं जिनकी आकृति मृदंग की भांति मानी जाती है। पूषा को नक्षत्र का देवता तथा बुध को अधिपति माना गया है।

गणः देव, योनिः गज एवं नाड़ीः अंत है।

यह नक्षत्र मीन राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी गुरु है।

चरणाक्षर हैं--दे, दो, चा, ची।

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातकों का शरीर सुगठित होता है। निर्मल हृदय वाले ऐसे जातक मधुर भाषी, व्यवहार-कुशल एवं स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं। वे अनावश्यक रूप से दूसरों के कामों में उलझते नहीं, न स्वयं चाहते कि कोई उनके कार्यों में हस्तक्षेप करें।

कभी–कभी ऐसे जातकों का स्वभाव उग्र हो जाता है। यह स्थिति तब बनती है जब कोई उन्हें उनके सिद्धांतों से डिगाने की कोशिश करता है। वे अतिशय सिद्धांतप्रिय होते हैं।

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातकों को अत्यंत धर्मशील कहा गया है। रुढ़िप्रिय ऐसे जातक कभी–कभी घोर अंधविश्वासी भी बन जाते हैं।

स्वाभाविक है कि ऐसे जातकों में प्राचीन संस्कृतियों एवं इतिहास के अध्ययन की गहरी रुचि हो। खगोल शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र में भी उनकी पैठ होती है। रुढ़िवादी होने के बावजूद वे वैज्ञानिक समाधानों, शोधों में प्रवृत्त रहते हैं। उनमें काव्य प्रतिभा भी होती है।

ऐसा कहा गया है कि रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक प्रायः विदेश में ही बसने के आकांक्षी होते हैं और बसते भी हैं।

ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन प्रायः सुखी बीतता है। पत्नी सुशील, सुगृहिणी होती है, लेकिन ऐसे जातकों को पिता या परिवार से सहायता न मिलने के फल कहे गये हैं।

रेवती नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं बेहद सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती हैं। लेकिन उनमें हठ कुछ ज्यादा ही होता है। वे भी ईश्वर भक्त तथा परंपरागत रीति–रिवाजों का पूर्ण पालन करने वाली होती हैं।

कला, साहित्य या गणित विषयों में उनकी विशेष रुचि होती है। ऐसी जातिकाओं का वैवाहिक जीवन सुखी होता है तथापि यह भी कहा गया है कि ऐसी जातिकाओं को आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक से विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसा विवाह स्थायी नहीं रह पाता।

रेवती के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, द्वितीय एवं तृतीय का शनि तथा चतुर्थ का गुरु माना गया है।

रेवती में सूर्य के फल

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य शुभ फल देता है। जातक जन्मजात प्रतिभा से युक्त, धनी, सुंदर, विद्वान तथा लोकप्रिय होता है। वह साहसी तथा कभी भी पराजय स्वीकार नहीं करता।

द्वितीय चरणः यहाँ शुभ फल नहीं मिलते।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य की स्थिति विशेष फलदायी नहीं होती।

चतुर्थ चरणः यहाँ सूर्य के शुभ फल मिलते हैं। यदि सूर्य पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद पर आसीन होता है।

रेवती नक्षत्र में चंद्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक विद्वान, समृद्धिशाली, व्यवहार–चतुर एवं सुखी परिवार वाला होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक में चोरी करने की प्रवृत्ति छिपी रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र को बालारिष्ट योग उत्पन्न करने वाला कहा गया है तथापि जातक संघर्षों में अंततः विजयी ही होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अशुभ मानी गयी है। यह स्थिति माता–पिता के लिए ठीक नहीं समझी जाती।

रेवती नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरणः जातक स्वस्थ, सक्रिय, सतर्क, भूपति एवं कुशल संगठक होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु के साथ मंगल की युति जातक को किसी संगठन का प्रमुख बनाती है। जातक की सारी इच्छाएं भी पूरी होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ मंगल जातक को यश एवं अर्थ दोनों की प्राप्ति कराता है। लेकिन वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता।

रेवती नक्षत्र में बुध के फल

प्रथम चरणः यहाँ बुध जातक को बहुभाषाविद् एवं विनोदी प्रकृति का बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक में दार्शनिकता का पुट ज्यादा होता है। गुरु की दृष्टि हो तो जातक का चिंतन स्पष्ट, उचित ही होता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक विधि के क्षेत्र में सफल होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध की मंगल से युति हो तो जातक सेना में टेक्नीकल विभाग में कार्य करता है। शुक्र के साथ युति हो तो विदेश यात्रा की स्थिति बनती है।

रेवती नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरणः जातक किसी भी पेशे में उच्च पद पर होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु जातक के दीर्घायु होने की सूचना देता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। विदेश में प्रवास या बसने के योग भी मिलते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक दीर्घायुष्य कहा गया है। जीवन भी सुखी होता है।

रेवती नक्षत्र में शुक्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र शुभ फल देता है। जातक बुद्धिमान, कलाप्रिय एवं सुखी वैवाहिक जीवन वाला होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी शुक्र जातक को कलाप्रिय बनाता है। वैवाहिक जीवन सुखी कहा गया है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र जातक के लिए शुभ सिद्ध होता है। पुत्रियां पुत्रों से श्रेष्ठ सिद्ध होती हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र दीर्घायुकारक माना गया है। कहा गया है कि रेवती के चतुर्थ चरण में शुक्र की चंद्र युति तथा लग्न में अनुराधा नक्षत्र की उपस्थिति सर्वोच्च पद जैसे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री पर आसीन करवा सकती है।

रेवती नक्षत्र में शनि के फल

प्रथम चरणः यहाँ शनि जातक को निराशावादी बनाता है। विवाह में विलंब के योग मिलते हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ जातक विचारवान, व्यावहारिक एवं उत्साह से भरा होता है।

तृतीय चरणः यहाँ जातक परिवहन, मनोरंजन आदि के क्षेत्रों में सेवा करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ जातक व्यवसाय में लाभ कमाता है। सामान्यतः प्रसाधन, संगीत, रेडियो आदि के व्यवसाय में वह सफल होता है।

रेवती नक्षत्र में राहु के फल

प्रथम चरणः यहाँ जातक शासकीय सेवा में रत होता है।

द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण में राहु नकारात्मक फल देता है। यही स्थिति चतुर्थ चरण में भी बनती है।

रेवती नक्षत्र में केतु के फल

प्रथम चरण: यहाँ केतु की शुक्र से युति हो तो चिकित्सा के क्षेत्र में सफल होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ जातक काफी संघर्ष के बाद सफल होता है। पैंतीस वर्ष तक प्रायः उसे अपने परिवार से अलग जिंदगी बितानी पड़ती है।

तृतीय चरण: यहाँ जातक को व्यवसाय के सिलसिले में यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। जीवन सुखी बीतता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ जातक ठेकेदारी का कार्य करता है। वह किसी की भी आधीनता पसंद नहीं करता, इसलिए भी अपने ही स्वतंत्र व्यापार या व्यवसाय में लगना चाहता है।

●●●